ब्राह्मण परिवार

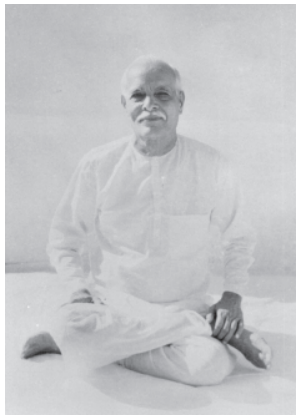

ब्राह्मण परिवार

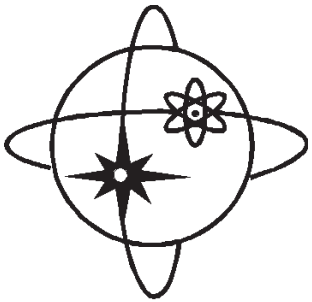

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकेन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'ब्राह्मण परिवार'** एक है।

प्रस्तावना

प्राण प्यारे बापदादा ने दिव्य जीवन बनाने के लिए श्रेष्ठ और अनमोल शिक्षायें दी हैं। हमारा ब्राह्मण जीवन निर्विघ्न और निश्चित बने उसके लिए चार प्रकार के निश्चय बताये हैं, उनमें चौथा निश्चय है ब्राह्मण परिवार में निश्चय। बापदादा ने ऊँच पद प्राप्त करने के लिए तीन सर्टीफिकेट बताये हैं उनमें तीसरा है ब्राह्मण परिवार द्वारा संतुष्टता का सर्टीफिकेट (लोक पसंद)। ब्राह्मण परिवार में निश्चय बुद्धि बनने से स्वयं भी निर्विघ्न और संगठन को भी निर्विघ्न बनाने में सहयोगी बन सकते हैं और सर्व परिवार द्वारा संतुष्टता का सर्टीफिकेट प्राप्त कर सभी की उन्नति में सहयोगी बन सकते हैं। इस मुख्य विषय पर बापदादा ने 1969 से 2000 तक जो महावाक्य उच्चारण किये हैं उनका ये बहुत अच्छा संग्रह है।

इसे बार-बार पढ़ने से बापदादा की हम ब्राह्मणों के लिए क्या भावना हैं, क्या चाहना हैं - वह दिल में छप जाती हैं और आत्मा सम्पन्नता की स्टेज में उड़ती कला का अनुभव करती हैं।

ओम् शान्ति्

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),

बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,

ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501

राजस्थान, भारत

मोबाईलः +919414007497, +919414150607

फैक्स – 02974-238951

ई-मेल – bksparc@gmail.com

तो यह जो विघ्न पड़ते हैं जिसके कारण पुरुषार्थ में तीव्रता नहीं आती है, तो अभी वृत्ति बदलेंगे, दृष्टि बदलेंगे तो बातें समाप्त हो जायेंगी। किसी की क्या भी बातें देखते हो, बापदादा ने पहले भी कहा है तो सदा आप ब्राह्मण परिवार का एक एक का फर्ज है शुभ भावना, शुभ कामना देना और शुभ भावना, शुभ कामना लेना। उस संस्कार से देखो और चलो। एक और भी बात बताते हैं - पहले भी बताया है तो कहाँ कहाँ संगठन में कभी कभी परदर्शन, परचिंतन और परमत के तरफ आकर्षित हो जाते हैं। अभी इन तीन पर को काट दो, एक पर रखो वह एक पर है पर उपकार। पर उपकार करना है, पर उपकारी हैं, ब्राह्मण का स्वभाव है पर उपकारी। परदर्शन नहीं, यह पर काट दो। यह तीनों बहुत नुकसान देते हैं। इसीलिए अपना स्वमान सदा यही याद रखो कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का स्वमान ही है पर उपकारी।

(31.03.2010)

बापदादा से तो स्नेह है, लेकिन साथ-साथ 'पुरुषार्थ' से भी ज्यादा स्नेह रखना चाहिए। दैवी परिवार से स्नेह, सर्विस से स्नेह, बापदादा से स्नेह - यह तो है ही। लेकिन वर्तमान समय पुरुषार्थ से ज्यादा स्नेह रखना चाहिए। जो पुरुषार्थ के स्नेही होंगे वो सबके स्नेही होंगे। पुरुषार्थ से हरेक का कितना स्नेह है वो हरेक को चैक करना है। बापदादा से भी स्नेह इसलिए है कि वो पुरुषार्थ कराते हैं; प्रालब्ध से भी स्नेह तब होगा जब पहले पुरुषार्थ से स्नेह होगा; दैवी परिवार का भी स्नेह तब तक ले अथवा दे नहीं सकते जब तक पुरुषार्थ से स्नेह नहीं; अगर पुरुषार्थ से स्नेह है तो वो एक-दो के स्नेह के पात्र बन सकते हैं। स्नेह के कारण ही यहाँ इकट्ठे हुए हो। लेकिन बापदादा के स्नेह में रहते हो। अब पुरुषार्थ से भी स्नेह रखना है। क्योंकि यही पुरुषार्थ ही तुम बच्चों की सारे कल्प की प्रालब्ध बनाता है।

(17.04.1969)

वर्तमान समय जो आने वाला है उसमें, अगर यह गुण नहीं होगा, कमी होगी तो धोखे में आ जायेंगे। कई ऐसी आत्माएं आप के सामने आयेंगी जो अन्दर एक और बाहर से दूसरी होंगी। परीक्षा के लिए आयेंगी। क्योंकि कई समझते हैं कि यह सिर्फ रटे हुए हैं। तो कई रंग-रूप से आर्टिफीसियल रूप में भी परखने लिए आयेंगे, भिन्न-भिन्न रूप से। इसलिये यह ध्यान रखना है कि - 'यह किसलिये आया है? उनकी वृत्ति क्या है?' और अशुद्ध आत्माओं की भी बड़ी सम्भाल करनी है। ऐसे-ऐसे केस भी बहुत होंगे। दिन प्रतिदिन पाप आत्मायें, तो बहुत होते हैं। आपदायें, अकाले मृत्यु, पाप कर्म बढ़ते जाते हैं। तो उन्हों की वासनाएं जो रह जाती हैं वह फिर अशुद्ध आत्माओं के रूप में भटकती हैं। इसलिये यह भी बहुत बड़ी सम्भाल रखनी है। कोई में अशुद्ध आत्मा की प्रवेशता होती है तो उनको भगाने लिए एक तो धूप जलाते हैं और आग में चीज को तपाकर लगाते हैं और लाल मिर्ची भी खिलाते हैं। तो आप सभी को फिर योग की अग्नि से काम लेना है। हर कर्मेन्द्रियों को योगाग्नि में तपाना है। फिर कोई वार नहीं कर सकेंगे। थोड़ा भी

कहाँ ढीलापन हुआ, कोई भी कर्मेन्द्रियां ढीली हुई तो फिर प्रवेशता हो सकती है। वह अशुद्ध आत्माएं भी बड़ी पावरफुल होती हैं। वह माया की पावर भी कम नहीं होती। यह बहुत ध्यान रखना है। और कई प्राकृतिक आपदाएं भी अपना कर्त्तव्य करेंगी। उसका सामना करने लिये अपने में ईश्वरीय शक्ति धारण करनी है। उस समय स्नेह नहीं रखना है, उस समय शक्तिरूप की आवश्यकता है। किस समय स्नेहमूर्त, किस समय शक्तिरूप बनना है - यह भी सोचना है। इन सभी बातों में शक्तिरूप की आवश्यकता है। अगर कोई ऐसा आया और उनको ज्यादा स्नेह दिखाया तो कहाँ नुकसान भी हो सकता है। स्नेह बापदादा और दैवी परिवार से करना है, बाकी सभी से शक्तिरूप से सामना करना है। कई बच्चे गफलत करते हैं जो उन्हों के स्नेह में आ जाते हैं। वह स्नेह वृद्धि होकर कमज़ोर कर देता है, इसलिये अब शक्तिरूप की आवश्यकता है।

(18.05.1969)

बापदादा की सौगात सदा अपने साथ रखना। सौगात छिपाकर रखनी होती है ना। तो बाप के रूप में एक शिक्षा की सौगात याद रखना। क्या शिक्षा देते हैं कि-सदैव बापदादा और जो निमित्त बनी हुई बहनें हैं और जो भी दैवी परिवार है-उन सबसे आज्ञाकारी, वफादार बनकर के चलना है। यह है बाप के रूप में शिक्षा की सौगात।

(16.06.1969)

मुख्य सार सबसे खौफनाक मनुष्य कौनसा होता है,जिनसे सब डर जाते हैं? दुनिया की बात तो दुनिया में रही, लेकिन इस दैवी परिवार के अन्दर सबसे खौफनाक, नुकसान कारक वो है जो अन्दर एक और बाहर से दूसरा रूप रखता है। वो पर-निन्दक से भी जास्ती खौफनाक है। क्योंकि वो कोई के नजदीक नहीं आ सकता। स्नेही नहीं बन सकता। उनसे सब दूर रहने की कोशिश करेंगे।

ईश्वरीय परिवार बार-बार नहीं मिलता। कल्प में एक ही बार यह ईश्वरीय परिवार मिला है, इतना बड़ा परिवार सारे कल्प में कभी नहीं मिलता। परिवार की भी विशेषता को जानना और परिवार में चलना, एक महान सबजेक्ट है। पहले भी सुनाया था कि इस ज्ञान का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय में चार बातें हैं। बाप, दादा साथ में है ही और नॉलेज में, ड्रामा में, परिवार में सभी में निश्चय है। तो निश्चय बुद्धि हो, सहज पुरुषार्थी बन जाते हो। जैसे बापदादा में निश्चय है ऐसे परिवार में भी निश्चय आवश्यक है। जैसे देखो जब आप कोई भी बात की पैंकिग करते हो तो क्या करते हो? चार ही तरफ टाइट करते हो ना, एक तरफ भी अगर टाइट नहीं किया तो हलचल होती है। ऐसे ही बाप, नॉलेज, नॉलेज में भी विशेष ड्रामा और परिवार। अगर चार ही बातें मजबूत नहीं हैं तो विघ्न आते हैं। विघ्नों को पार करने में अटेन्शन देना पड़ता है। इसलिए परिवार की पहचान, परिवार से प्यार, एक दो को समझना, यह बहुत आवश्यक है।

तो पूर्वज हो, पूज्य हो, तो यह बातें भी अपने में या साथियों में लानी है। क्या भी हो, नम्बरवार तो हैं ना! लेकिन ब्राह्मण परिवार का विशेष कार्य है दुआ देना, दुआ लेना। कई बच्चे कहते हैं कि दूसरा क्रोध करता है, अभी दुआ लेगा कैसे! दुआ तो लेगा नहीं, क्रोध करेगा। बापदादा कहते हैं अच्छा संस्कार वश वह बददुआ देता है, आप दुआ देने चाहते हो लेकिन वह बददुआ देता है, लेकिन बददुआ दी लेने वाला कौन? लेने वाले आप हो या वह है? वह देने वाला है आप लेने वाले हैं। तो उसकी बददुआ आपने ली क्यों? अगर आत्मा को ओरीज्नल संस्कार से देखो तो आपको रहम आयेगा। स्वयं भी सेफ रहो, बददुआ लो नहीं, लेने वाले आप हो। न दो न लो।

तो अभी बापदादा आज का या जब तक फिर आना हो तब तक का होमवर्क देते हैं कि कभी भी किसी को आत्मा रूप में देखो तो वर्तमान संस्कार के रूप में नहीं देखो। आत्मा कहा तो आत्मा को निज़ी संस्कार आत्मा के जो हैं उस निजी संस्कार के रूप में, सम्बन्ध में भी आओ और दृष्टि में भी उसी दृष्टि में देखो

सच्चा सेवाधारी अपने सेवा का पुण्य कमाने का शुभ भावना अवश्य रखेगा। यह तो है ही ऐसा, यह बदल नहीं सकता, यह शुभ भावना नहीं, यह सूक्ष्म घृणा भावना है, फिर भी अपना भाई बहन है, फिर भी मेरा बाबा तो कहता है ना! तो सच्चे सेवाधारी सेवा के बिना शुभ भवना देना इस सेवा में भी पुण्य कमायेंगे। गिरे हुए को गिराना नहीं, उठाना। सहयोग देना, इसको कहेंगे सच्चे सेवाधारी, पुण्य आत्मा। तो ऐसे अपने को चेक करो इतना सेवा का उमंग-उत्साह है? इसको कहा जाता है अनुभव के अथॉरिटी वाला। तो अभी बापदादा यही चाहता है, अनुभवी मूर्त बनो, अनुभव की अथॉरिटी को कार्य में लगाओ।

बापदादा का भी लास्ट बच्चे से भी प्यार है। कैसा भी है लेकिन प्यार में पास है क्योंकि बाप का हर बच्चे के प्रति दिल का प्यार है। चाहे कैसा भी है लेकिन मेरा है। जैसे आप कहते हो मेरा बाबा, तो बाप क्या कहते है? मेरे बच्चे है। ऐसी शुभ भावना आपस में परिवार की भी होना आवश्यक है। स्वभाव नहीं देखो, बाप जानते है, भाव स्वभाव है, लेकिन भाव स्वभाव, प्यार को खत्म नहीं करे, सम्बन्ध को खत्म नहीं करे, कार्य को सफल कम करे यह राइट नहीं। परिवार है। कौन सा परिवार है? प्रभु परिवार, परमात्म परिवार। इसमें कोई भी कारण से प्यार की कमी नहीं होनी चाहिए। ऐसे है? है प्यार की कमी? प्यार अर्थात् शुभ भावना जरूर हो। कैसा भी है, परमात्म परिवार है। जिसने माना कि मैं प्रभु परिवार का हूँ, तो परिवार अर्थात् प्यार। अगर परिवार में प्यार नहीं तो परिवार नहीं। इसलिए आज क्या पाठ पढ़ा? पक्का किया? हर आत्मा से शुभ भावना, शुभ भाव। यह परमात्म परिवार इस एक समय ही होता है, इतना बडा परिवार परमात्म के सिवाए और किसका हो नहीं सकता। तो चेक करना क्योंकि यह भी पुरुषार्थ में विघ्न पड़ता है। तो विघ्न मुक्त होंगे तभी अनुभवी बन अनुभव के अथॉरिटी द्वारा सभी को अनुभवी बनायेंगे।

(30.01.2010)

यह ब्राह्मण परिवार श्रेष्ठ परिवार है। परिवार की बहुत महिमा है। यह

इसलिए इस भट्ठी में आप लोगों को यह शिक्षा मिली।

जब अपने को निश्चय बुद्धि कहते हैं तो कोई भी बात में - ना बाप में, ना बाप की नालेज में, ना बाप के परिवार में संशय वा विकल्प उठना चाहिए। हम शिवबाबा के बच्चे हैं। तो फिर सर्वशक्तिमान के बच्चे निश्चय बुद्धि हैं।

(28.09.1969)

मन्सा में, वाचा में और कर्मणा में भी और साथ-साथ लौकिक सम्बन्धियों अथवा दैवी परिवार के सम्बन्ध में आने में भी कहाँ तक क्या करना है, क्या कहना है, क्या नहीं कहना है और जो नहीं करना है उसको कंट्रोल करना - यह पूरी पावर न होने कारण सफल नहीं होते हो। तो कंट्रोलिंग पावर की कमी कैसे मिटावेंगे? कई बार आप गोपों ने देखा होगा - कोई भी चीज को कहाँ बहुत जोर से कंट्रोल करना होता है तो कंट्रोल करने लिये भी कई चीजों को हल्का छोड़ना पड़ता है। पतंग कब उड़ाया है? पतंग को कंट्रोल करने और ऊंचा उड़ाने लिये क्या किया जाता है? यह भी ऐसे हैं। अपनी बुद्धि को कंट्रोल करने के लिये कई बातों को हल्का करना पड़ता है।

(25.10.1969)

आप लोगों ने सुनाया भी कि अपने, बापदादा के, परिवार के स्नेही-सहयोगी बनेंगे। लेकिन वह भी किन-किन बातों में बनना है मन्सा, वाचा, कर्मणा के साथ-साथ तन, मन, धन - तीनों रूप से अपने को चेन्ज करना है। मददगार और वफादार - जब दोनों बातें होंगी तब बापदादा और परिवार के स्नेही और सहयोगी बन सकेंगे। जो सहयोगी होंगे उनकी परख क्या होगी? वह परिवार और बापदादा के विचारों और जो कर्म होते हैं उनमें एक-दो के समीप होंगे। एक-दो के मत के समीप आते जायेंगे तो फिर मतभेद खत्म हो जायेगा। एक तो मददगार और

वफादार, उसका तरीका भी बताया।

(28.11.1969)

विश्व के महाराजन् जो बनने वाले हैं, उन्हीं की अभी निशानी क्या होगी? यह भी ब्राह्मणों का विश्व है अर्थात् छोटा-सा संसार है। तो जो विश्व -महाराजन् बनने हैं उन्हों का इस विश्व अर्थात् ब्राह्मणकुल की हर आत्मा के साथ सम्बन्ध होगा। जो यहाँ इस छोटे से परिवार, सर्व के सम्बन्ध में आयेंगे वह वहाँ विश्व के महाराजन बनेंगे। अब बताओ कौन से राजे बनेंगे? एक होते हैं जो स्वयं तख्त पर बैठेंगे और एक फिर ऐसे भी हैं जो तख्त-नशीन बनने वालों के नजदीक सहयोगी होंगे। नजदीक सहयोगी भी होना है तो उसके लिये भी अब क्या करना पड़ेगा? जो पूरा दैवी परिवार है, उन सर्व आत्माओं के किसी न किसी प्रकार से सहयोगी बनना पड़ेगा। एक होता है सारे कुल के सर्विस के निमित्त बनना। और दूसरा होता है सिर्फ निमित्त बनना। लेकिन किसी न किसी प्रकार से सर्व के सहयोगी बनना। ऐसे ही फिर वहाँ उनके नज़दीक के सहयोगी होंगे।

(25.12.1969)

यह पूरे परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है। अव्यक्त में तो साथ है ही। जितना स्नेह होता है उतना सहयोग भी मिलता है। स्नेह की कमी के कारण सहयोग भी कम मिलता है। साकार से स्नेह अर्थात् सारे सिजरे से स्नेह। साकार अकेला नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है। माला के मणके हो ना। माला में अकेला मणका नहीं होता है। माला में एक ही याद के सूत्र में, स्नेह में परिवार समाया हुआ है। तो यह जैसे माला में स्नेह के सूत्र में पिरोये हुए हैं। दैवी कुल तो भविष्य में है, इस ब्राह्मण कुल का बहुत महत्व है। जितना-जितना ब्राह्मण कुल से स्नेह और समीपता होगी उतना ही दैवी राज्य में समीपता होगी। हैं?

(18.01.1970)

वाले वारिस क्वालिटी बनाओ। तो राजधानी तो यहाँ ही तैयार करनी है ना। इसलिए इसमें कौन सा ज़ोन वारिस क्वालिटी में नम्बरवन है, यह इस वर्ष में देखना है और दूसरा काम दिया था वर्ग वालों को, एक वारिस बनाना और दूसरा जो सम्बन्ध-सम्पर्क में हैं उन्हों को माइक बनाना। तो माइक और वारिस यह दोनों बनाना, अभी समय है। जैसा समय बीतता जायेगा तो उसमें बहुत समय का पुरुषार्थ कम हो जायेगा।

(31.12.2009)

ज्ञान योग का स्वरूप है तो हर गुण की धारणा ऑटोमेटिकली होगी। जहाँ ज्ञान, योग है, युक्तियुक्त है वहाँ गुणों की धारणा ऑटोमेटिकली होगी। सेवा हर समय ऑटोमेटिक होगी। समय अनुसार चाहे मन्सा सेवा करे, चाहे वाचा करे, चाहे कर्मणा करे, चाहे स्नेह सम्बन्ध में करे, सेवा भी हर समय अखण्ड चलती रहेगी। सम्बन्ध सम्पर्क में भी सेवा होती है। मानो कोई आपके भाई या बहन ब्राह्मण परिवार में थोड़ा सा मायूस है, थोड़ा पुरुषार्थ में डल है, कोई संस्कार के वश है, ऐसे सम्पर्क वाली आत्मा को आपने उमंग-उत्साह दिलाया, सहयोग दिया, स्नेह दिया, यह भी सेवा कापुण्य आपका जमा होता है। गिरे हुए को उठाना यह पुण्य गाया जाता है। तो सम्बन्ध और सम्पर्क में भी सेवा करना यह सच्चे सेवाधारी का कर्तव्य है। सेवा मिले या सेवा दी जाए तो सेवा है, वह नहीं। स्वयं मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्पर्क सम्बन्ध में सेवा ऑटोमेटिकली होती रहे। कई बार बापदादा ने देखा कि सम्पर्क में कोई-कोई बच्चा देखता भी है कि इनका स्वभाव संस्कार थोड़ा जो होना चाहिए वह नहीं है, लेनिक यह तो है ही ऐसा, यह बदलना नहीं है, इसकी सेवा करना टाइम वेस्ट है, ऐसा संकल्प करना क्या यथार्थ है? जब आप मानते हो कि हम प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाने वाले है, प्रकृति को और वह मनुष्यात्मा है, ब्राह्मण कहलाता है लेकिन संस्कार वश है, जब प्रकृति का संस्कार बदलने की चैलेन्ज की है तो वह तो प्रकृति से पुरुष है, आत्मा है। आपके सम्बन्ध में है। तो

जैसे ब्रह्मा बाप को देखा इतने बड़े परिवार की जिम्मेवारी होते भी नेचुरल नेचर देही-अभिमान की रही। चाहे बच्चों के ऊपर भी जिम्मेवारी है लेकिन ब्रह्मा बाप के आगे वह जिम्मेवारी क्या लगती है! कोई भी जिम्मेवारी है, मानो ज़ोन की जिम्मेवारी है, या कोई ऑफीशियल यज्ञ कारोबार की जिम्मेवारी है लेकिन वह जिम्मेवारी ब्रह्मा बाबा के आगे क्या है! ब्रह्मा बाप ने शिवबाबा की मदद से प्रैक्टिकल में दिखाया कि करावनहार करा रहे है, हम करनहार बन बाप समान न्यारे और प्यारे है। तो बाप समान बनने चाहते तो यह चेक करो कुछ भी चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा डयुटीज़ है लेकिन मैं करनहार हूँ, ट्रस्टी हूँ, करावनहार मालिक शिवबाबा है, यह करावनहार का पाठ चलते-चलते भूल जाता है। तो लक्ष्य और लक्षण दोनों को समान बनाना है। अब पुराने साल को विदाई देने के साथ इस लक्ष्य को लक्षण में लाना है।

सभी ज़ोन वालों को भी कहते हैं कि यह ज़ोन में लिस्ट निकालो, कि सभी ज़ोन में से वारिसों की लिस्ट में नम्बरवन कौन है? क्योंकि अभी गोल्डन एज के लिए राजाई तैयार करनी है ना! तख्त पर तो लक्ष्मी-नारायण ही बैठेंगे, एक ही बैठेंगे लेकिन जो वहाँ की राज्य अधिकारी सभा है, वह भी तो बनानी है ना। रॉयल प्रजा भी बनानी है, साधारण प्रजा भी बनानी है। तो ऐसे वारिस बनाओ जो सम्बन्ध-सम्पर्क में अभी भी नजदीक हो और वहाँ भी नजदीक हों। जोवारिस होगा उनकी निशानी क्या होगी? एक तो वारिस अर्थात् हर श्रीमत पर चलने वाले। बाप ने कहा और बच्चे ने किया। हर कार्य में चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में फैमिली लाइफ वाला हो, आने वाला स्टूडेन्ट नहीं फैमिली नेचर वाला हो। फैमिली का अर्थ होता है एक दो को जानना और एक दो को समझकर चलना, परिवार में भी ठीक हो और 4 निश्चय जो सुनाये थे, 4 ही निश्चय में जो वारिस होगा वह प्रैक्टिकल लाइफ में हो। सारे परिवार का प्यारा होगा, कोई का प्यारा कोई का नहीं, नहीं। सारे परिवार का प्यारा होगा। तो ऐसे वारिस क्वालिटी अभी वह चाहिए। प्रजा तो बनती जायेगी, साधारण प्रजा। लेकिन अभी नजदीक

यह ब्राह्मण परिवार देखा। इतना बड़ा परिवार कब मिलता है? सिर्फ इस संगम पर ही इतना बड़ा परिवार मिलता है। हम इतने बड़े परिवार के हैं-यह नशा रहता है? जितना कोई बड़े परिवार का होता है उतनी उसको खुशी रहती है। सारी दुनिया में हम थोडों को इतना बड़ा परिवार मिलता है। तो यह निश्चय और नशा होना चाहिए। हरेक को यह नशा होना चाहिए कि कोटों में से कोई हम गायन में आने वाली आत्माएं हैं। कभी सोचा था क्या कि ऐसा सौभाग्य प्राप्त हो सकता है? अचानक लॉटरी मिली है। लाटरी की खुशी होती है ना और फिर यह अविनाशी लॉटरी है। जो कभी खत्म हो न सके। ऐसी लॉटरी हम आत्माओं को मिली है। यह नशा रहता है? कोने-कोने से बापदादा ने देखो किन्हों को चुना है। चुने हुये रत्नों में आप विशेष हैं। यह याद रहता है। बापदादा को कौन-से रत्न अच्छे लगते हैं? साधारण। ऐसी खुशी सदैव अविनाशी रहे।

(23.01.1970)

एक-एक आत्मा के पास यह ईश्वरीय स्नेह और सहयोग का यादगार छोड़ना है। जितना एक दो के स्नेही सहयोगी बनते हैं उतना ही माया के विघ्न हटाने में सहयोग मिलता है। सहयोग देना अर्थात् सहयोग लेना। परिवार में आत्मिक स्नेह देना है और माया पर विजय पाने का सहयोग लेना है। यह लेन-देन का हिसाब ठीक रहता है। इस संगम समय पर ही अनेक जन्मों का संबंध जोड़ना है। स्नेह है सम्बन्ध जोड़ने का साधन। जैसे कपड़े सिलाई करने का साधन धागा होता है वैसे ही भविष्य सम्बन्ध जोड़ने का साधन है स्नेह रुपी धागा। जैसे यहाँ जोड़ेंगे वैसे वहाँ जुटा हुआ मिलेगा। जोड़ने का समय और स्थान यह है। ईश्वरीय स्नेह भी तब जुड़ सकता है जब अनेक साथ स्नेह समाप्त हो जाता है। तो अब अनेक स्नेह समाप्त कर एक से स्नेह जोड़ना है। वह अनेक स्नेह भी परेशान करने वाले है। और यह एक स्नेह सदैव के लिये परिपक्व बनाने वाला है। अनेक तरफ से तोड़ना और एक तरफ जोड़ना है। बिना तोड़े कभी जुट नहीं सकता। अभी कमी को भी भर सकते

हो। फिर भरने का समय खत्म। ऐसे समझ कर कदम को आगे बढ़ाना है।

(26.01.1970)

एक तो अपने में फेथ दूसरा बाप-दादा में और तीसरा सर्व परिवार की आत्माओं में फेथफुल होना पड़ता है। जितना फेथफुल बनकर निश्चयबुद्धि होकर कोई कर्तव्य करेंगे तो निश्चयबुद्धि की विजय अर्थात् फेथफुल होने से सक्सेसफुल हो ही जाता है। उसका हर कर्तव्य, हर संकल्प, हर बोल पावरफुल होगा। ऐसे क्वालीफाइड को ही यह डिग्री प्राप्त हो सकती है।

(11.01.1970)

यहाँ दैवी सम्बन्ध में भी कोई सिम्पुल नहीं बनता, प्राब्लम बन जाता है तो रिजल्ट क्या होती है? स्नेह और सहयोग से वंचित रह जाते हैं। जो साधारण, सिम्पल होते हैं उसके तरफ न चाहते हुए भी सभी को स्नेह और सहयोग देने की शुभ भावना होगी। तो सर्व स्नेही वा सर्व से सहयोग प्राप्त करने के लिए वा सर्व के सहयोगी बनने के लिए सिम्पल बनना बहुत आवश्यक है। कोई प्राब्लम तो नहीं है वा स्वयं प्राब्लम बने हुए तो नहीं हो? चाहे लौकिक परिवार में वा व्यवहार में, चाहे दैवी परिवार में-कब भी अपने में प्राब्लम न इमर्ज करो, न कोई के लिए प्राब्लम बनाओ। अगर प्राब्लम बनते हो तो सेवा लेने वाले बन जाते हो। आप हो ईश्वरीय सेवाधारी, तो सेवाधारी अर्थात् सेवा करने वाले, न कि सेवा लेने वाले। अगर सेवा लेने वाले बनते हो तो नाम प्रमाण कर्त्तव्य नहीं हुआ ना। खुदाई-खिदमतगार सेवा लेता नहीं, देता है। क्योंकि दाता के बच्चे हैं ना। जैसे बाप कुछ लेते हैं क्या? वह तो दाता है ना। अगर प्राब्लम बनने के कारण सेवा लेते हो तो दाता के बच्चे ठहरे? कोई भी प्रकार की अगर एक्स्ट्रा सेवा लेते हो तो यह कभी भी नशा नहीं रहेगा कि हम दाता वा वरदाता के बच्चे हैं।

(19.07.1971)

घर बैठे हिम्मत दी और चल पड़े, ऐसे आप भी फरिश्ते रूप से मन्सा सेवा कर सकते हो, फरिश्ता बनके, यह अनुभव भी बढ़ाते चलो क्योंकि दु:ख की लहर, जैसे सागर अचानक लहरों में बढ़ता जाता है, तेज लहरें बीच-बीच में आ जाती हैं ना। ऐसे अभी जितना समय बढ़ता जायेगा तो बीच बीच में भी ऐसी लहर दु:ख की अशान्ति की बीच बीच में बढ़ती रहेगी। कोई कारण ऐसे बनेंगे जो दु:ख की लहर बढ़ेगी इसलिए औरों को तैयार करो वाचा के लिए। लेकिन फाउण्डेशन पक्का हो। अपना प्रभाव डालने वाले नहीं हो। रीयल ज्ञान का प्रभाव डालने वाले हो। कभी कभी ब्राह्मण बच्चे भी अपना प्रभाव डालने लगते हैं, कोई भी सेवा में बाप की तरफ आकर्षित करो, पर्सनल नहीं। अगर पर्सनल अपने पर प्रभावित करते तो उसका पुण्य नहीं बनता। अच्छा।

चारों ओर के पुरुषार्थ में आगे बढ़ने वाले, जैसे अभी 15 दिन का काम बापदादा ने दिया था, उसकी रिजल्ट जो समझते हैं, जैसे बापदादा ने कार्य दिया, उसी प्रमाण मन्सा, वाचा, कर्मणा, समय, संकल्प यथार्थ रहा, वह हाथ उठाओ। अच्छा। बहुत थोड़ों ने उठाया है। जिन्होंने 15 दिन का काम अच्छी रिजल्ट मं किया, वह हाथ उठाओ। थोड़ों ने किया है बाकी औरों की भी रिजल्ट आई है, जो यहाँ नहीं हैं उन्हों की भी रिजल्ट आई है। बहुत करके वेस्ट थॉट्स की रिजल्ट सभी ने अटेन्शन अच्छा दिया है। लेकिन सारा ब्राह्मण परिवार एक जैसा पुरुषार्थ में चले, वह रिजल्ट संगठन की अभी लानी है। मैजारिटी रिजल्ट में सभी बातों की एक जैसी अच्छी रिजल्ट हो, वह कम है। किसकी किसमें है, किसकी किसमें है। अभी इस ड्रिल से सभी को सदा के लिए अपने पुरुषार्थ की गति तीव्र करनी है क्योंकि बहुतकाल चाहिए। मानो पीछे कर भी लेंगे लेकिन बहुतकाल का भी सम्बन्ध है इसलिए सभी अटेन्शन दें मुझे करना है, कोई करे नहीं करे, लेकिन मुझे एवररेडी बनना ही है। अच्छा।

(15.12.2009)

बहाना, कारण, कारण शब्द को समाप्त करो। निवारण सामने लाओ। हाथ भले थोड़ों ने उठाया लेकिन आप सबका भी यही लक्ष्य है ना कि दु:खियों को सन्देश दे मुक्त करें। उन्हों को मुक्त करने के बिना आप मुक्ति में जा नहीं सकते। तो इन्हों को मुक्त करो क्योंकि बाप आया है ना तो सारे विश्व के बच्चों को वर्सा तो देंगे ना। आपको जीवनमुक्ति का वर्सा देंगे लेकिन सभी बच्चे तो है ना। उनको भी वर्सा तो देना है ना। तो उन्हों का वर्सा है मुक्ति, आपका वर्सा है जीवनमुक्ति। जब तक मुक्ति नहीं देंगे तो आप भी जा नहीं सकते। इसके लिए यह ड्रिल करो। 24 बारी। रात और दिन के 24 घण्टे हैं और 24 बार करना है, नींद के टाइम, नींद भले करो। बापदादा यह नहीं कहते कि नींद नहीं करो। नींद करो लेकिन दिन में बढ़ाओ। जब कोई फंक्शन करते हो तो सारा सारा दिन काम करते हो ना। जागते हो ना! अच्छा।

आप सबको भी अच्छा लगता है ना, फारेनर्स हर ग्रुप में आते हैं, अच्छा लगता है ना क्योंकि हमारे परिवार में यह भी नवीनता है। फारेन के भी वैरायटी सब आते हैं। ऐसा परिवार तो किसका भी नहीं होगा जो एक ही स्थान पर कोई भी विशेष देश रह नहीं जाए। अभी देखो मुस्लिम देश भी आगे आगे आ रहे हैं। अरेबियन भी आ रहे हैं। तो वैरायटी परिवार एक भी वंचित न रह जाए, यही लक्ष्य है कि सभी बच्चों तक पहुंचकर बाप का सन्देश दे वारिस निकालें, परिवार के बिछुड़े हुए परिवार में मिलायें, यह देख बापदादा खुश है और खुशी बढ़ाते चलो। अभी तो आपके पास निमन्त्रण पीछे निमन्त्रण आने वाले हैं, क्यों? अन्त में यही रहना है, यहीं है, यही है, यही है। अभी सभी किनारे छूटकर सभी को बाप के संबंध में या सन्देश सुनने में चांस मिलना ही है। नहीं तो उल्हना आपको सबका बहुत मिलेगा। मन्सा से भी आत्माओं को आकर्षित कर आगे बढ़ा सकते हो। सम्बन्ध, सम्पर्क में ला सकते हो। मन्सा की सेवा अभी कम है। लेकिन अभी से शुरू करेंगे तो अन्त में कोई रह नहीं जायेगा। कभी भी अगर फुर्सत मिलती हो तो फरिश्ता रूप में जैसे ब्रह्मा बाप ने आप सभी को मन्सा सेवा द्वारा आकर्षित किया,

द्वापर से लेकर आज तक अपने और अपने दैवी परिवार की आत्माओं की महिमा करते आये हो, कीर्तन करते आये हो। अब फिर चैतन्य परिचित हुई आत्माओं के अवगुणों को वा कमियों को क्यों देखते हो वा बुद्धि में धारण क्यों करते हो? अभी भी सारे विश्व से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं के गुण-गान करो। बुद्धि द्वारा ग्रहण करो और मुख द्वारा एक-दो के गुणगान करो।

(25.08.1971)

सदैव यह लक्ष्य रखो कि ट्रॉन्सफर होना है और ट्रॉन्सफर करना है। ऐसे नहीं कहना कि यह ट्रॉन्सफर हो तो मैं ट्रॉन्सफर हो जाऊं। नहीं। मुझे होना है और मुझे ही करना है। जो ऐसे हिम्मत रखने वाले बनते हैं, वही विश्व के महाराजन् बन सकते हैं। तो विश्व- महाराजन् बनना है तो जो दैवी परिवार की आत्माएं भविष्य के विश्व में आने वाली हैं अर्थात् यह छोटा-सा परिवार जो विश्व-राज्य के अधिकारी बनने वाले हैं, इन सभी आत्माओं के ऊपर अब से ही स्नेह का राज्य करना है। आर्डर नहीं चलाना है। अभी से विश्व-महाराजन् नहीं बन जाना है। अभी तो विश्व-सेवाधारी बनना है।

(29.08.1971)

अभी यह भी ध्यान रखना, सूक्ष्म सजाओं के साथ-साथ स्थूल सजायें भी होती हैं। ऐसे नहीं समझना- सूक्ष्म सजा तो अपने अन्दर भोग कर खत्म करेंगे। नहीं। सूक्ष्म सजाएं सूक्ष्म में मिलती रहती हैं और दिन प्रतिदिन ज्यादा मिलती जायेंगी लेकिन ईश्वरीय मर्यादाओं के प्रमाण कोई भी अगर अमर्यादा का कर्तव्य करते हैं, मर्यादा का उल्लंघन करते हैं तो ऐसी अमर्यादा से चलने वाले को स्थूल सज़ाएं भी भोगनी पड़े। फिर तब क्या होगा? अपने दैवी परिवार के स्नेह, सम्बन्ध और जो वर्तमान समय की सम्पत्ति का खजाना है उनसे वंचित होना पड़े। इसलिए अब बहुत सोच-समझकर कदम उठाना है। ऐसे लॉज (नियम) शक्तियों द्वारा

स्थापन हो रहे हैं। पहले से ही सावधान करना चाहिए ना। फिर ऐसे न कहना कि ऐसे तो हमने समझा नहीं था, यह तो नई बात हो गई। तो पहले से ही सुना रहे हैं। सूक्ष्म लॉज़ के साथ स्थूल लॉज वा नियम भी हैं। जैसे-जैसे गलती, उसी प्रमाण ऐसी गलती करने वाले को सजा। इसलिए लॉ-मेकर हो तो ला को ब्रेक नहीं करना। अगर लॉ-मेकर भी लॉ को ब्रेक करेंगे तो फिर लॉ-फुल राज्य करने के अधिकारी कैसे बनेंगे? जो स्वयं को ही लॉ के प्रमाण नहीं चला सकता वह लॉ-फुल राज्य कैसे चला सकेगा? इसलिए अब अपने को लॉ-मेकर समझकर हर कदम लॉ-फुल उठाओ अर्थात् श्रीमत प्रमाण उठाओ। मन-मत मिक्स नहीं करना। माया श्रीमत को बदलकर मन को मिक्स कर उसको ही श्रीमत समझाने की बुद्धि देती है। माया के वश मनमत को भी श्रीमत समझने लग पड़ते हैं। इसलिए परखने की शक्ति सदैव काम में लगाओ। कहां परखने में भी अन्तर होने से अपने आपको नुकसान कर देते। इसलिएं कहां भी अगर स्वयं नहीं परख सकते हो तो जो श्रेष्ठ आत्मायें निमित्त हैं उन्हों से सहयोग लो। वेरीफाय कराओ कि यह श्रीमत है वा मनमत है। फिर प्रैक्टिकल में लाओ। अच्छा। ऐसे लॉ-फुल और लव-फुल जो दोनों ही साथ-साथ रख चलने वाले हैं, ऐसी आत्माओं को नमस्ते।

(03.05.1972)

चाहे प्रकृति द्वारा, चाहे लौकिक सम्बन्ध द्वारा, चाहे दैवी परिवार द्वारा कोई भी परीक्षा आवे वा कोई भी परिस्थिति सामने आवे उसमें भी अपने आपको अचल, अटल बना सकेंगे ना। इतनी हिम्मत समझते हो ना? परीक्षाएं बहुत आनी हैं। पेपर तो होने ही हैं। जैसे-जैसे अन्तिम फाइनल रिजल्ट का समय समीप आ रहा है वैसे समय-प्रति-समय प्रैक्टिकल पेपर स्वत: ही होते रहते हैं। पेपर प्रोग्राम से नहीं लिया जाता। आटोमेटिकली ड्रामा अनुसार समय प्रति समय हरेक का प्रैक्टिकल पेपर होता रहता है।

(12.07.1972)

निराकारी स्थिति में स्थित हो जाओ, यह कर सकते हो? यह कर सकते हो या मुश्किल है? जो कर सकते हैं बीच-बीच में, वह बीच-बीच में ऐसे करें जो लगातार हो जाए, अपने कर्म के हिसाब से जो आपकी दिनचर्या है उसके हिसाब से फिक्स करो। कम से कम सारे दिन में 12 बारी फरिश्ता बनो, 12 बारी निराकार स्थिति में स्थित रहो, यह कर सकते हो? हाथ उठाओ। कर सकते हो? मुश्किल नहीं है ना! सहज है ना! सहज है? सहज में हाथ उठाओ। अच्छा, करना है। यह पक्का करो। फिर तो जो लक्ष्य रखा है ना, इस सीजन के अन्त तक परिवर्तन हो सकता है। अगर यह ड्रिल 24 टाइम करेंगे तो लगातार हो जायेगा ना। ठीक है ना, हो सकता है! हाथ उठाओ। हो सकता है! फिर तो बापदादा की तरफ से पदम पदम पदम पदम गुणा मुबारक हो, मुबारक हो। लेकिन ढीला नहीं छोड़ना। सभी निश्चय करो हमको इसमें नम्बरवन होना है। नम्बरवार नहीं होना, नम्बरवन क्योंकि बापदादा के पास समय बहुत आता है। प्रकृति तो चिल्लाती है, बोझ सहन नहीं होता। माया भी विदाई लेने चाहती है लेकिन कहती है मैं क्या करूं, ब्राह्मण कोई न कोई ऐसा काम संस्कारों वश होकर करते हैं जो मुझे आह्वान करते हैं तो मुझे जाना ही पड़ता है। तो बापदादा क्या जवाब दे! इसलिए जैसे समय आगे बढ़ रहा है, अभी आप लोग सेवा में भी अन्तर देख रहे हो ना! सेवा का रिटर्न अभी सभी चाहते हैं, कुछ हो, कुछ हो। ब्रह्माकुमारियाँ जो कहती थी वह अभी ठीक हो रहा है। पहले कहते थे विनाश, विनाश नहीं कहो, अब तो कहते हैं कब होग, आप ही तारीख बताओ। अभी सुनने चाहते हैं, पहले बहाना देते थे, तो यह भी फर्क हो रहा है ना! प्रैक्टिकल देख रहे हो ना इसलिए अभी जो बापदादा से वायदा किया है उसको निभाते रहना। ठीक है! बापदादा ने सभी समाचारों की रिजल्ट सुनी है, जो भी चला है, अच्छा चला और रिजल्ट भी अच्छी उमंग-उत्साह की रही है इसलिए अभी लक्ष्य रखो होना ही है, करना ही है, समाप्ति को समीप लाओ। आप थोड़े हिलते हो ना तो समाप्ति भी दूर हो जाती है। आपको ही समाप्ति को समीप लाना है क्योंकि राज्य करने वाले तैयार नहीं होंगे तो समय क्या करेगा? इसलिए सब

है? सभी को पसन्द है? लेकिन बापदादा ने इस सीजन के पहले सीजन में तीन चार बार कहा है, कोई की भी अभी तक रिजल्ट नहीं आई है। क्या यह समझते हो कि यह भी बात अचानक होनी है? चलो अचानक हो भी जाए लेकिन बापदादा ने कहा है कि बहुत समय का अभ्यास चाहिए तब ही बहुतकाल का अधिकार प्राप्त करेंगे। तो अभी क्या करना है? लगन की अग्नि को जलाओ। करना ही है। इसके लिए एक बात में सभी पास भी हैं, हाथ उठाओ, जो समझता है बापदादा से हमारे दिल का प्यार 100 परसेन्ट है। 100 परसेन्ट है? लम्बा हाथ उठाओ। तो प्यार का रिटर्न क्या होता है? प्यार का रिटर्न होता है समान बनना, सम्पन्न बनना, सम्पूर्ण बनना। तो अभी बापदादा एक ड्रिल बताता है, सभी कहते हैं बापदादा दोनों से प्यार है, हाथ उठाया, होंगे तो नम्बरवार लेकिन हाथ उठाया तो बापदादा मानते हैं। दोनों से प्यार है ना। ब्रह्मा बाप से और शिव बाप से दोनों से प्यार है ना! दोनों से है? हाथ उठाओ। अच्छा, दोनों से है। बहुत अच्छा धन्यवाद। अच्छा, दोनों के समान बनने चाहते हो। हाथ नहीं उठाओ, कांध हिलाओ। अच्छा। दोनों से प्यार है तो शिव बाप है निराकारी, ठीक है और ब्रह्मा बाप है फरिश्ता। फरिश्ता है ना! तो कल से नहीं, आज से ही अभी से सारे दिन में दोनों बाप से प्यार है तो कभी अपने को निराकार बाप समान निराकारी स्थिति में अभ्यास करो, फालो फादर। और कभी फरिश्ता बनकरके साकार रूप ब्राह्मण नहीं, ब्राह्मण तो हो ही, कर्म भले करो लेकिन कर्म करते भी फरिश्ता स्थिति में रहो तो कर्म का बोझ प्रभाव नहीं डालेगा। ब्रह्मा बाप से प्यार है तो ब्रह्मा बाप ने कर्म सब किया, निमित्त बना लेकिन ब्रह्मा बाप के ऊपर कितना बोझ था। आप कोई के ऊपर इतना बोझ नहीं है, है कोई, ब्रह्मा बाप से ज्यादा किसके ऊपर बोझ है, जिम्मेवारी है? वह हाथ उठाओ। कोई नहीं उठाता। तो ब्रह्मा बाप ने इतनी जिम्मेवारी निभाते हुए कार्य में कैसे रहा, कर्म में भी फरिश्ता रूप रहा ना! तो आपका भी ब्रह्मा बाप से प्यार है, तो कभी फरिश्ता रूप में रहो, कभी निराकार स्थिति में रहो, यह प्रैक्टिस, ब्रह्मा बाबा कहके ब्रह्मा बाप समान फरिश्ता बन जाओ और शिव निराकार बाप को याद कर

आपके जड़ चित्रों के आगे घंटी बजाते हैं। उठाते भी हैं घंटी बजा कर, फिर सुलाते भी हैं घंटी बजा कर। यह भी समय की सूचना - घंटियां बजती हैं। क्योंकि जैसे शास्त्रवादियों ने लम्बा-चौड़ा टाइम बता कर सभी को सुला दिया है। खूब अज्ञान नींद में सभी सो गये हैं क्योंकि समझते हैं अभी बहुत समय पड़ा है। तो यहां फिर जो दैवी परिवार की आत्माएं हैं उन्हों को चलते-चलते माया कई प्रकार के रूप-रंग, रीति-रस्म के द्वारा अलबेला बना कर समय की पहचान से दूर, पुरुषार्थ के ढीलेपन में सुला देती है। जब कोई अलबेला होता है तो आराम से होता है। जिम्मेवारी होने से अटेंशन रहता है कि हमको टाइम पर उठना है, यह करना है। अगर कोई प्रोग्राम में नहीं तो अलबेला ही सो जावेगा। तो यह भी अलबेलापन आ जाता है।

(19.09.1972)

अभी स्नेह की लेन-देन करो। जो भी सामने आवे, सम्बन्ध में आवे तो स्नेह देना और लेना है। इसको कहा जाता है सर्व के स्नेही व लवली। ज्ञान का दान ब्राह्मण को तो नहीं करना है, वह तो अज्ञानियों को करेंगे। ब्राह्मण परिवार में फिर इस दान के महादानी बनो। जैसे गायन है ना 'दे दान तो छूटे ग्रहण'। जो भी कमजोरियाँ रही हुई है वह सभी प्रकार के ग्रहण इस महादान से छूट जावेंगे।

(21.04.1973)

'चैरिटी बिगिन्स एट होम' हैं। अर्थात् अपने साथियों को। वे साथी कौन-से है? आपके जो ब्राह्मण परिवार के साथी हैं। तो उन अपने साथियों को आप समान बनाने के बाद फिर बाप-समान बनाना है। लेकिन पहली स्टेज में यदि उन्हें आप-समान बनाओ तो भी बहुत है।

(23.09.1973)

महारथी को कोई बात मुश्किल अनुभव हो, वह महारथी ही नहीं। महारथी अपने सहयोग से और बाप के सहयोग से औरों की मुश्किल भी सहज करेंगे। महारथियों के संकल्प में भी कभी 'यह कैसे, ऐसे क्यों'? यह प्रश्न नहीं उठ सकता। 'कैसै' के बजाए 'ऐसे' शब्द आयेगा। क्योंकि मास्टर नॉलेजफुल, त्रिकालदर्शी हो ना? इन बातों को चैक करो। कैसे करुं? कैसे होगा? यह न स्वयं प्रति न दूसरों के प्रति चले। दोनों ही रुप में प्रश्न समाप्त हों। ऐसा ही सदा प्रसन्नचित्त व हर्षित रहता है। अब समझा। महारथी के लक्षण क्या हैं? करने में कम नहीं। जब एक दो के सम्पर्क में आते हैं, तो एक-दो से स्वयं को कम नहीं समझते, समझने में हरेक अपने को अथॉरीटी समझते हैं और अपना हक रखते हैं। समझने और करने इन दोनों में हकदार बनो, तब ही विश्व के, इस ईश्वरीय परिवार की प्रशंसा के हकदार बनेंगे। कोई भी बात के मांगने वाले मंगता नहीं बनो, दाता बनो। **मान, शान, प्रशंसा, वड़ापन आदि मांगने की इच्छा मत करो। मांगेंगे तो जैसे आजकल के मांगने वाले को कोई भी प्राप्ति नहीं कराते, और ही दूर से उसे भगावेंगे। इसी प्रकार यह रॉयल मांगने वाले स्वयं को सर्व आत्माओं से स्वत: ही दूर करते हैं। ऐसा महारथी सीट पर सैट नहीं होता।** इसलिए अब आप सभी महारथी हो? घोड़े सवार व प्यादों का समय गया, अब हर महारथी को अपने महारथीपन के लक्षण सामने रखते हुए स्वयं में समाने हैं।

(16.05.1974)

अब सम्पूर्ण स्थिति की स्टेज व सम्पूर्ण परिणाम (फाइनल रिजल्ट) का समय नजदीक आ रहा है। रिजल्ट आऊट बाप-दादा मुख द्वारा नहीं करेंगे या कोई कागज़ व बोड़ पर नम्बर नहीं लिखेंगे। लेकिन रिजल्ट आऊट कैसे होगी? आप स्वयं ही स्वयं को अपनी योग्यताओं प्रमाण अपने-अपने निश्चित नम्बर के योग्य समझेंगे और सिद्ध करेंगे। ऑटोमेटिकली उनके मुख से स्वयं के प्रति फाइनल रिजल्ट के नम्बर न सोचते हुए भी, उनके मुख से सुनाई देंगे और चलन से दिखाई

कितना टाइम चाहिए? एक वर्ष। कितना चाहिए? कितना टाइम चाहिए? टीचर्स बतावें कितना टाइम चाहिए? पाण्डव बतावें ना! हाथ तो उठाया, कितना टाइम चाहिए। परिवार है, तो परिवार में सहयोग तो देना पड़ेगा ना। परिवार से कट तो होंगे नहीं, छोड़के जाना तो है नहीं, रहना तो यहाँ ही है तो परिवार को भी तैयार करना पड़ेगा ना। लौकिक में भी जब अच्छी बुद्धि थी, (आजकल नहीं) तो एक दो के सहयोगी बन आगे बढ़ाते थे, गांव को भी अपना परिवार समझते थे और यह तो अलौकिक परिवार है क्योंकि खिटखिट जो होती है, माया जो आती है वह परिवार की बात में आती है, सम्बन्ध में आती है, वेस्ट थॉट्स सम्बन्ध के कनेक्शन में चलते हैं। तो हाथ उठाने वाले बतायेंगे? क्या बोलते हैं? कोई बोले, माइक दो। (इसी सीजन में पूरा करेंगे) इसके साथ जो हैं वह हाथ उठाओ। यह फोटो निकालना। टीचर्स, इस सीजन में एक दो को सहयोग देकर, एक दो को भी आगे बढ़ाके और बाप की आशा को पूर्ण करेंगे, ठीक है? इसमें हाथ उठाओ। हाथ तो उठाके खुश कर दिया। अच्छा है। बाप कहते हैं एक बल एक भरोसा। अगर दोनों ही बातें हैं तो क्या नहीं हो सकता है! बाप ने कितने थोड़े समय में स्थापना का पार्ट बजाया! अभी तो सब नॉलेज़फुल बन गये हैं। डबल लाइट भी बन गये हैं। बापदादा जानते हैं कि यह सबजेक्ट थोड़ा अटेन्शन देने की है। पहले भी काम दिया था कि कम से कम एक सेन्टर जो है वह भी निर्विघ्न बने, सेन्टर के बाद ज़ोन बने, चलो ज़ोन भी छोड़ो, हर एक शहर समझो, कोई भी शहर है, दिल्ली है, अहमदाबाद है, कलकत्ता है, कोई एक कलकत्ता भी निर्विघ्न बन जाए, कलकत्ते के, दिल्ली के भी बैठे हैं और यह जिसका टर्न है कर्नाटक, कर्नाटक की सब टीचर्स बैठी हैं। कर्नाटक का एक एक सेन्टर और सेन्टर के कनेक्शन में जो हैं वह भी अगर एक हो जाएं तो उस ज़ोन को, शहर को भी बापदादा इनाम देगा। अच्छी सौगात देंगे, कोई निमित्त बनके दिखाये। मुख्य सेन्टर और उसके साथी सेन्टर, सारा परिवार तो बनना है ही लेकिन अभी तक रिजल्ट नहीं है। चलो मधुबन वालों ने हाथ उठाया है, अच्छा है। क्या नहीं कर सकते हैं। लेकिन करना पड़ेगा। ठीक है ना! पसन्द

परिवार में किसी भी बात में संस्कार खराब है, लेकिन मेरा संस्कार क्या? अगर खराब को देख मेरा संस्कार भी खराब हो गया, तो मैं भी तो खराब हो गया। खराब अच्छे को भी बदल लेता है। बाप ने स्थापना के समय 350-400 को इकट्ठा सम्भाला है, इतना तो अभी किसी का इकट्ठा रहने वाला परिवार नहीं है। चलो, डयुटी अलग अलग है लेकिन वह डयुटी है और परिवार में डयुटी है। रिवाजी परिवार, रिवाजी डयुटी, रिवाजी रीति से दिनचर्या बिताना, यह नहीं है, न्यारा और प्यारा परिवार है। इसमें डिस्टर्ब होना, फिर बहाना तो यह देते कि इसने किया तब यह हुआ, लेकिन बाप के आगे भी क्या ऑपोजीशन नहीं हुई! भागन्ती भी हुए ना! यह आपोजीशन नहीं है! लेकिन बाप ने फिर भी कहा, कोई भागन्ती भी हो गये तो भी टोली भेजो, उनको बुलाने की कोशिश करो, सर्विस करो, याद दिलाओ। ऐसे चार ही निश्चय में पास होना है वा तीन में, दो में? नम्बरवन होना है। इसके लिए विनाश की तैयारी होते भी अभी विनाश रूका हुआ है। प्रकृति भी बाप के पास आती है, प्रकृति भी कहती अब बहुत बोझ हो गया है। प्रकृति भी बोझ से छूटने चाहती है। माया भी कहती है कि मैं जानती हूँ कि मेरा पार्ट अभी जाने वाला है लेकिन ब्राह्मण परिवार में ऐसे भी बच्चे हैं जो छोटी बात में मेरे साथी बन जाते हैं। बिठा देते है मेरे को। तो अपना राज्य लाने में यह चार निश्चय परसेन्ट में है इसलिए समय भी रूका रहा है। बाकी माया और प्रकृति दोनों रेडी हैं। अब बताओ आर्डर करें? बच्चे अगर एवररेडी नहीं हैं तो माया और प्रकृति को आर्डर करें? करें? हाथ उठो। तैयार हो? ऐसे नहीं हाथ उठाओ। पेपर आयेगा, आयेगा पेपर। एवररेडी? अभी बापदादा की हर बच्चे में यही आशा है कि कैसे को मिटाके ऐसे करो। कैसे करूं, कैसे हो, नहीं। ऐसे हो। क्या करें नहीं, ऐसे करें। यह आश कब तक पूरी करेंगे? कितना टाइम चाहिए? क्योंकि सभी को तैयार होना है। अगर आप तैयार हो, हाथ उठाया, तो उन्हों का काम क्या है? एक दो को आप समान बनाना। जिन्होंने हाथ उठाया, वह आप समान बना सकते हो? परिवार को तैयार कर सकत` हो? इसमें हाथ उठाओ। कर सकते हैं? अच्छा कितना टाइम चाहिए?

देंगे। अब तक तो रॉयल पुरुषार्थियों की रॉयल भाषा चलती है, लेकिन थोड़े समय में रॉयल भाषा रीयल हो जावेगी। जैसे कि कल्प पहले का गायन है रॉयल पुरुषार्थियों का-कितना भी स्वयं को बनाने का पुरुषार्थ करें, लेकिन सत्यता रुपी दर्पण के आगे रॉयल भी रीयल दिखाई देगा। तो आगे चलकर ऐसे सत्य बोल, सत्य वृत्ति, सत्य दृष्टि, सत्य वायुमण्डल, सत्य वातावरण और सत्य का संगठन प्रसिद्ध दिखाई देगा। अर्थात् ब्राह्मण परिवार एक शीश महल बन जावेगा। ऐसी फाइनल रिजल्ट ऑटोमेटिकली आऊट होगी।

(27.05.1974)

आज सभी तकदीरवान विशेष आत्माओं की विशेषता को देख रहे हैं। कोई-कोई अपनी विशेषता को भी यथार्थ रीति से नहीं जानते हैं, कोई-कोई जानते हैं लेकिन वे अपनी विशेषता को कार्य में नहीं लगा सकते और कोई-कोई जानते हुए भी उस विशेषता में सदा स्थित नहीं रह सकते। वे कभी विशेष आत्मा बन जाते हैं या कभी साधारण आत्मा बन जाते हैं। कोटों में कोऊ अर्थात् पूरे ब्राह्मण परिवार में से बहुत थोड़ी आत्मायें अपनी विशेषता को जानती भी हैं, विशेषता में रहती भी है और कर्म में आती भी हैं। अर्थात् अपनी विशेषता से ईश्वरीय कार्य में सदा सहयोगी बनाती हैं। ऐसी सहयोगी आत्मायें बाप-दादा की अति स्नेही हैं। ऐसी आत्मायें सदा सरलयोगी व सहजयोगी व स्वत:योगी होती है। उनकी मूर्त में सदा ऑलमाइटी अथॉरिटी की समीप सन्तान की खुमारी और खुशी स्पष्ट दिखाई देती है अर्थात् सदा सर्व-प्राप्ति सम्पन्न लक्षण - उनके मस्तक से, नैनों से और हर कर्म में अनुभव होता है। उनकी बुद्धि सदा बाप समान बनने की, एक ही स्मृति में रहती है। ऐसी आत्माओं का हर कदम बाप-दादा के कदम पिछाड़ी कदम ऑटोमेटिकली स्वत: चलता ही रहता है।

(21.06.1974)

आपके भक्त कौन बनेंगे, किस हिसाब से आपके भक्त बनेंगे? जिन आत्माओं को, जिन श्रेष्ठ आत्माआं द्वारा व निमित्त बनी हुई आत्माओं द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति का अनुभव होता है, उन द्वारा कोई साक्षात्कार होता है और या कोई वरदान प्राप्ति का अनुभव होता है, तो उस आधार पर, वह उनकी प्रजा और भक्त बनते हैं। जो समीप आत्माएं होती हैं; जिन आत्माओं का, बाप से सम्बन्ध भी जुट जाता है और साथ-साथ बाप द्वारा वर्से के अधिकारी भी बनते हैं, वे रॉयल फेमिली में आते हैं। एक ही समय में, हरेक आत्मा, अपनी रॉयल फेमिली बना रही है अर्थात् वह भविष्य सम्बन्ध व राजघराना भी बना रही है; प्रजा भी बना रही है और भक्त भी बना रही है। भक्तों और प्रजा की निशानी क्या होगी? राज्य के सम्बन्ध में आने की बात तो सुनाई, परन्तु प्रजा और भक्त इन दोनों में अन्तर क्या होगा? प्रजा केवल ज्ञान और योग की प्राप्ति करने की पुरुषार्थी होगी, वह सम्बन्ध में समीप नहीं होगी, लेकिन दूर के सम्बन्ध में जरुर होगी। वह मर्यादा पूर्वक जीवन बनाने में, यथायोग्य तथा यथा-शक्ति पुरुषार्थी होगी, बाकी और भी जो दूसरे सब्जेक्टस हैं - धारणा और ईश्वरीय सेवा- उनमें भी यथा-शक्ति सहयोगी होगी, लेकिन सफलतामूर्त नहीं होगी। इसीलिये वह सोलह कला सम्पूर्ण नहीं बन पाती। कोई-न-कोई संस्कार व स्वभाव के वशीभूत होने के कारण, निर्बल आत्मा हाईजम्प नहीं दे सकती। इसलिये रॉयल परिवार में व राज्यकुल में आने के बजाय वह रॉयल प्रजा बन जाते हैं। रॉयल कुल नहीं, रॉयल प्रजा बाकी भक्त जो होंगे, वह कभी भी, स्वयं को अधिकारी अनुभव नहीं करेंगे। उनमें अन्त तक, भक्तपने के संस्कार रहेंगे और वे सदा मांगते ही रहेंगे-आर्शीवाद दो, शक्ति दो, कृपा करो, बल दो, या दृष्टि दो आदि। ऐसे माँगने के संस्कार व आधीन होने के संस्कार उनके लास्ट तक दिखाई देंगे। वे सदैव जिज्ञासु रुप में ही रहेंगे। उन्हें बच्चेपन का नशा मालिकपन का नशा, और मास्टर सर्वशक्तिवान् का नशा धारण कराते भी वे धारण नहीं कर सकेंगे। वे थोड़े में ही राज़ी रहने वाले होंगे-यह है भक्तों की निशानी। अभी इससे देखो कि प्रजा और भक्त कितने बने हैं? भक्त कभी भी

कि तीन में ठीक हो या चारों में ठीक हो या दो में ठीक हो या एक में ठीक हो? चेक किया? किया चेक? जो समझते हैं कि मैं चार ही मैं, चार ही निश्चय में बाप, आप, ड्रामा और परिवार, चार ही निश्चय में ठीक हूँ वह हाथ उठाओ। ठीक हैं? अच्छा ठीक हैं। पेपर लें? हाँ उठाओ। अच्छा परिवार में पास हो? परिवार के सम्बन्ध में आना, क्योंकि परिवार को छाडे तो कहाँ जायेंगे नहीं, रहना ही है, निभाना ही है। तो इसमें पास हो? कभी ऐसे आता है कि यह नहीं होता तो अच्छा होता, यह क्यों करते हैं, यह क्यों होता है, यह संकल्प आता है... एकदम परिवार का नशा, चार ही निश्चय वाला कभी भी ऐसे वैसे संकल्प में भी नहीं करेगा। संकल्प में आये कि ऐसे क्यों होता है, लेकिन मुझे वह क्यों वा क्या हिलावे नहीं, मूड नहीं बदली करे। इसको कहते हैं चार ही में पास। हाथ तो उठाया, बापदादा को खुश किया है परन्तु बापदादा को यह जो परिवार की बात है उसमें कभी कभी-बातें सुननी पड़ती हैं, देखनी पड़ती हैं। एकदम बड़ी दिल हो, सबको शुभ भावना, शुभ कामना से ठीक करना है, क्योंकि परिवार ही एक है। एकमत होके चलना है। सिर्फ चलना नहीं है, चलाना भी है इसलिए बापदादा इस बात पर अटेन्शन दिला रहे हैं कि परिवार में जो किसी भी हलचल में पास हो जाते हैं, व्यर्थ नहीं चलता है, उन्हें दूसरों को ऐसा बनाना है। अभी तो आप अपने-अपने सेन्टर पर कितने रहते हो, चलो ज्यादा में ज्यादा 25-50, इतने होते नहीं है लेकिन मानों बड़े स्थान है, उसमें भी 50-60 अच्छा ज्यादा में ज्यादा 100 भी समझो, इतने है नहीं लेकिन समझ लो, तो बापदादा ने सभी सेन्टर्स के बच्चों को लास्ट को भी अपना प्यारा कहके चलाया और प्यार की निशानी है रोज़ बापदादा यादप्यार क्या देता? मीठे मीठे, जानता है खट्टे भी हैं लेकिन मीठे खट्टे कभी यादप्यार में कहा है? उन्हों को भी लाडले कहता है, न सिर्फ कहता है लेकिन मेरा बच्चा है, मेरे भाव से चलाता है क्योंकि ड्रामा में, माला में सब एक नम्बर नहीं हैं, यह रिजल्ट है। संस्कार भिन्न-भिन्न होते हैं, होना है, नहीं तो सब राजा बन जायें, प्रजा कौन बनेगा! राज्य किस पर करेंगे? अच्छी प्रजा भी तो चाहिए, रॉयल प्रजा, राजधानी है ना। ऐसे हर एक अपने को चेक करे,

रहना है, परिवार को छोड़ कहाँ जा नहीं सकते। तो चेक करो ऐसे नहीं समझना कि बाप जाने मैं जानूं। बाप से ही कार्य है लेकिन अगर इन चार निश्चय में से एक भी निश्चय कम है तो हलचल में आ जायेंगे। सेवा के साथी, बाप तो सकाश देने वाले हैं लेकिन साथी कौन? साकार का साथ तो परविार का है तो बाप ने देखा है कि तीन निश्चय में मैजारिटी ठीक चल रहे हैं लेकिन परिवार के साथ में निभाना, संस्कार मिलाना, एक-एक को कल्याण की भावना से देखना और चलना, इसमें कई बच्चे यथाशक्ति बन जाते हैं। लेकिन बाप ने देखा कि जो परिवार के निश्चय में नॉलेजफुल होके सदा बाप समान साक्षीपन की स्थिति में साथ में आते हैं, रहते हैं वही नम्बरवन या नम्बरवन डिवीजन में आते हैं। तो चेक करो भाव स्वभाव परिवार में होता है, तो छोटी-छोटी गलतियाँ भी होती है, विघ्न भी आते हैं वह परिवार के सम्बन्ध में ही आती है। तो सबसे आवश्यक इस परिवार के सम्बन्ध में पास होना है। अगर परिवार में चलने में तोड़ निभाने में कोई भी कमी होती है तो वह विघ्न छोटा हो या बड़ा हो लेकिन तंग करता है। यह क्यों, यह कैसे, परिवार के कनेक्शन में आता है। तो क्यों के बजाए, क्यों नहीं करना है, लेकिन हमें मिलकर चलना है, परिवार की प्रीत निभानी है क्योंकि यह बाप का परिवार है, भगवान का परिवार है। रिवाजी परिवार नहीं है। नशा रहना चाहिए कि वाह बाबा, वाह ड्रामा, वाह मैं और वाह परिवार! ठीक है? चेक करते हो? चार ही में पास हो? एक में भी कम नहीं चेक करो। अभी-अभी चेक करो क्योंकि विजयी बनने का साधन ही यह है। परिवार के बीच संस्कार निकलते हैं और वह संस्कार मिलाना खुद भी परिवर्तन करना और परिवार को भी इतनी ऊंची दृष्टि से देखना। बापदादा ने पहले भी कहा है कि बापदादा लास्ट बच्चे को भी अति भाग्यवान समझते हैं क्यों? भगवान को पहचाना, साधारण रूप में बाप को पहचाना, जो इतने बड़े-बड़े महात्मायें भी पहचान नहीं सके, लेकिन बापदादा का लास्ट बच्चा भी मेरा बाबा कहता है। दिल से मेरा बाबा कहते हैं। तो बापदादा जैसे लास्ट बच्चे की भी विशेषता देख, जैसे बच्चों को लाड प्यार, यादप्यार देते हैं वैसे लास्ट वालों को भी देते हैं। तो चेक करो

डायरेक्ट बाप के कनेक्शन में आने की शक्ति नहीं रखते, वे सदा आत्माओं के सम्बन्ध में ही संतुष्ट रहते हैं। उनके बार-बार यही बोल रहेंगे, आप ही हमारे लिए सब-कुछ हो, आपके पास ऐसे भक्त भी आवेंगे। न चाहते हुए भी हरेक निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रजा और भक्त बनते ही रहते हैं। अब समझा! आपकी दुनिया व रचना क्या है? आगे चलकर हरेक को यह साक्षात्कार भी होगा कि मैं किस राजधानी में राज्यपद पाने वाली हूँ या पाने वाला हूँ।

(14.07.1974)

निश्चय-बुद्धि विजयन्ति हो। अलौकिक जन्म हुआ, निश्चयबुद्धि हुए कि मैं बाप का बच्चा हूँ, तो बाप का वर्सा ही विजय है। मास्टर सर्व-शक्तिवान् का वर्सा क्या होगा? शक्तियाँ। तो बच्चा बनना अर्थात् विजयी बनना। विजय का तिलक स्वत: ही लग जाता है, लगाना नहीं पड़ता और वह अविनाशी है। अधिकारी हो गये हो ना? स्नेही और सहयोगी बनने की तकदीर अच्छी है। परिवार का परिवार एक मत हो जाये तो यह भी तकदीर की निशानी है। परिवार के सब साथी पुरुषार्थ की रेस में एक-दूसरे से आगे निकलने की लगन में लगे हुए हैं। हिम्मत से मदद स्वत: ही प्राप्त होती है। (वीरचन्द को) यह मोह-जीत परिवार है। ऐसे मोह-जीत परिवार कितने बनाये हैं? लक्ष्य श्रेष्ठ रखा हुआ है। अब ऐसे परिवारों का गुलदस्ता बनाओ। अगर दस-ग्यारह ऐसे परिवार हो जाएँ तो अहमदाबाद का नम्बर आगे हो जायेगा। गुजरात को, परिवारों को चलाने का वरदान ड्रामानुसार मिला हुआ भी है। लेकिन मोह-जीत परिवार और सब एक लगन में श्रेष्ठ पुरुषार्थ की लाइन में हो। ऐसा गुलदस्ता बनाओ।

(09.02.1975)

वायदा है कि मेरा तो एक बाप, दूसरा न कोई। अगर वह नहीं निभाते तो यह भी झूठ हुआ। ऐसे ही धोखा और ठगी कौनसी करते हो? सबसे बड़ा धोखा

स्वयं को देते हो कि जो जानते हुए, मानते हुए फिर भी स्वयं को श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित कर देते हो - यह हुआ स्वयं को धोखा देना। धोखे की निशानी है जिससे दु:ख की प्राप्ति होती है। साथ-साथ ब्राह्मण परिवार में भी धोखा देते हो। कहना एक और करना दूसरा, अपनी कमजोरी को छिपाकर बाहर से अपना नाम बाला करना या अपने को अच्छा पुरुषार्थी सिद्ध करना। यह एक दूसरे को धोखा देते हो। कोई भी गल्ती करके छिपाना यह भी धोखा देना है व ठगी करना है।

(15.10.1975)

मैजारिटी इस ब्राह्मण जीवन के आदि में अर्थात् पहले-पहले जब बाप द्वारा बाप का परिचय, ज्ञान का खजाना प्राप्त होता है, अपने जन्म-सिद्ध अधिकार का मालूम पड़ता है, याद द्वारा अनुभव प्राप्त होता है, दु:ख, 'सुख' में बदल जाता है, अशान्ति, 'शान्ति' में बदल जाती है और भटकना बन्द हो, ठिकाना मिल जाता - उस शुरू की स्थिति में बहुत अच्छे, तीव्र उमंग-उल्लास वाले, खुशी में झूमने वाले, सेवा में रात-दिन एक करने वाले, सम्बन्ध और शरीर की सुध-बुध भूले हुए, ऐसे फर्स्ट क्लास सर्विस-एबल, नॉलेजफुल और पॉवरफुल स्वयं को भी अनुभव करते हैं और अन्य ब्राह्मण भी उनको ऐसे ही अनुभव करते हैं। लेकिन आदि के बाद फिर जब मध्य में आते हैं तो पुरुषार्थ से, अपनी सेवा से, खुशी और उमंग से संतुष्ट नहीं रहते। अपने आप से क्वेश्चन करते रहते हैं कि- 'पहले ऐसा था अभी ऐसा क्यों, पहले जैसा उमंग कहाँ चला गया? पहले वाली खुशी गायब क्यों हो गई? चढ़ती कला के बजाय रुकावट क्यों हो गई? जबकि ज्ञान गुह्य हो रहा है, समय समीप आ रहा है, सेवा के साधन भी बहुत प्राप्त हो रहे हैं और फिर भी पहले जैसा अनुभव क्यों नहीं होता?' मैजॉरिटी का यह अनुभव देखा। अब इसका कारण क्या?

कारण यह है - जब सेवा में और ब्राह्मण परिवार के सम्पर्क में व सेवा द्वारा जो प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता है उसमें चलते-चलते कोई हद की पोज़ीशन में आ

रहेंगे क्योंकि ड्रामा के ज्ञान से अडोल अचल बन जाते हैं। यह निश्चय रहता है कि मैं ही कल्प पहले भी समाधान स्वरूप अर्थात् सफल आत्मा बना था, बनी हूँ और कल्प के बाद भी मैं ही बनूंगी। तो यह नशा ड्रामा का निश्चय पक्का कराता। फखुर रहता है, नशा रहता है मैं थी, मैं ही हूँ और मैं ही बनेंगी इसलिए इस पुरुषार्थी जीवन में ड्रामा का निश्चय भी आवश्यक है और साथ में चौथा है परिवार का निश्चय क्योंकि बाप ने आते ही परिवार को पैदा किया। तो जैसे बाप में निश्चय है वैसे परिवार में भी निश्चय आवश्यक है क्योंकि परिवार किसका है? और इतना बड़ा परिवार और किसका हो सकता है! तो परिवार में भी निश्चय अति आवश्यक है क्योंकि इतना बड़ा परिवार विश्व में किसका है? आप जितना परिवार चेक करो विश्व में, किसका है? परिवार की रीति से किसी भी डिवाइन फादर का भी नहीं है वहाँ फॉलोअर हैं, यहाँ परिवार है। परिवार के साथ ही सेवा में, सम्बन्ध में रहते हो। ऐसे नहीं कि हमारा तो बाप से ही कनेक्शन है, परिवार से नहीं हुआ तो क्या हुआ। परिवार का निश्चय तो आपका 21 जन्म चलना है। जानते हो ना! परिवार के साथ ही सम्बन्ध में आने से मालूम होता है कि मैं इतने बड़े परिवार में सभी से निश्चयबुद्धि हो चल रहे हैं, परिवार में चलने के लिए यह अटेन्शन देना पड़ता है कि परिवार में हर एक के संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और होंगे। आपका यादगार माला है, माला में देखो कहाँ एक नम्बर और कहाँ 108वां नम्बर क्योंकि परिवार में भिन्न-भिन्न संस्कार हैं। तो इतने बड़े परिवार में चलते संस्कारों को समझ एक दो में एक परिवार, एक बाप एक राज्य, तो एक होके चलना है। परिवार में जैसे बड़ा परिवार है, ऐसे ही एक दो में बड़ी दिल, हर एक के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना की स्थिति में स्थित हो चलना है क्योंकि परिवार के बीच ही संस्कार स्वभाव आता है। लेकिन कोई समझे परिवार से क्या है, बाबा से तो है। लेकिन यहाँ धर्म और राज्य दोनों की स्थापना है, सिर्फ धर्म नहीं है, दूसरे जो भी धर्म पिता आये हैं उनका सिर्फ धर्म है, राज्य नहीं है, यहाँ तो आप सबको राज्य भी करना है। तो राज्य में परिवार की आवश्यकता होती है और 21 जन्म भिन्न-भिन्न रूप से परिवार के साथ ही

राज्य भाग्य होगा, आप सबका राज्य होगा, सुख शान्ति सब होगा लेकिन परमात्म मिलन का, अतीन्द्रिय सुख का, सर्व ब्राह्मण परिवार का, आदि मध्य अन्त की नॉलेज का वह अब संगम पर ही मिला है, हर कल्प मिलता रहेगा।

(25.10.2009)

काल आफ टाइम के मेहमानों से:- लकी हैं, आपका भाग्य आप सबको यहाँ तक लाया है, अभी इस भाग्य को आगे बढ़ाते रहना। आगे बढ़ाने का साधन क्या है? एक तो कनेक्शन जरूर रखना और कनेक्शन के आगे इस ब्राह्मण फैमिली से, बापदादा से रिलेशन आगे बढ़ाते रहना। जितना कनेक्शन रिलेशन रखेंगे उतना खजाने अखुट खजाने इकट्ठे होते रहेंगे। खजानों के मालिक बन जायेंगे। जिस समय जो शक्ति चाहिए, जो गुण चाहिए वह अनुभव करते रहेंगे। अच्छा है। बापदादा को यह जो प्रोग्राम किया, करते रहते हैं, अच्छा लगता है। मधुबन में इन्डिया में आना पसन्द आता है ना! पसन्द आता है? देखो आपको देख करके इन्डिया के आपके भाई बहिन वह भी खुश होते हैं। सभी के दिल में आता है हमारे भाई हमारी बहिनें आ गई, आ गई, खुशी होती है। देखो आप भी खुश होते और यहाँ सारा परिवार इतना बड़ा परिवार कभी सुना, देखा, और अभी देखो कितना आपका परिवार है। तो एक एक बच्चे को बापदादा का पदमगुणा यादप्यार स्वीकार हो।

(15.11.2009)

ड्रामा में भी निश्चय बहुत जरूरी है क्योंकि ड्रामा में समस्यायें भी आती हैं और सफलता भी होती है। अगर ड्रामा में पक्का निश्चय है तो ड्रामा के निश्चय से जो निश्चयबुद्धि है वह समस्या को समाधान स्वरूप में बदल देता है क्योंकि निश्चय अर्थात् विजय। तो किसके ऊपर विजयी बनता? परिवर्तन करने में, एक सेकण्ड में समस्या परिवर्तन हो समाधान रूप बन जाती है। हलचल में नहीं आयेंगे, अचल

जाते हैं, कोई हमशरीक सर्विस-साथियों व सम्पर्क में आने वाले अपने साथियों का ऑपोज़ीशन करने में लग जाते हैं, कोई स्थूल सेलवेशन लेने में लग जाते हैं अर्थात् सेलवेशन के आधार पर सेवा और पुरुषार्थ करते हैं, कोई क्वेश्चन और करेक्शन करने लग जाते हैं और फिर कोई दूसरे की कोटेशन (उदाहरण) देने लग पड़ते हैं अर्थात् दूसरे के दृष्टान्त से अपना सिद्धान्त बनाने लग जाते हैं। इन पाँच में से कोई-न-कोई उल्टा मार्ग अपना लेते हैं। बाप ने कहा कि सदा तपस्वी बनकर के अपने ईश्वरीय ब्राह्मणपन के, सर्वस्व त्यागी के पोज़ीशन में स्थित रहो। लेकिन हद की पोज़ीशन कि - 'मैं सबसे ज्यादा सर्विसएबल हूँ, प्लैनिंग-बुद्धि हूँ, इनवेन्टर हूँ, धन का सहयोगी हूँ, दिन-रात तन लगाने वाला हूँ अर्थात् हार्ड-वर्कर हूँ या इन्चार्ज हूँ।' - इस प्रकार के हद के नाम, मान और शान के उन उल्टे पोज़ीशन को पकड़ लेते हैं। अर्थात् यथार्थ मंजिल से व्यर्थ मार्ग पर तीव्र गति से चल पड़ते हैं।

(27.10.1975)

जब श्रेष्ठ नॉलेज है, स्टेज भी पॉवरफुल है तो सिद्धि क्या बड़ी बात है? अल्पकाल वालों को सिद्धि प्राप्त होती है और सदाकाल स्थिति में रहने वालों को सिद्धि प्राप्त न हो, यह हो नहीं सकता। तो यह संगठन की शक्ति चाहिए। एक ने कुछ बोला, दूसरे ने स्वीकार किया। सामना करने की शक्ति ब्राह्मण परिवार के आगे यूज़ नहीं करनी है। वो सामना करने की शक्ति माया के आगे यूज़ करनी है। परिवार से सामना करने की शक्ति यूज़ करने से संगठन पॉवरफुल नहीं होता। कोई भी बात नहीं जंचती तो भी एक-दूसरे का सत्कार करना चाहिए। उस समय किसी के संकल्प वा बोल को कट नहीं करना चाहिए। इसलिये अब समाने की शक्ति को धारण करो।

(09.12.1975)

टीचर्स को विशेष दो बातों का अटेन्शन रखना चाहिये, वह दो बातें कौन-सी हैं? मधुबन से, बाप के साथ तथा दैवी परिवार के साथ मर्यादा-पूर्वक कनेक्शन हो। मर्यादापूर्वक कनेक्शन यह है कि जो भी संकल्प व कर्म करते हो, उसके हर समय करेक्शन करने के अभ्यासी हो। दो बातें - एक यथार्थ कनेक्शन और दूसरा हर समय अपनी हर करेक्शन करने की अटेन्शन। अगर दोनों ही बातों में से एक में भी कमी है तो सफ़लतामूर्त नहीं बन सकते। करेक्शन करने के लिये सदैव साक्षीपन की स्टेज चाहिये। अगर साक्षी हो करेक्शन नहीं करेंगे तो यथार्थ कनेक्शन रख न सकेंगे। तो यह सदैव चेक करो कि हर समय हर बात में करेक्शन करते हैं? एक है बुद्धि की करेक्शन जिसको याद की यात्रा कहते हैं दूसरा है साकार कर्म में आते हुए, साकार परिवार व साकार सम्बन्ध के कनेक्शन में आना। दोनों ही कनेक्शन ठीक हों। साकार में कनेक्शन में आने में मर्यादापूर्वक हैं? जैसे रूहानी परिवार का कनेक्शन रूहानियत के बजाय देह-अभिमान का कनेक्शन है तो वह भी यथार्थ कनेक्शन नहीं हुआ।

(08.02.1976)

स्वयं को जो हूँ, जेसा हूँ, जिस श्रेष्ठ बाप और परिवार का हूँ वैसा जानते हो; लेकिन हर समय मानते नहीं हो। अपनी तकदीर की तस्वीर नहीं देखते हो। अगर सदैव अपनी तकदीर की तस्वीर को देखते रहो तो जैसा साकार शरीर को देखते हुए नैचुरल देह की स्मृति-स्वरूप रहते हो वेसे ही नैचुरल तकदीर की तस्वीर के स्मृति में रहेंगे। चलते फिरते वाह बाबा! और वाह मेरी तकदीर की तस्वीर! यह अजपाजाप अर्थात् मन से यह आवाज़ निकलती रहे। जो भक्त लोग अनहद आवाज़ सुनने का प्रयत्न करते हैं, यह आप की ही स्थिति का गायन भक्ति में चलता रहता है। अपने कल्प पहले की खुशी में सदा नाचने का चित्र जिसको रास-लीला का चित्र कहते हैं - हर गोपी वा गोप सदा गोपीवल्लभ के साथ रास करते

कम है तो ध्यान रखना पड़ेगा परन्तु आजकल गाँव में पानी पीने का भी नहीं मिलता, यहाँ तो आपको कपड़े धोने का भी पानी मिला। और इतने परिवार देख खुशी भी होती है। सारे कल्प में बापदादा को यह फखुर है कि इतना बड़ा परिवार किसी का नहीं है। अच्छा।

जो पहली बारी आये हैं, पहले बारी बापदादा से मिलने आये हैं वह उठो। देखा आधा क्लास पहले बारी वाला है। पीछे वाले हाथ उठाओ। खड़े होकर देखो। जो भी पहले बारी आये हैं उन्हों को बापदादा नये बर्थ का, बर्थ डे की मुबारक दे रहे हैं। लोग कहते हैं लाख-लाख बधाई हो बाप कहते हैं पदम पदमगुणा बधाई हो। और बापदादा अभी आने वालों को सदा एक चांस देते हैं वह चांस है कि अभी आने वाले भी अगर तीव्र पुरुषार्थ करें तो बापदादा वा ड्रामा उन्हों को लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट, यह भी आगे नम्बर दे सकता है। चांस है। चांसलर बनो। सिर्फ अटेन्शन देना पड़े। अच्छा है, आप सभी को भी परिवार की वृद्धि अच्छी लगती है ना।

(07.04.2009)

संगमयुग में छोटे से जन्म में 21 जन्म की प्राप्ति, जिसमें तन, मन, धन, जन सर्व प्राप्ति है और गैरन्टी है 21 जन्म फुल, आधा नहीं, पौना नहीं लेकिन फुल 21 जन्म की गैरन्टी है। तो सबसे ज्यादा जो महत्व है वह है संगमयुग का एक-एक सेकण्ड अनेक वर्षो के समान है। तो बोलो, सर्व खजानों से सम्पन्न तो हैं? सम्पन्न है ना? इसलिए बापदादा सदा समय की स्मृति दिला रहे हैं। कई बच्चे समझते हैं कि एक दो मिनट अगर और कुछ सोच लिया, तो 2 मिनट ही तो हैं। लेकिन जितना समय का महत्व है उस अनुसार तो 2 मिनट नहीं, 2 मास भी नहीं, दो वर्ष के समान हैं। इतना महत्व है संगम के समय का। सर्व शक्तियों की, सर्व गुणों की, परमात्म प्यार की, ब्राह्मण परिवार के प्यार की और कल्प पहले वाले ईश्वरीय हक की। सर्व प्राप्ति इस छोटे से युग में हैं और कोई भी युग में यह सर्व प्राप्ति नहीं।

एक को देना है। कोई भी सरकमस्टांश सभी के योग से सभी के समय के देने से ठीक हो सकता है। सभी का एक ही संकल्प हो तभी होगा। अच्छा है बड़ी दिल रखो, आता जायेगा, सोचेंगे ना यह करूं, नहीं करूं, नहीं करूं करूं में टाइम नहीं गंवाओ। आजकल समय है, अगर आप सभी शुभ भावना का एक संकल्प रखो कि होना ही है तो हो सकता है। यह वरदान है। कायदेसिर भी और दिल बड़ी भी, सिर्फ कायदा नहीं दिल बड़ी रख करके फिर कायदा। सभी का एक ही संकल्प हो, होना है, क्यों-क्या नहीं, होना ही है। तो इस विधि से सब सहज हो जायेगा। बस 10 मिनट, आप सब निमित्त बनी हुई आत्माओं को खास टाइम निर्विघ्न, परिवार निर्विघ्न के प्रति 10 मिनट योग करना है तो सहज हो जायेगा। अभी समय है सहज हो सकता है। सिर्फ हो जायेगा, हो जायेगा.....।

(24.03.2009)

देखो आज संख्या बढ़ गई है तो बापदादा ने बच्ची को इशारा दिया तो चक्कर लगाके देखकर आओ, कहाँ-कहाँ सोये हैं, कैसे लाइन में खाते हैं। लम्बी लाइन। लेकिन सबके चेहरे पर खुशी है। मधुबन में तो हैं। लेकिन यह खुशी मधुबन में ही छोड़के नहीं जाना, साथ ले जाना। बापदादा ने वतन में बैठे आप सबको सोने का, खाना खाने की क्यू का नज़ारा देखा। बापदादा को ऐसा संकल्प होता कि अभी अभी रजाईयों की, गदेलों की बरसात पड़ जाए। परन्तु यह भी मौजों का मेला है। और अच्छी तरह से बापदादा ने देखा, जहाँ भी मिला, जैसे भी मिला है, सब मैजारिटी अच्छी तरह से पास है। ताली बजाओ। लेकिन यह होमवर्क भूलना नहीं। इसमें ताली नहीं बजाते। बापदादा और विशेष ब्रह्मा बाप हमेशा बच्चों को मधुबन का श्रृंगार कहते हैं। तो आप सब मधुबन में आये, बापदादा भी साकार रूप से इतने परिवार को देख खुश है। सहन करना पड़ा है, लेकिन यह सहन सदा के लिए सहनशक्ति बढ़ायेगा। सभी खुश हो ना! तकलीफ तो नहीं हुई। और देखो इतने परिवार में पानी फिर भी मिलता रहा है। सभी ने पानी यूज़ किया ना! थोड़ा

हुए दिखाते हैं, यह खुशी में नाचने का यादगार चित्र है। आप के प्रैक्टीकल चरित्र का चित्र बना है।

(10.01.1977)

जैसे हरेक लौकिक कुल की मर्यादा की भी लकीर होती है। ऐसे ब्राह्मण कुल की मर्यादाओं की लकीर के अन्दर रहते है? मर्यादाओं की लकीर, संकल्प में भी किसी आकर्षण वश उल्लंघन तो नहीं करते हैं। अर्थात् लकीर से बाहर तो नहीं जाते हैं। शूद्रपन के स्वभाव वा संस्कार की स्मृति आना अर्थात् अछूत बनना। अर्थात् ब्राह्मण परिवार से अपने आप ही अपने को किनारे करना। तो यह चैक करो कि सारे दिन में बाप का सहारा कितना समय रहता और अपने आप किनारा कितना समय किया? बार-बार किनारा करने वाले बाप के सहारे का अनुभव, बाप के साथ-साथ रहने का अनुभव, बाप द्वारा प्राप्त हुए सर्व खज़ानों का अनुभव, चाहते हुए भी नहीं कर पाते हैं। सागर के किनारे पर रहते सिर्फ देखते ही रह जाते हैं, पा नहीं सकते। पाना है, यह इच्छा बनी रहती है लेकिन 'पा लिया है', यह अनुभव नहीं कर पाते हैं। जिज्ञासा ही रह जाते हैं। 'अधिकारी' नहीं बन पाते हैं।

(19.04.1977)

रोज अमृतवेले बाप वरदान देते हैं; अगर रोज वरदान लेते रहो तो कभी भी कमज़ोर नहीं हो सकते। वरदान लेने के सिर्फ पात्र बनना। जो भी चाहिए अमृतवेले सब मिल सकता है। ब्राह्मणों के लिए स्पेशल (विशेष) समय फिक्स (नियुक्त) है जैसे कितना भी कोई बड़ा आदमी हो, लेकिन फिर भी अपने फैमली (परिवार) के लिए विशेष टाईम (समय) जरूर रखेंगे। तो अमृतवेला विशेष बच्चों के प्रति है, फिर विश्व की आत्माओं प्रति। पहला चान्स बच्चों का है। तो सब अच्छी तरह से चान्स लेते हो? इसमें अलबेले नहीं बनना।

(26.04.1977)

बाप को जान लिया, पा लिया वा वर्सा भी पा लिया, ब्राह्मण परिवार के अन्दर ब्राह्मण भी स्वयं को मान लिया, ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी का टाईटल भी लग गया; ईश्वरीय सेवा अर्थ निमित्त बन गए। सहज राजयोगी भी कहलाया, प्राप्ति के अनुभव भी करने लग गए, ईश्वरीय नशा, प्राप्ति का नशा भी चढ़ने लगा, प्रालब्ध का निशाना भी दिखाई देने लगा, लेकिन आगे क्या हुआ? माया की चैलेन्ज (चेतावनी) को सफ़लता पूर्वक सामना नहीं कर पाया। माया के वैरायटी रूपों को परख नहीं पाते हैं, इसलिए कोई माया को बलवान देख दिल-शिकस्त हो जाते हैं; क्या हम विजयी बन सकेंगे? कोई सामना करते-करते कब हार, कब जीत अनुभव करते हैं, थक जाते हैं। अर्थात् थककर जहाँ हैं, जैसा है वहाँ ही रुक जाते हैं। आगे बढ़ने का सोचते भी हिम्मत नहीं आती।

याद रखो, सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी, तो सत्य के साथ की नांव हिलेगी, लेकिन डूब नही सकती। बाप को ज़िम्मेवारी देकर वापिस नहीं ले लो। मैं चल सकूंगा - 'मैं' कहां से आई? मैं-पन मिटाना अर्थात् बाप का बनना। यही ग़लती करते हो, और इसी ग़लती में स्वयं उलझते परेशान होते। मैं करता हूँ, या मैं कर नहीं सकता हूँ, इस देह-अभिमान के 'मैं-पन' का अभाव हो। इस भाषा को बदली करो। जब मैं बाप की हो गई, वा हो गया, तो ज़िम्मेदार कौन? अपनी ज़िम्मेवारी सिर्फ एक समझो - जैसे बाप चलावे वैसे चलेंगे, जो बाप कहे वह करेंगे। जिस स्थिति के स्थान पर बाप बिठाए वहाँ बैठेंगे। श्रीमत में मैंपन की मनमत मिक्स नहीं करेंगे, तो पश्चात्ताप से परे, प्राप्ति स्वरूप और पुरुषार्थ की सहज गति प्राप्त करेंगे अर्थात् सदा सद्बुद्धि प्राप्त करेंगे। अपने को वा दूसरों को देख घबराओ मत। क्या होगा? यह भी होगा? घबराओ नहीं लेकिन गहराई में जाओ। क्योंकि वर्तमान, 'अन्तिम समय' समीप के कारण एक तरफ, अनेक प्रकार के रहे हुए हिसाब-किताब, स्वभाव-संस्कार वा दूसरे के सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा बाहर निकलेंगे अर्थात् अन्तिम विदाई लेंगे। तो बाहर निकलते हुए अनेक प्रकार के मानसिक परीक्षाओं रूपी बीमारियों को देख घबराओ नहीं। लेकिन यह अति,

है। बाबा को सामने लाओ, उसकी गलती को सामने नहीं लाओ। परिवार का है, उसमें उमंग लाओ, उत्साह लाओ, चलो गलतियाँ भी करते हैं, बापदादा को मालूम है क्या क्या गलतियाँ करते हैं, वह छिपती नहीं है, लेकिन हर एक अपने आपसे पूछे मैं ब्रह्माकुमारी, ब्रह्माकुमार बना क्यों, लक्ष्य क्या? जो लक्ष्य रखके आये, सिर्फ अपने को बचाने का नहीं, दालरोटी मिल रही है, संगठन अच्छा है, ब्राह्मण जीवन में खिटराग से सेफ हो गये....., इस लक्ष्य से नहीं आये। लक्ष्य बहुत अच्छा ले आये लेकिन अभी कहाँ कहाँ लक्ष्य और लक्षण में अन्तर आ गया है। बापदादा को सब पता है सिर्फ नाम नहीं लेते, कभी वह भी समय आयेगा। जो करता है, बापदादा ने देखा कि मैजारिटी संगदोष में बहुत आते हैं। दिल भी खाती है, करना नहीं चाहिए लेकिन संग का रंग, बाप के संग का रंग कम लगा है इसीलिए वह रंग लग जाता है। बापदादा फिर भी सभी बच्चों को प्यार देकर केहते हैं कि अपना वर्तमान और भविष्य निर्विघ्न बनाओ। संगदोष में नहीं आओ। संगदोष में आ जाते हैं, टैम्पटेशन है, संगदोष में नहीं आओ। हद की प्राप्तियाँ के आकर्षण में नहीं आओ क्योंकि बापदादा को तरस पड़ता है कि कहता है मेरा बाबा, कहता है मेरा बाबा और करता क्या है? इसीलिए आज होली का दिन है ऐसी-ऐसी बातें समझदार बनके जला दो। फिर टूलेट के बोर्ड से आगे बदल जाओ, बापदादा मदद करेगा लेकिन सच्ची दिल को। साफ दिल मुराद हाँसिल, करके देखो दिल से। सच्ची दिल और मुराद हाँसिल नहीं हो, हो नहीं सकता।

(09.03.2009)

तीन बड़े भाईयों से:- आप लोग जो निमित्त हो चाहे भाई, चाहे बहनें, जो भी निमित्त है, परिवार निर्विघ्न रहे उसके लिए कुछ टाइम फिक्स करो। अमृतवेले बाप को तो अपना टाइम देते हो और सेवा के प्रति भी टाइम देते हो और खास परिवार की उन्नति के लिए और यज्ञ की कारोबार आगे आगे बढ़ती जाए, गवर्मेन्ट द्वारा चाहे आपस में निर्विघ्न होता जाए उसके लिए अमृतवेले 10 मिनट हर

करो, सुनाया था ज्ञान है बीज और स्नेह है पानी। सिर्फ ज्ञान से जाना लेकिन दिल के प्यार का अनुभव नहीं किया, प्यार से बाप को याद नहीं किया तो प्रैक्टिकल फल नहीं निकलता अर्थात् अनुभव नहीं होता। अनुभवी स्वरूप है फल लेकिन पानी नहीं देते तो सूखा गन्ना हो जाता। भले कोर्स कराओ, भाषण करके आओ और इनाम भी लेके आओ, दिन में चार चार भाषण करो लेकिन दिल का स्नेह नहीं क्योंकि बाप से दिल के स्नेह की निशानी है हर ब्राह्मण परिवार से भी स्नेह। स्नेह नहीं तो माया के विघ्न ज्यादा आते हैं क्योंकि पानी डाला ही नहीं तो फल कैसे मिलेगा। कई बच्चे कहते हैं ज्ञान तो समझ गये हैं, बाबा से सर्व संबंध भी हैं लेकिन अनुभव नहीं होता। अनुभव है फल, सूखा ज्ञानी नहीं बनो, स्नेही, बाप का स्नेही, परिवार का स्नेही स्वतः बन जाता है क्योंकि बाप समान है ना। तो बाप का लास्ट बच्चे से भी दिल का प्यार है। हर एक को स्नेह की वृत्ति से देखते। तो सिर्फ ज्ञानी नहीं बनो, भाषण वाले नहीं, भासना स्वरूप बनो। अपने आप से पूछो बाप से दिल का स्नेह है? कि जिस समय आवश्यकता है उस समय का स्नेह है! वह हो गये ज्ञानी भक्त। तो इस वर्ष क्या करेंगे? स्नेह का वायुमण्डल, एक एक को देखके चाहे कमजोर है, लेकिन पुरुषार्थी तो है ना! परिवार का तो है ना। गिरे हुए को गिराओ नहीं, उमंग-उत्साह बढ़ाओ। स्नेह का वायुमण्डल बनाओ।

(31.12.2008)

बापदादा एक एक बच्चे से स्पेशल प्यार है, ऐसे नहीं कि सिर्फ निमित्त बनने वालों से लेकिन एक-एक बच्चा कोटों में कोई तो है ही, लास्ट नम्बर भी कोटो में कोई है। तो जो कोटों में कोई है वह तो महान हो गया ना। लेकिन कैसा भी कोई हो लास्ट हो, उसके प्रति भी सदा उसको आगे बढ़ाने के लिए एक तो एक दो को स्वमान की दृष्टि से देखो, हर एक का स्वमान है, लास्ट नम्बर का भी स्वमान है, कोटों में कोई है। प्रेजीड़ेन्ट से तो अच्छा है। पहचाना तो है, मेरा बाबा तो कहता है। तो स्वमान में रहो और सम्मान दो। एकता, लास्ट नम्बर भी एक बाबा का बच्चा

अन्त की निशानी समझो। दूसरे तरफ, अन्तिम समय समीप होने के कारण कर्मों की गति की मशीनरी भी तेज़ रफ्तार से दिखाई देगी। धर्मराजपुरी के पहले यहाँ ही कर्म और उसकी सज़ा का बहुत साक्षात्कार अभी भी होंगे - आगे चलकर भी। और सत्य बाप के सच्चे बच्चे बन, सत्य स्थान के निवासी बन, जरा भी असत्य कर्म किया तो प्रत्यक्ष दंड के साक्षात्कार अनेक वंडरफुल (आश्चर्य) रूप के होंगे। ब्राह्मण परिवार वा ब्राह्मणों की भूमि पर पांव ठहर न सकेंगे, हर दाग स्पष्ट दिखाई देगा, छिपा नहीं सकेंगे। स्वयं अपने ग़लती के कारण मन उलझता हुआ टिका नहीं सकेगा। अपने आप को, अपने आप सजा के भागी बनावेंगे। इसलिए यह सब होना ही है। इसके नालेजफुल बन घबराओ मत। समझा? मास्टर सर्वशक्तिवान घबराते नहीं हैं।

(03.05.1977)

लौकिक रीति से जीवन में बचपन का समय, स्टडी (पढ़ाई) का समय अपने प्रति होता है। उसके बाद रचना के प्रति समय होता है अर्थात् दूसरों के प्रति जिम्मेवारी का समय होता है। अलौकिक जीवन में भी पहले स्वयं को परिपक्व करने का पुरुषार्थ किया, अब विश्व-कल्याणकारी बन विश्व की आत्माओं के प्रति वा अपने निजी परिवार के प्रति। विश्व की सर्व आत्माएं आपका परिवार हैं, क्योंकि बेहद के बाप के बच्चे हो; तो बेहद के परिवार के हो। तो अपने परिवार प्रति रहम नहीं आता? तो अभी रहम दिल बनो। मास्टर रचता बनो। स्वयं कल्याणकारी नहीं, लेकिन साथ-साथ 'विश्वकल्याणकारी' बनो। अपने जमा की हुई शक्तियों वा ज्ञान के खज़ाने को मास्टर ज्ञान-सूर्य बन, वृत्ति, दृष्टि और स्मृति के अर्थात् शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प द्वारा, अपने जीवन में गुणों की धारणाओं द्वारा, इन सब साधनों की किरणों द्वारा अशान्ति को मिटाओ। जैसे सूर्य एक स्थान पर होते हुए भी अपने किरणों द्वारा चारों ओर का अन्धकार दूर करता है, ऐसे मास्टर ज्ञान-सूर्य बन दुःखी आत्माओं पर रहम करो।

'बाप समान सर्व शक्तियों का अधिकारी मास्टर सर्व-शक्तिवान हूँ', इस स्मृति को बार-बार रिवाइज़ और रियलाइज करो, फिर 'सदा मास्टर सर्व-शक्तिवान अनुभव करेंगे।' तीव्र पुरुषार्थी कभी भी किसी कारण से थकेंगे नहीं। कारण को निवारण का रूप देते हुए आगे चलते जायेंगे। बहुत लक्की हो, जो ब्राह्मण परिवार में ब्राह्मण बनने की लाटरी मिली है। कोटों में कोऊ को यह लॉटरी मिलती है। कुछ भी हो, क्या भी सामने आये, लेकिन रुकना नहीं है, हटना नहीं है, मंजिल को पाना ही है, इस 'एक बल एक भरोसे' के आधार पर अवश्य पहूँचेंगे। गैरन्टी है। 'दृढ़ संकल्प बच्चों का और पहुँचाना बाप का काम'।

(05.05.1977)

जब तक स्वयं परिवर्तन करने की शक्ति में समर्थ नहीं होंगे, तो विश्व को भी परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। तो स्वयं को देखो कि अब कहाँ तक परिवर्तन हुआ है। संकल्प में, वाणी में, कर्म में कितने परसैन्ट में 'लौकिक से अलौकिक' हुए हैं। परिवर्तन है ही - 'लौकिक से अलौकिक' होना। तो यह शक्ति अनुभव होती है? किसी भी लौकिक वस्तु वा व्यक्ति को देखते हुए अलौकिक स्वरूप में परिवर्तन करना आता है? दृष्टि को, वृत्ति को, वायब्रेशन्स को, वायुमण्डल को लौकिक से अलौकिक बनाने का अभ्यास है? जब ब्राह्मणों का जन्म ही अलौकिक है तो ऐसा अलौकिक जन्म, अलौकिक बाप, अलौकिक परिवार, वैसे ही कर्म भी अलौकिक है? ब्राह्मण जीवन का विशेष कर्म ही है - लौकिक को अलौकिक बनाना। अपने जन्म के कर्म का अटेन्शन रहता है? सिर्फ यह लौकिक को अलौकिक बनाने का पुरुषार्थ ही सर्व समस्याओं से, सर्व कमज़ोरियों से मुक्त कर सकता है।

पहला पाठ आत्मिक स्मृति का पक्का करो। आत्मा इस शरीर द्वारा किसको देखेगी? आत्मा-आत्मा को देखेगी न कि शरीर को, आत्मा कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कर रही है। तो अन्य आत्माओं का भी कर्म देखते हुए यह स्मृति रहेगी कि यह भी आत्मा कर्म कर रही है। ऐसे अलौकिक दृष्टि - जिसको देखो आत्मा

रहा है - करेंगे? करेंगे, हाथ उठाओ। कुछ भी हो जाए, बदलना पड़े, समाना पड़े, किनारा करना पड़े, लेकिन बदलेंगे। हाथ उठाया। पक्का? कि कहेंगे मैंने बहुत कोशिश की, नहीं हुआ, यह जवाब नहीं देना क्योंकि अभी अचानक के खेल बहुत होने हैं। और बापदादा चाहता है एक बच्चा भी पीछे नहीं रह जाए, साथ चले। इसलिए एक तो अगर कोई नहीं बदलता है, शुभ भावना रखी और कोई नहीं बदलता है तो आप अपने को बदलो, उसने यह कहा, उसने यह किया इसीलिए मुझे भी करना पड़ा, यह नहीं। करते सिखाने के भाव से हो, लेकिन देखते कमी को हो। इसीलिए भाव और भावना आत्मिक भाव, शुभ भावना। और यह शब्द यह तो होता ही रहता है, यह तो करते ही हैं ना, चल ही रहा है ना तो मैंने किया तो क्या हुआ... तो क्या बाप जब चलेंगे तो आप कहेंगे यह भी रह रहे हैं ना, मैं भी रह जाता हूँ, इसमें क्या है। तो सी फादर, और भाव और भावना दोनों का परिवर्तन। जब 5 तत्वों के प्रति आप शुभ भावना रखते हो और ब्राह्मण परिवार के प्रति शुभ भावना नहीं रख सकते, यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है, यह शब्द समाप्त करो। मुझे बदलके दिखाना है। मैं बदलूंगा, और भी बदलेगा, अवश्य बदलेगा। इस निश्चय और शुभ भावना से चलो फिर देखो जल्दी जल्दी अपना राज्य आ जायेगा। तो यह 18 तारीख को दो बातें सदा के लिए धारण कर ली, यह बापदादा नहीं कहता है कि लिखकर सिर्फ भेजो, प्रतिज्ञा करने की फाइल लिखत वाले बापदादा के पास बहुत फाइल पड़े हैं वतन में। प्रतिज्ञा नहीं, दृढ़ता का संकल्प के रूप में यह दो बातें धारण करनी है।

(15.12.2008)

कोई भी मुश्किल आवे दिल से ऑर्डर करो मेरा बाबा, बाप अवश्य बंधा हुआ है लेकिन दिल में और बातें नहीं रखना, मेरा बाबा भी कहो और दिल में कमजोरी भी हो तो बाप सहयोग नहीं देगा। दिल साफ मुराद हाँसिल। किचड़े वाली दिल में बाप नहीं आता। और स्नेह से याद करो। सिर्फ ज्ञान के आधार से याद नहीं

सतयुग में भी छोटा परिवार होगा। अभी कितनी संख्या आई है? (17,500 भाई-बहनें आये हैं, उसमें 500 बच्चे हैं) 500 बच्चे आये हैं तो कितने तकदीरवान हैं। इतने हजारों का परिवार न सतयुग में मिलेगा, न त्रेता में मिलेगा, न द्वापर, कलियुग में मिलेगा। ऐसा एक परिवार 17 हजार का परिवार, कभी सुना है! सम्भालना ही मुश्किल हो जाए। लेकिन यहाँ देखो सभी मजे मजे से रह रहे हैं। तो कितना फायदा है। परिवार से मिलना कब नहीं होता है। और यह तो विशेष भगवान का परिवार है।

(18.03.2008)

आप सभी भी मन वचन कर्म, वृत्ति दृष्टि द्वारा पवित्रता का अनुभव कर रहे हो ना! पवित्रता की वृत्ति अर्थात् हर एक आत्मा प्रति शुभ भावना, शुभ कामना। दृष्टि, हर एक आत्मा को आत्मिक स्वरूप में देखना, स्वयं को भी सहज सदा आत्मिक स्थिति में अनुभव करना। ब्राह्मण जीवन का महत्व मन वचन कर्म की पवित्रता है। पवित्रता नहीं तो ब्राह्मण जीवन का जो गायन है सदा पवित्रता के बल से स्वयं भी स्वयं को दुआ देते हैं, क्या दुआ देते? पवित्रता द्वारा सदा स्वयं को भी खुश अनुभव करते और दूसरों को भी खुशी देते। पवित्र आत्मा को तीन विशेष वरदान मिलते हैं - एक स्वयं स्वयं को वरदान देता, जो सहज बाप का प्यारा बन जाता। 2-वरदाता बाप का नियरेस्ट और डियरेस्ट बच्चा बन जाता इसलिए बाप की दुआयें स्वत: प्राप्त होती हैं और सदा प्राप्त होती हैं। तीसरा - जो भी ब्राह्मण परिवार के विशेष निमित्त बने हुए हैं, उन्हों द्वारा भी दुआयें मिलती रहती। तीनों की दुआओं से सदा उड़ता रहता और उड़ाता रहता। तो आप सभी भी अपने से पूछो, अपने को चेक करो तो पवित्रता का बल और पवित्रता का फल सदा अनुभव करते हो? सदा रूहानी नशा, दिल में फलक रहती है?

(30.11.2008)

अभी एक बात 18 जनवरी तक बापदादा पुरुषार्थ के लिए होमवर्क दे

रूप में देखो। इस अभ्यास की कमी होने के कारण का पाठ पक्का नहीं किया। लेकिन औरों को पाठ पढ़ाने लग गए। इस कारण स्वयं प्रति अटेंशन कम रहता, दूसरों के प्रति अटेंशन ज्यादा रहता है। स्वयं को देखने के कारण दूसरों को देखते हुए अलौकिक के बजाए लौकिक रूप दिखाई दे देता है। अपनी कमज़ोरियों को कम देखते हुए, दूसरों की कमज़ोरियों को ज्यादा देखते हैं। अलौकिक वृत्ति द्वारा हरेक से शुभ भावना, कल्याण की भावना से सम्पर्क में आना - इसको कहा जाता है अलौकिक जीवन की अलौकिक वृत्ति। लेकिन अलौकिक वृत्ति के बजाए लौकिक वृत्ति, अवगुण धारण करने की वृत्ति, ईर्ष्या और घृणा की वृत्ति धारण करने से अलौकिक जीवन के अलौकिक परिवार द्वारा अलौकिक सहयोग की खुशी, अलौकिक स्नेह की प्राप्ति की शक्ति प्राप्त नहीं कर पाते। इस कारण लौकिक वृत्ति को भी अलौकिक वृत्ति में परिवर्तन करो। तो पुरुषार्थ में कमज़ोर रहने का कारण? लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करना नहीं आता। लौकिक सम्बन्ध में भी अलौकिक सम्बन्ध - 'रूहानी भाई-बहन की स्मृति में रखो'। किसी भी सम्बन्ध की तरफ लौकिक सम्बन्ध की आकर्षण आकर्षित करती है, अर्थात् मोह की दृष्टि जाती है, तो लौकिक सम्बन्ध के अन्तर में बाप से सर्व अविनाशी सम्बन्ध की स्मृति की वा बाप के सर्व सम्बन्धों के अनुभव की नॉलेज कम होने के कारण, लौकिक सम्बन्ध तरफ बुद्धि भटकती है। तो सर्व सम्बन्धों के अनुभवी मूर्त बनो, तो लौकिक सम्बन्ध की तरफ आकर्षण नहीं होगी। उठते-बैठते लौकिक और अलौकिक के अन्तर को स्मृति में रखो तो लौकिक से अलौकिक हो जायेंगे। फिर यह कम्पलेन्ट समाप्त हो जाएगी। बार-बार एक ही कम्पलेन्ट करना क्या सिद्ध करता है? अलौकिक जीवन का अनुभव नहीं। तो अभी स्वयं को परिवर्तन करते हुए विश्व-परिवर्तक बनो। समझा? छोटी सी बात समझ में नहीं आती? ठेका तो बहुत बड़ा लिया है। दुनिया को चैलेन्ज तो बहुत बड़ी की है। चैलेन्ज करते हो ना कि सेकेण्ड में मुक्ति-जीवन्मुक्ति देंगे! निमंत्रण में क्या लिखते हो? एक सेकेण्ड में बाप से वर्सा आकर प्राप्त करो, वा मुक्ति-जीवन्मुक्ति के

अधिकारी बनो। तो दुनिया को चैलेन्ज करने वाले अपने वृत्ति, दृष्टि को चेन्ज नहीं कर सकते? स्वयं को भी चैलेन्ज दो कि परिवर्तन करके ही छोड़ेंगे। अर्थात् विजयी बनकर ही दिखायेंगे। अच्छा।

नष्टोमोहा बनने की सहज युक्ति कौनसी है? सदैव अपने घर की स्मृति में रहो। आत्मा के नाते, आपका घर 'परमधाम' है और ब्राह्मण जीवन के नाते, साकार सृष्टि वृक्ष में यह 'मधुबन' आपका घर है, क्योंकि ब्रह्मा बाप का घर मधुबन है। यह दोनों ही घर स्मृति में रहे, तो नष्टोमोहा हो जायेंगे। क्योंकि जब अपना परिवार, अपना घर कोई बना लेते तो उसमें मोह जाता, अगर उसको दफ्तर समझो तो मोह नहीं जाएगा।

सदैव बुद्धि में रहे, सेवा स्थान पर सेवा के निमित्त रूप आत्माएं हैं - न कि मेरा कोई लौकिक परिवार है। सब अलौकिक सेवाधारी हैं; कोई सेवा करने के निमित्त हैं, कोई की सेवा करनी है। लौकिक सम्बन्ध भी सेवा के अर्थ मिला है - 'यह मेरा लड़का या लड़की है' नहीं। सेवा के निमित्त यह सम्बन्ध मिला है। मैं पति हूँ, पिता हूँ, चाचा हूँ - यह सम्बन्ध समाप्त हो जाए, तो ट्रस्टी हो जायेंगे। स्मृति विस्मृति का रूप तब लेती जब मेरापन है। अगर मेरापन खत्म हो जाए, तो नष्टोमोहा हो जाएंगे। 'नष्टोमोहा अर्थात् स्मृति स्वरूप'।

(05.06.1977)

जैसे आजकल की गवर्नमेंट भी बचत की स्कीम बनाती है। वैसे अपने प्रति आवश्यक समय वा शक्तियों में से एकानामी (बचत) का लक्ष्य रखते हुए बचत करनी चाहिए। क्योंकि विश्व की सर्व आत्माएं आप श्रेष्ठ आत्माओं का परिवार है। जितना बड़ा परिवार होता है उतना ही एकानामी का ख्याल रखा जाता है।

आप जैसा बड़ा परिवार और किसका है? तो सब आत्माओं को सामने रखते हुए, स्वयं को बेहद की सेवा अर्थ निमित्त समझते हुए, अपने समय और

वह अनुभव अपना है लेकिन मधुबन निवासी बनना यह गोल्डन चांस बहुत सहयोग देता है।

(18.01.2007)

मुबारक हो हिम्मत की। और हिम्मत है तो बाप की तो मदद है ही लेकिन सर्व ब्राह्मण परिवार की भी शुभ भावना, शुभ कामना आप सबके साथ है। इसलिए जो भी नये पहले बारी आये हैं उन सबके प्रति बापदादा और परिवार की तरफ से दुबारा पदमगुणा बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो। आप सभी जो पहले आने वाले हैं उन्हों को भी खुशी हो रही है ना! बिछुड़ी हुई आत्मायें फिर से अपने परिवार में पहुंच गये हैं। तो बापदादा भी खुश हो रहे हैं और आप सब भी खुश हो रहे हैं।

(30.11.2007)

बाप का रंग लगाना है अर्थात् समान बनना है। तो कम्बाइण्ड हैं ना कि कभी-कभी हैं! कई बच्चे देखा है पुरुषार्थ करके थोड़े कमजोर हो जाते हैं ना तो अकेलापन पसन्द करते हैं, कोई को साथ नहीं पसन्द करते, अकेला रहना, अकेला सोचना, यह अकेलापन भी नहीं ठीक, प्रभू परिवार है। इतने प्रभु परिवार के साथी अकेले कैसे होंगे! यह माया की चालाकी हैं। पहले अकेला कर देती फिर वार करती। माला में देखो अकेला मोती है? माला में विशेषता क्या है? एक मोती का दूसरे मोती से समीप का सम्बन्ध है, जरा भी बीच में धागा नहीं दिखता है। स्नेही, सहयोगी, साथी यही आपका यादगार है।

एक है यज्ञ सेवा का और दूसरा यज्ञ सेवा का पुण्य तो बहुत बड़ा है। एक का लाख गुणा फल मिलता है। यज्ञ की महिमा कम नहीं है। तो जो भी आते हैं उनको बहुत फायदे हैं। एक यज्ञ सेवा का पुण्य जमा होता है और दूसरा इतनी श्रेष्ठ आत्मायें मधुबन में ही इकट्ठी मिलती हैं। चाहे पाण्डव हैं, चाहे दादियां हैं, चाहे महारथी बहन-भाई हैं और साथ में इतना बेहद का परिवार कहाँ मिलेगा आपको।

हजार भी हों तो भी देंगे, तैयार करायेंगे सौगात। करेंगी ना? लेकिन सर्टीफिकेट लेंगे, ऐसे नहीं आप कहेंगे बाबा मान जायेगा, नहीं। साथियों से सर्टीफिकेट भी लेंगे। पहले मन का सर्टीफिकेट फिर ब्राह्मण परिवार के साथियों का सर्टीफिकेट और तीसरा है बाप का सर्टीफिकेट। तो लेंगे ना सर्टीफिकेट। हिम्मत है ना! जो समझते हैं हम सर्टीफिकेट लेकर ही छोड़ेंगे, दृढ़ निश्चय है।

(31.12.2005)

(आज सभा में 21 हजार भाई बहिनें हैं) इतना बड़ा परिवार देखकर सभी खुश होते हैं। अच्छा है, कल्प में एक बारी ही पहचान से मिलते हो। 5 हजार वर्ष के बाद आपस में मिले हैं और हर कल्प मिलते रहेंगे। मौज ही मौज है ना। कितनी मौज की जीवन जी रहे हो! आप जैसा मौज की जीवन बिताने वाला और कोई नहीं। मौजों का युग है। मौज की जीवन है और सदा सभी को मौज का अनुभव कराने वाले हो।

(14.03.2006)

चारों ओर के पत्र, याद-पत्र, ईमेल, फोन, चारों ओर के बहुत-बहुत आये हैं, यहाँ मधुबन में भी आये हैं तो वतन में भी पहुँचे हैं। आज के दिन जो बंधन वाली मातायें हैं, उन्हों की भी बहुत स्नेह भरी मन की यादें बापदादा के पास पहुँच गई हैं। बापदाद ऐसे स्नेही बच्चों को बहुत याद भी करते और दुआयें भी देते हैं। आजकल बापदादा देख रहे हैं सब बहुत खुशी-खुशी से दूर बैठे भी नजदीक में अनुभव कर रहे हैं। लेकिन मधुबन में सम्मुख आना, अपनी झोली भरना, इतने बड़े परिवार से मिलना, यह परिवार कम नहीं है, किसी भी रीति से देख लिया लेकिन सम्मुख परिवार को देख कितनी खुशी होती है क्योंकि 5 हजार वर्ष के बाद मिले हैं। तो

शक्तियों को कार्य में लगाते हो? मास्टर रचता की स्थिति स्मृति में रहती है वा अपने प्रति ही कमाया और खाया, वा कुछ खाया, कुछ गंवाया, ऐसे अलबेले हो चल रहे हो? तो अपने सर्व खजानों की बजट बनाओ। इतनी बड़ी जिम्मेवारी का कार्य उठाने वाली आत्माएं अगर जमा न होगा तो कार्य कैसे सफल कर सकेंगी। ड्रामानुसार होना ही है - यह हुई नॉलेज की बात। लेकिन ड्रामा में मुझे भी निमित्त बन सेवा द्वारा श्रेष्ठ प्राप्ति करनी है, यह लक्ष्य रखते हुए हर खजाने की 'बजट' बनाओ।

(28.06.1977)

अपनी सर्व श्रेष्ठ अथार्टीज को, कौनसी अथार्टी? साकारी कर्मेन्द्रियाँ अर्थात् कर्मचारी और साथ-साथ अपनी सूक्ष्म शक्तियाँ मन, बुद्धि, संस्कार अर्थात् कार्य कलाओं को यथार्थ रीति से चलाने की अथार्टी। ऐसी अथार्टी धारण की है? मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर आलमाइटी अथार्टी होकर अपने कर्मेन्द्रियों को चलाते हो वा ब्राह्मण परिवार के ही सहयोगी कार्यकर्त्ताओं अर्थात् मददगार आत्माओं वा सर्विस साथियों के ऊपर अथार्टी चलाते हो? ब्राह्मण आत्माओं के सम्पर्क में स्नेह और सहयोग की भावना रखनी है, न कि अथार्टी यूज करनी है। और कर्मेन्द्रियों के ऊपर सूक्ष्म शक्तियों के ऊपर अथार्टी चलानी है। उसमें कभी भी अधीन होना कि - मेरे स्वभाव, संस्कार ऐसे हैं, आलमाईटी अथार्टी के यह बोल नहीं हैं। जो स्वयं के ऊपर अथार्टी नहीं चलाते तो अथार्टी को मिस यूज (दुरूपयोग) करते हैं। तो अथार्टी को मिस यूज मत करो।

(30.06.1977)

बाप जानते हैं कि मेरे ही कल्प पहले वाले बच्चे जो दूर-दूर इन व्यक्त देशों में भिन्न नाम, रूप, धर्म में चले गये थे वे फिर से अपने बिछड़े हुए बाप व परिवार से मिलने अपने असली स्थान पर आ पहुँचे हैं। ऐसे अनुभव होता है?

जितनी आप लोगों को बाप के पाने की व अपने परिवार को पाने की खुशी है, उससे ज़्यादा बाप को खुशी है। क्योंकि बाप जानते हैं कि बच्चे ही घर का श्रृंगार हैं। जैसे श्रृंगार के बिना कोई भी व्यक्ति या स्थान अच्छा नहीं लगता ऐसे ही बाप को भी बच्चों के श्रृंगार के बिना अच्छा नहीं लगता।

(07.01.1978)

अष्ट रत्नों की विशेषता एक विशेष बात से है। अष्ट रतन प्रैक्टिकल में जैसे यादगार हैं विशेष तो जो अष्ट शक्तियाँ हैं वह हर शक्ति उनके जीवन में प्रैक्टिकल दिखाई देगी। अगर एक शक्ति भी प्रैक्टीकल जीवन में कम दिखाई देती तो जैसे अगर मूर्ति की एक भुजा खण्डित हो तो पूज्यनीय नहीं होती इसी प्रकार से अगर एक शक्ति की भी कमी दिखाई देती तो अष्ट देवताओं की लिस्ट में अब तक फिक्स नहीं कहे जायेंगे। दूसरी बात अष्ट देवताएं भक्तों के लिए विशेष इष्ट माने जाते हैं। इष्ट अर्थात् महान पूज्य। इष्ट द्वारा हर भक्त को हर प्रकार की विधि और सिद्धि प्राप्त होती है। यहाँ भी जो अष्ट रतन होंगे वह सर्व ब्राह्मण परिवार के आगे अब भी इष्ट अर्थात् हर संकल्प और चलन द्वारा विधि और सिद्धि का मार्ग दर्शन करने वाले सबके सामने अब भी ऐसे ही महानमूर्त्त माने जायेंगे। तो अष्ट शक्तियाँ भी होंगी और परिवार के सामने इष्ट अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा, महान आत्मा, वरदानी आत्मा के रूप में होंगे। यह है अष्ट रतनों की विशेषता।

(13.01.1978)

सदा एक ही लगन रहती है? अपनी हमजिन्स को जगाने की। अपने बिछुड़े हुए परिवार की माला में पिरोयें यही लगन रहती है? इसके सिवाए और जो कुछ भी करते वो निमित्त मात्र। लौकिक में रहते न्यारे और प्यारे बनना है। बनाना है ब्राह्मणों से और चुक्तू करना है अज्ञानी आत्माओं से, सम्पर्क सम्बन्ध से बिल्कुल पानी से ऊपर, कीचड़ से ऊपर कमल समान रहना है। ऐसी स्थिति रहती

फरिश्ता अर्थात् जो सर्व का, थोड़ों का नहीं, सर्व का प्यारा और न्यारा हो। सिर्फ प्यारा नहीं, जितना प्यारा उतना ही न्यारा हो। फरिश्ता की निशानी है, वह सर्व का प्रिय होगा, जो भी देखेंगे जो भी मिलेंगे जो भी संबंध में आयेंगे, सम्पर्क में आयेंगे वह अनुभव करेंगे कि यह मेरा है। जैसे बाप के लिए सभी अनुभव करते हैं, मेरा है। अनुभव करते हैं ना? ऐसे फरिश्ता अर्थात् हर एक अनुभव करे यह मेरा है। अपना पन का अनुभव हो क्योंकि हल्का होगा ना तो हल्कापन प्रिय बना देता है सबका। सारा ब्राह्मण परिवार अनुभव करे कि यह मेरा है। भारीपन नहीं हो क्योंकि फरिश्ते का अर्थ ही है ड़बल लाइट। फरिश्ता अर्थात् संकल्प, बोल, कर्म, संबंध, सम्पर्क में बेहद हो। हद नहीं हो। सब अपने हैं और मैं सबका हूँ। जहाँ ज्यादा अपनापन होता है ना वहाँ हल्कापन होता है। संस्कार में भी हल्कापन, तो चेक करो कितना परसेन्ट फरिश्ता स्टेज तक पहुंचे हैं? चेक करना आता है? चेकर भी बन गये हो, मेकर भी बन गये हो। मुबारक हो।

(21.10.2005)

बापदादा बहुत सहज रास्ता बताते हैं, किसी से भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक पहले अपने शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति को चेक करो और किससे भी मिलते हो, तो सदा आत्मा को देख करके बात करो, आत्मा से बात करते हैं, कोई अलौकिक परिवार से बात करते हो, खुशी होनी चाहिए यह कल्प पहले वाली, हर कल्प भाग्य बनाने वाली कोटों में कोई आत्मा है। उस भाव से देखो। चाहे प्यादा हो, लेकिन है तो कोटों में कोई। मेरा बाबा तो कहता है। चाहे क्रोधी भी हो, स्वभाव अच्छा नहीं हो, लेकिन आप अपना स्वभाव श्रेष्ठ रखो। आप श्रेष्ठ आत्मा के रूप में देखो, श्रेष्ठ आत्मा के स्वरूप में देखो। तभी कार्य अच्छा होगा, जमा होगा। तो होमवर्क बहुत मिला है इस वर्ष का। सभी पूछते हैं ना क्या करें, क्या करें, क्या करें। बहुत होम वर्क मिला है। फिर बापदादा नम्बरवन सब होम वर्क में पास उसको सौगात देंगे। चाहे

समय तो साधारण लगता है लेकिन दुआओं का खजाना समय पर बहुत बल देता है।

(31.12.1999)

आप सबको भी खुशी होती है ना! अगर आपके परिवार में वृद्धि होती है तो खुश होते हो ना! और सब यही चाहते हैं कि जल्दी-जल्दी वृद्धि हो जाए। तो महाराष्ट्र वृद्धि कर रहा है और सभी ज़ोन भी ऐसे वृद्धि कर जल्दी-जल्दी सम्पन्न बन, सम्पूर्ण बन बाप के साथ चल सकेंगे। साथ चलना है, यह भूलना नहीं। बापदादा ने पहले भी कहा है कि प्यार से नहीं चलेंगे तो जबरदस्ती भी ले चलेंगे! साथ नहीं चलेंगे तो पीछे-पीछे भी लेके चलेंगे। लेकिन मजा नहीं होगा। अच्छा।

(15.02.2000)

यह भी एक ब्राह्मण परिवार का कल्चर है। आजकल आप लोग 'कल्चर आफ पीस' का प्रोग्राम बना रहे हो ना। तो यह भी फर्स्ट नम्बर का कल्चर है - 'ब्राह्मण कुल की सभ्यता'। बापदादा ने देखा है, यह दादी जब सौगात देती है ना। उसमें एक बोरी का थैला होता है। उसमें लिखत होती है - 'कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो'। तो आज बापदादा यह सौगात दे रहे हैं, बोरी वाला थैला नहीं देते, वरदान में यह शब्द देते हैं। हर एक ब्राह्मण के चेहरे और चलन में ब्राह्मण कल्चर प्रत्यक्ष हो। प्रोग्राम तो बनायेंगे, भाषण भी करेंगे लेकिन पहले स्व में यह सभ्यता आवश्यक है। हर एक ब्राह्मण मुस्कराता हुआ हर एक से सम्पर्क में आये। कोई से कैसा, कोई से कैसा नहीं। किसको देखकर अपना कल्चर नहीं छोड़ो। बीती बातें भूल जाओ। नये संस्कार सभ्यता के जीवन में दिखाओ। अभी दिखाना है, ठीक है ना! (सभी ने कहा-हाँ जी)

(03.03.2000)

है कि थोड़ा सा मोह है? नष्टोमोहा बनने का तरीका है अपनी जिम्मेवारी नहीं समझो, ज़िम्मेवारी समझते तो मोह हो जाता, ज़िम्मेवारी छोड़ना अर्थात् नष्टोमोहा। खुद स्वयं को बच्चा समझो, बड़ा नहीं। बच्चा समझना अर्थात् नष्टोमोहा होना। बड़ा समझते तो बाप भूल जाता। बच्चा समझने से बाप की याद स्वत: आयेगी।

(14.02.1978)

आज बाप-दादा बच्चों के इस रजिस्टर को देख रहे थे कि कितने बच्चे सदा ब्रह्मचारी हैं और कितने ब्रह्मा चारी हैं। बाल ब्रह्मचारी का महत्त्व होता है, बाल ब्रह्मचारी वर्तमान समय भी पूज्य है अर्थात् श्रेष्ठ हैं। बाप-दादा भी ऐसे बच्चों को पूज्य बच्चों के रूप में देखते हैं। विश्व के आगे भी अभी अन्त में पूज्य के रूप में प्रत्यक्ष होंगे। बाप के आगे पूज्य प्रसिद्ध होने वाले सदा समीप सम्बन्ध में रहते हैं। ऐसे अपना रजिस्टर देखना। दूसरी बात - परउपकारी इसका भी विस्तार बहुत गुह्य है। इसका विस्तार स्वयं सोचना। विश्व के प्रति और ब्राह्मण परिवार के प्रति दोनों सम्बन्ध में सदा उपकारी बने हैं वा कब स्वउपकारी वा कब परउपकारी। वास्तव में परउपकार स्वउपकार है। इसी रीति से इस बात में भी अपना रजिस्टर चैक करना फिर बाप-दादा भी सुनायेंगे। समझा।

(07.12.1978)

ईश्वरीय परिवार में आई हुई आत्मा में कोई विशेषता न हो यह हो नहीं सकता। तो अपनी विशेषता को जान उसको कर्म में लगाओ। जो भी गुण अथवा विशेषता हो चाहे कर्मणा का गुण हो चाहे मधुरता का गुण हो - स्नेह का हो उसको कार्य में लगाओ। जैसे लोहा पारस से लग पारस बन जाता है वैसे एक गुण या विशेषता सेवा में लगाने से सेवा का फल एक का लाख गुणा मिलने से वह एक विशेषता अनेक समय का फल देने के लायक बन जाती। जैसे एक बीज डालने से कितने फल निकलते वैसे एक भी विशेषता कर्म में लगाना अर्थात् धरनी में बीज

डालना है। तो समझे कितने खुशनसीब हो ! ब्राह्मण परिवार में जन्म हुआ है तो जन्म के साथ कोई न कोई विशेषता की तकदीर साथ लेकर ही आये हैं। सिर्फ अन्तर यह हो जाता कि उसको कार्य में कहाँ तक लगाते हैं। जन्म का भाग्य है लेकिन भाग्य को कर्म या सेवा में लगाने से अनेक समय के भाग्य का फल निकालना, बीज बोने का यह तरीका आना चाहिए। फल तो अवश्य निकलेगा। बीज बोना अर्थात् विशेषता रूपी बीज को सेवा में लगाना।

(10.12.1978)

जब आपके जड़ चित्र अभी तक अनेक आत्माओं की अल्पकाल की मनोकामनायें पूर्ण कर रहे हैं - तो चैतन्य रूप में अगर कोई आपके सहयोगी भाई वा बहन परिवार की आत्मायें, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान देकर के स्वयं निर्माण बनना यही परोपकार है। यह देना ही सदा के लिए लेना है। जैसे अनजान बच्चा नुकसान वाली चीज़ को भी खिलौना समझता है तो उनको कुछ देकर छुड़ाना होता है - हठ से सदाकाल का नुकसान हो जाता है - ऐसे बेसमझ आत्मायें भी उसी समय अल्पकाल की प्राप्ति को अर्थात् सदा के नुकसानकारी बातों को अपने कल्याण का साधन समझती हैं। ऐसी आत्माओं को ज़बरदस्ती इन बातों से हटाने से कशमकश में आकर उनके पुरुषार्थ की ज़िन्दगी खत्म हो जाती है। इसलिये कुछ देकर के सदा के लिये छुड़ाना ऐसे युक्ति-युक्त चलन से स्वत:ही अल्पकाल की भिखारी आत्मा बेसमझ से समझदार बन जावेगी। स्वयं महसूस करेंगे कि यह अल्पकाल के साधन हैं। ऐसी बेसमझ आत्माओं के ऊपर भी परोपकारी। ऐसे परोपकारी स्वत: ही स्वयं उपकारी हो जाते हैं - देना ही स्वयं प्रति मिलना हो जाता। महादानी ही सर्व अधिकारी स्वत: हो जाते। समझा - परोपकारी की परिभाषा क्या है।

(12.12.1978)

खजाने को चेक करो क्योंकि हर खजाने का खाता जमा करना है। इन सर्व खजानों का खाता भरपूर हो तब कहेंगे फुल मार्क्स अर्थात पास विद ऑनर। ऐसे नहीं सोचना - एक खजाना अगर कम जमा है तो क्या हर्जा है लेकिन पास विद ऑनर बनने के लिए सर्व खजानों में खाता भरपूर हो।

(30.11.1999)

डबल विदेशी:- जैसे भारत हर टर्न में आता है, फारेन वाले भी कम नहीं हैं। हर टर्न में अपना अधिकार ले लेते हैं। अच्छा है, बापदादा सदा कहते हैं कि फारेनर्स इस जन्म के फारेनर्स हैं लेकिन अनेक जन्म के ब्राह्मण परिवार के हैं। अगर आप लोग विदेशी नहीं बनते तो विदेश के भिन्न-भिन्न देशों की सेवा कैसे होती! अगर आप विदेश के रूप में नहीं आते तो बापदादा को सब देशों की भाषा के यहाँ क्लास रखने पड़ते, तैयार करने पड़ते। तो आप लोग जो भिन्न-भिन्न देश में गये हो, वह सेवा के प्रति गये हो। समझा। ओरीजिनल आप ब्राह्मण आत्मायें हो, विदेशी आत्मायें नहीं हो। भिन्न-भिन्न विश्व की सेवा के लिए गये हो, देखो भारत में भी हर भाषा के बच्चे आये हैं और सेवा कर रहे हैं, नहीं तो पहले एक ही सिन्ध का ग्रुप था। फिर धीरे-धीरे भिन्न-भिन्न ग्रुप चाहे भारत के, चाहे विदेश के आते रहे और बढ़ते रहे, यह भी ड्रामा में बना हुआ खेल है। वैसे भी पहले जड़ में थोड़े होते हैं फिर धीरे-धीरे तना और शाखायें निकलती हैं। वह फाउन्डेशन बना - निमित्त सिन्ध देश का, फिर धीरे-धीरे वृक्ष बढ़ता गया। भाषायें और देश की शाखायें, आप शाखाओं में नहीं हो, आप तो बापदादा के साथ हो।

(दिल्ली ग्रुप सेवा में आया है) - दिल्ली वाले हाथ उठाओ। सेवा की सेवा और वैरायटी मेवा भी खाया ना! सेवा का मेवा अवश्य मिलता है। जो भी सेवा में आते हैं उनको सबसे अच्छा चांस क्या मिलता है, मालूम है? इतने बड़े परिवार की सेवा करते हैं तो सबसे पहले बापदादा की दुआयें हैं ही लेकिन इतने सारे परिवार के आत्माओं की दुआयें मिलती हैं और यह दुआयें बहुत काम में आती हैं। इस

सदा अपने तकदीर की तस्वीर देख वाह-वाह का गीत गाओ। वाह मेरी तकदीर! वाह मेरा बाबा! वाह मेरा परिवार! परिवार भी वाह-वाह है! ऐसे नहीं यह तो बहुत वाह-वाह है, यह थोड़ा ऐसा है! नहीं। वाह मेरा परिवार! वाह मेरा भाग्य! और वाह मेरा बाबा! ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह! हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह! यह भी बोझ उतरता है। अगर 10 मण से आपका 3-4 मण बोझ उतर जाए तो अच्छा है या हाय-हाय? क्या है? वाह बोझ उतरा! हाय मेरा पार्ट ही ऐसा है! हाय मेरे को व्याधि छोड़ती ही नहीं है! आप छोड़ो या व्याधि छोड़ेगी? वाह-वाह करते जाओ तो वाह-वाह करने से व्याधि भी खुश हो जायेगी। देखो, यहाँ भी ऐसे होता है ना, किसकी महिमा करते हो तो वाह-वाह करते हैं। तो व्याधि को भी वाह-वाह कहो। हाय यह मेरे पास ही क्यों आई, मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है। प्राप्तियां सामने रखो और हिसाब-किताब सामने रखो, तो वह क्या लगेगा? बहुत छोटी सी चीज़ लगेगी। मतलब तो ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाए, पॉजिटिव रूप में देखो। निगेटिव से पॉजिटिव करना तो आता है ना। निगेटिव पॉजिटिव का कोर्स भी तो कराते हो ना! तो उस समय अपने आपको कोर्स कराओ तो मुश्किल सहज हो जायेगा। मुश्किल शब्द ब्राह्मणों की डिक्शनरी में नहीं होना चाहिए। अच्छा - कोई भी हिसाब है, आत्मा से है, शरीर से है या प्रकृति से है; क्योंकि प्रकृति के यह 5 तत्व भी कई बार मुश्किल का अनुभव कराते हैं। कोई भी हिसाब-किताब योग अग्नि में भस्म कर लो। समझा क्या करना है? जमा का खाता बढ़ाओ। बोल में भी साधारण बोल नहीं, बोल में भी भिन्न-भिन्न भाव और भावना होती है और बोल द्वारा भाव और भावना का पता पड़ जाता है। तो सदा जो भी बोल बोलो उसमें आत्मिक भाव हो और शुभ व श्रेष्ठ भावना हो। बोल भी और भावना भी। माया की जो भावना है वह है ईर्ष्या, हसद, घृणा... यह माया की भावना है। सदा शुभ भाव और भावना हो। ऐसा है? चेक करना। समय का खजाना, बोल का खजाना, संकल्पों का खजाना, शक्तियों का खजाना, ज्ञान का खजाना, गुणों का खजाना... एक-एक

रिकार्ड रखने के लिए पहली बात है - बाप में रिगार्ड - दूसरी बात...बाप द्वारा मिली हुई नालेज का रिगार्ड - तीसरी बात - स्वयं का रिगार्ड - चौथी बात - जो भी आत्मायें चाहे ब्राह्मण परिवार वा अन्य आत्मायें जो भी सम्पर्क में आती हैं उन आत्माओं के प्रति आत्मा का रिगार्ड। इन चारों ही बातों में अपने आपको चैक करो कि हमारा रिकार्ड कैसा रहा। चारों ही बातों में कितनी मार्क्स हैं! चारों ही बातों में सम्पन्न रहे हैं वा यथा शक्ति किस बात में मार्क्स अच्छी हैं और किसमें कम!

(25.01.1979)

विश्व कल्याणकारी अर्थात् रहमदिल आत्मायें ही कैसी भी अवगुण वाली आत्मा हो, कड़े संस्कार वाली आत्मा हो, कम बुद्धि वाली आत्मा हो, पत्थर बुद्धि हो, सदा ग्लानि करने वाली आत्मा हो, सर्व आत्माओं के प्रति कल्याणकारी अर्थात् लाफुल और लवफुल होंगे। लक्ष्य सभी का ऐसा ही है लेकिन करते क्या हैं? चलते-चलते रहम के बदले दो बातों में बदल जाते हैं। कोई रहम करने के बदले आत्माओं में वहम भाव पैदा कर देते हैं - यह कभी बदल नहीं सकते, यह हैं ही ऐसे, सब तो राजा बनने वाले नहीं हैं, इस प्रकार के अनेक वहम भाव रहम को खत्म कर देते हैं। दूसरी बात - रहम भाव के बदले अहम् भाव 'मैं ही सब कुछ हूँ - यह कुछ नहीं है। यह कुछ नहीं कर सकते मैं सब कुछ कर सकता हूँ'। इस प्रकार के अहम् भाव अर्थात् मैं-पन का अभिमान रहमदिल बनने नहीं देता। यह दोनों बातें बेहद के विश्व कल्याणकारी बना नहीं सकती। इसलिए स्व कल्याण वा देश कल्याण तक रह जाते हैं। विश्व कल्याणकारी बनने का सहज साधन जानते भी हो लेकिन समय पर भूल जाते हो। कैसी भी अवगुणधारी आत्मा हो - कैसी भी अज्ञानी पतित वा पुरूषार्थहीन आत्मा दोनों में से कोई भी हो अज्ञानी पतित आत्मा होगी और ब्राह्मण परिवार की पुरूषार्थहीन होगी - दोनों आत्माओं के प्रति विश्व कल्याणकारी अर्थात् बेहद की दाता आत्मा, विश्व परिवर्तन अधिकारी आत्मा

सदा उन आत्माओं की बुराई वा कमजोरियों को कल्याणकारी होने के नाते पहले क्षमा करेंगी। जैसे बेहद का बाप बच्चों को क्षमा करते हैं किस बात पर? बच्चों की बुराई वा कमजोरियों को दिल में न समाए क्षमा करते हैं, पूज्य देवता भक्तों पर क्षमा करते हैं। तो विश्व कल्याणकारी मास्टर रचता भी हैं, विश्व अधिकारी भी हैं अर्थात् छोटों के आगे बड़ा राजा के समान हैं, बाप के समान हैं, पूज्य आत्मा हैं, इन तीनों सम्बन्ध के आधार से बुराई वा कमजोरी दिल पर न रख क्षमा करेंगे। उसके बाद ऐसी आत्मा के कल्याण प्रति सदा हर आत्मा के वास्तविक स्वरूप ओर गुण को सामने रखते हुए महिमा करेंगे अर्थात् उस आत्मा को अपनी महानता की स्मृति दिलायेंगे। किसके बच्चे हो - किस कुल के हो! संगमयुग की विशेषता वा वरदान क्या है! बाप का कर्त्तव्य असम्भव को भी सम्भव करने का है, तुम आत्मा आदिकाल की राजवंशी हो, अब ब्रह्मावंशी हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो, इस प्रकार की महिमा करेंगे - जिससे वह आत्मा गुणों को सुनते हुए स्मृति और समर्थी में आये और कमजोरी को वा बुराई को मिटाने की हिम्मत में आये।

जैसे आज की दुनिया में राजपूत वंश वाले अपने वंश की स्मृति दिलाते तो कमजोर में भी हिम्मत आ जाती - ऐसे विश्व कल्याणकारी - कमजोर आत्मा को भी महिमा से महान बना देंगे। अर्थात् अपनी रहमदिल की शक्ति से स्वयं तो उसके अवगुण धारण नहीं करेंगे लेकिन उसको भी अपने अवगुण विस्मृत कराए समर्थ बना देंगे। ऐसे समर्थ धरनी बनाने के बाद ऐसी आत्मा प्रति थोड़ी-सी मेहनत करने से, वहम भाव और अहम् भाव न रखने से ऐसी आत्मा भी परिवर्तन हो जायेगी। कभी भी ब्राह्मण परिवार में कमजोर आत्मा को - 'तुम कमजोर हो, तुम कमजोर हो' नहीं कहना, नहीं तो जैसे शारिरिक कमजोर आत्मा अगर डाक्टर द्वारा सुने कि मैं तो करने वाली हूँ तो हार्टफेल हो जायेगा। ऐसे आप सब भी मास्टर अथार्टी हो, श्रेष्ठ आत्मायें हों, विश्व परिवर्तक हो, आप लोगों के मुख से सदेव हर आत्मा के प्रति शुभ बोल निकलने चाहिए, दिलशिकस्त बनाने वाले नहीं, दिलशिकस्त बनना भी हार्टफेल होना हैं। चाहे कितना भी कमजोर हो उसको ईशारा भी देना हो,

होगा, यह नहीं सोचो। ब्राह्मण आत्माओं के लिए अच्छा है, अच्छा ही होना है। लेकिन बैलेन्स वालों के लिए सदा अच्छा है। बैलेन्स कम तो कभी अच्छा, कभी थोड़ा अच्छा। सुना क्या करना है? क्वेश्चन मार्क सोचने के हिसाब से आश्चर्यवत होके सोचने को फिनिश करो, यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा....। वह स्थिति को नीचे ऊपर करता है। समझा।

(21.11.1998)

सभी बहुत-बहुत पुण्य का खाता जमा कर रहे हो। वैरायटी गुलदस्ता सबसे प्यारा लगता है। वैरायटी की सदा शोभा होती है, सुन्दरता होती है, इसलिए प्यारा लगता है। तो स्थान अनेक हैं लेकिन हैं सब एक। एक ही लक्ष्य है, एक ही मत है और एक ही बाप है, एक ही परिवार है और अवस्था भी एकरस। एकरस है ना? और रस में नहीं जाना, माया खा जायेगी। इसलिए एकरस रहना। माया को भी आपसे प्यार है ना। 63 जन्मों का प्यार है। लेकिन आप जानते हो कि माया से प्यार रखना है या बाप से? तो जहाँ बाप होगा वहाँ माया नहीं आयेगी। माया भाग जायेगी, हिम्मत ही नहीं होगी बाप के नजदीक आने की। कोई भी परिस्थिति आवे तो दिल से बाबा कहा, परिस्थिति भागी। अनुभव है ना! भगाना आता है या बिठाना आता है? उसको बिठाना नहीं। भगाओ, दूर से भगाओ। आ जावे फिर निकालने की मेहनत करो, वह भी नहीं करना। दूर से ही भगाओ। बाप का हाथ पकड़ लो तो देखेगी यह तो बाप का हाथ पकड़ा हुआ है तो भाग जायेगी। तो सदा मायाजीत। ठीक है ना! देखो आज नजदीक में तो बैठे हो ना। चांस तो मिला ना। अभी तो नहीं कहेंगे हमको तो कभी चांस नहीं मिला। मिल गया ना? बड़ा परिवार है तो बांटकर मिलता है। अच्छा तो सब खुशराजी। बापदादा का शब्द याद है ना - सदा। कभी कभी वाले नहीं, सदा। हॉस्पिटल वाले भी अच्छी मेहनत कर रहे हैं। हॉस्पिटल का कार्य भी बढ़ रहा है। अच्छा।

(01.03.1999)

बापदादा द्वारा, ब्राह्मण परिवार द्वारा बहुत अच्छे ते अच्छा, बड़े ते बड़ा अवार्ड मिलेगा। और आत्माओं को तो अवार्ड देने वाली आत्मायें होती हैं। अवार्ड मिलता है ना? तो यह परमात्म अवार्ड है। अवाइड करो, अवार्ड लो। हिम्मत है? अच्छा।

(14.12.1997)

अशरीरी बनने का अभ्यास तो पक्का है ही, इसलिए शरीर का हिसाब सहज चुक्तू हो जाता है। शक्तियां बहुत जमा हैं। बापदादा मस्तक में चमकते हुए शब्दों में देख रहे हैं - बेफिक्र बादशाह। फिक्र बाप को है, आप बेफिक्र बादशाह हैं। आदि से साथी रहे हैं तो साथी का जो भी कुछ होता है वह बाप ले लेता है। सभी की दुआयें आपके साथ हैं। दुआओं का खाता कितना है? बहुत जमा है ना? जितनों को दुआयें सारे दिन में देते हैं तो बहुत गुणा होकर मिलती हैं। इसलिए देने वाले को देना नहीं है, जमा होना है। आपका स्टॉक तो सब जमा है ही। एक्जैम्पुल हो इसलिए एक्जाम में भी एक्स्ट्रा मार्क्स मिलने के अधिकारी हो। यह है बाप और परिवार का स्नेह। आपके हर कदम में दुआयें बिखरी हुई हैं।

(13.03.1998)

सेवा खूब करो, बापदादा सेवा के लिए मना नहीं करते और जोर-शोर से करो लेकिन सेवा और स्थिति का सदा बैलेन्स रखते चलो। स्थिति बनाने में थोड़ी मेहनत लगती है और सेवा तो सहज हो जाती है। इसलिए सेवा का बल थोड़ा स्थिति से ऊंचा हो जाता है। बैलेन्स रखो और बापदादा की, सर्व सेवा करने वाले आत्माओं की, संबंध-सम्पर्क में आने वाले ब्राह्मण परिवार की ब्लैसिंग लेते चलो। यह दुआओं का खाता बहुत जमा करो। अभी की दुआओं का खाता आप आत्माओं में इतना सम्पन्न हो जाए जो द्वापर से आपके चित्रों द्वारा सभी को दुआयें मिलती रहेंगी। अनेक जन्म में दुआयें देनी हैं लेकिन जमा एक जन्म में करनी हैं। इसलिए क्या करेंगे? स्थिति को सदा आगे रख सेवा में आगे बढ़ते चलो। क्या

शिक्षा भी देनी हो, तो पहले समर्थ बनाकर फिर शिक्षा दो। पहले उनकी विशेषता की महिमा करो फिर उसको आगे के लिए और भी श्रेष्ठ आत्मा बनने का साधन, कमजोरी पर अटेन्शन रीति से दिलाओ। पहले धरनी पर हिम्मत और उत्साह का हल चलाओ फिर बीज डालो तो सहज ही बीज का फल निकलेगा। नहीं तो हिम्मतहीन कमजोर संस्कार वश आत्मा अर्थात् कलराठी जमीन में बीज डालते हैं इसलिए मेहनत और समय ज्यादा लगता है और सफलता भी कम निकलती है, विश्व कल्याण के कार्य में सोचने वा करने की फुर्सत नहीं मिलती, स्व कल्याण या देश कल्याण में ही लगे रहते हैं। विश्व कल्याणकारी स्वरूप में स्थित नहीं हो सकते। समझा। तो समण विश्व कल्याणकारी बनने के लिए क्या करना है और क्या न करना है। तब ही विश्व कल्याण की सेवा की गति तीव्र हो सकेगी। अभी मध्यम गति है इसलिए इस वर्ष में विश्व कल्याणकारी स्थिति की विधि द्वारा विश्व कल्याण के सेवा की गति तीव्र बनाओ, रहमदिल बनो। अब तक जो कुछ चला ड्रामा अनुसार जो चलता था वह चला। इससे भी आगे के लिए कल्याण की भावना ले, चढ़ती कला की भावना ले अब आगे बढ़ो।कमजोरियों को सदा के लिए दृढ़ संकल्प द्वारा विदाई दो और विदाई दिलाओ। तो विश्व परिवर्तन का कार्य तीव्रगति से हो जायेगा। स्पीड और स्टेज को बढ़ाओ अर्थात् हर बात को नालेजफुल समर्थ स्थिति द्वारा सदा सहज पास करो और सदा पास हो जाओ तो फाइनल स्टेज पर पास विद आनर हो जायेंगे। समझा ऐसी तैयारी करो - जो दूसरी सीज़न में बापदादा सबको तीव्रपुरूषार्थी के रूप में देखें।

(03.02.1979)

अवतार आते ही हैं कोई महान कर्तव्य करने के लिए। तो आप भी किसलिए अवतरित हुए हो? विश्व-परिवर्तन के कर्तव्य के लिए। तो सदा यह याद रहता है? कहीं भी रहते आपका मूल कर्तव्य विश्व-परिवर्तन का है। चाहे कोई भी धन्धा करो, घर का कार्य करो लेकिन याद क्या रहना चाहिए -परिवार या

परिवर्तन? परिवार में रहते हो तो किस लक्ष्य से रहते हो? यही लक्ष्य रहता है ना कि इनको भी परिवर्तन करना है। गृहस्थी होकर नहीं, सेवाधारी होकर रहते हो! सेवाधारी को सेवा ही याद रहती, बाकी सब काम निमित्त मात्र हैं। असली कार्य है विश्व-परिवर्तन का। विश्व परिवर्तन वही कर सकते हैं जो पहले स्वयं का परिर्वतन करते हैं। पहले खुद को उदाहरण बनना पड़ता है फिर आपको देखकर सब करने लग पड़ेंगे। तो स्व परिवर्तन कर लिया है ना? बाकी जो थोड़ा समय रहा है वह किसलिए? सेवा के लिए। अन्य की सेवा करते स्व की सेवा हो ही जायेगी। अवतार हूँ यह याद रहे तो जैसी स्मृति होगी वैसा ही कर्म होगा।

(14.11.1979)

आग फैलायी नहीं जाती बुझाई जाती है

प्रवृत्ति का कायदा होता है कि अगर कोई भी बात प्रवृत्ति में होती है तो माँ-बाप बच्चों तक भी पहुँचने नहीं देते हैं! वहाँ ही स्पष्ट कर समा देते हैं अर्थात् समाप्त कर देते हैं। अगर तीसरे तक बात गई तो फैलेगी जरूर। और जितना कोई बात फैलती है उतना बढ़ती है। जैसे स्थूल आग जितनी फैलेगी उतना नुकसान करेगी। यह भी छोटी-छोटी बातें भिन्न-भिन्न प्रकार के विकारों की आग है। आग को वहाँ ही बुझाया जाता है फैलाया नहीं जाता। प्रवृत्ति में बाप और आप के सिवाए तीसरी समीप आत्मा अर्थात परिवार की आत्माओं में भी बात फैलनी नहीं चाहिए। मियाँ बीबी राज़ी हो जाओ। नाराज़ अर्थात् राज़ को न जानने के बराबर। कोई-न-कोई ज्ञान का राज़ मिस करते हो तब नाराज़ होते हो। चाहे स्वयं से या दूसरों से। तो वकील करने से वही छोटी बात बड़ा केस बन जाती है। इस लिए तीसरे को सुनाना अर्थात् घर की बात को बाहर निकालना। जैसे आज कल की दुनिया में जो बड़े केस होते हैं वह अखबार तक फैल जाते हैं तो यहाँ भी ब्राह्मण परिवार के अखबार में पड़ जाते हैं। तो क्यों नहीं आपस में फैसला कर लो। बाप जाने आर आप जानें तीसरा कोई नहीं। कोई-कोई बच्चों का संकल्प पहुँचता है कि 'मियाँ

- अपनी शुभ भावना से, शुभ कामना से कैसी भी माया के वश आत्मा को परिवर्तन करना। कोई भी है, कैसी भी है, घृणा भाव नहीं आवे, यह तो बदलने वाले ही नहीं हैं, यह तो हैं ही ऐसे। नहीं। अभी आवश्यकता है रहमदिल बनने की क्योंकि कई बच्चे कमजोर होने के कारण अपनी शक्ति से कोई बड़ी समस्या से पार नहीं हो सकते, तो आप सहयोगी बनो। किससे? सिर्फ शिक्षा से नहीं, आजकल शिक्षा, सिवाए प्यार या शुभ भावना के कोई नहीं सुन सकता। यह तो फाइनल रिजल्ट है, शिक्षा काम नहीं करती लेकिन शिक्षा के साथ शुभ भावना, रहमदिल यह सहज काम करता है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, मालूम भी होता कि आज इस बच्चे ने भूल की है, तो भी उस बच्चे को शिक्षा भी तरीके से, युक्ति से देता और फिर उसको बहुत प्यार भी करता, जिससे वह समझ जाते कि बाबा का प्यार है और प्यार में गलती के महसूसता की शक्ति उसमें आ जाती। तो ब्रह्मा बाप को आज बहुत याद किया ना! तो फालो फादर। बाप समान बनने की हिम्मत है? मुबारक हो हिम्मत की। बापदादा आपके दिल की तालियां पहले ही सुन लेता है आप खुशी से तालियां बजाते हो लेकिन बाप को दिल की तालियां पहले पहुंचती हैं।

(18.01.1997)

बापदादा इस वर्ष में यही सब बच्चों से शुभ आश रखते हैं कि बीती सो बीती, आज तक जो भी कैसी भी आत्मायें संबंध-सम्पर्क में रही हैं, जैसी भी हैं, चाहे निगेटिव भी हैं, सामना करने वाली भी हैं, ब्राह्मण जीवन को हिलाने वाली भी हैं लेकिन इस वर्ष में निगेटिव और वेस्ट दृष्टिकोण समाप्त करो। स्नेह दो, शक्ति दो। अगर स्नेह नहीं दे सकते, शक्ति नहीं दे सकते तो देखते, सुनते, सम्पर्क में आते वेस्ट और निगेटिव बातों को दिल में धारण करने में अवाइड करो। मन और बुद्धि में धारण नहीं हो, अवाइड करो। परिवर्तन करो। निगेटिव को वा वेस्ट को परिवर्तन करके दिल में समाओ। ऐसे दोनों बातों को जो अवाइड करेगा उसको

कम होता है तो शोभा नहीं होती है। तो बापदादा सभी बच्चों को उसी नज़र देखते हैं कि यह हर एक रत्न इस ब्राह्मण परिवार का श्रृंगार है। श्रृंगार हो ना? बहुत वैल्युएबल श्रृंगार हो। इसलिए अभी तक आपके जड़ चित्रों को कितना श्रृंगार करते रहते हैं। अभी लास्ट जन्म तक भी श्रृंगार होता रहता है। ऐसी खुशी है? भगवान का श्रृंगार बनना कम बात है क्या!

(03.04.1996)

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि इस फाइनल पढ़ाई में हर एक बच्चे को तीन सर्टीफिकेट लेने हैं - एक स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट - यह सर्टीफिकेट और दूसरा बापदादा द्वारा सर्टीफिकेट और तीसरा परिवार के संबंध-सम्पर्क में आने वालों द्वारा सर्टीफिकेट। यह तीन सर्टीफिकेट जब मिलें तब समझो पढ़ाई पूरी हुई। ऐसे नहीं समझना कि बापदादा तो हमारे से सन्तुष्ट हैं। लेकिन तीनों ही सर्टीफिकेट चाहिए, एक नहीं चलेगा। तो चेक करो तीन सर्टीफिकेट से कितने सर्टीफिकेट मिले हैं? बाप के बिना भी कुछ नहीं मिलता। लेकिन परिवार की सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट इससे भी बहुत कुछ मिलता है। परिवार की जितनी आत्माओं से सर्टीफिकेट जिसको मिलता है, जितने ब्राह्मण सन्तुष्ट हैं उतने ही भगत भी आपकी पूजा सन्तुष्टता से करेंगे, काम चलाऊ नहीं, दिल से करेंगे। तो यहाँ ब्राह्मण जीवन में जितने ब्राह्मणों का आपके प्रति स्नेह, सम्मान अर्थात् रिगार्ड होगा, दिल से सन्तुष्ट होंगे, उतना ही पूज्य बनेंगे। पूज्य के लिए स्नेह और सम्मान होता है। तो जब जब जड़ चित्रों की पूजा होगी, तब इतना ही स्नेह और रिगार्ड मिलेगा। सारे कल्प की प्रारब्ध अभी बनानी है। सिर्फ आधाकल्प राज्य की प्रारब्ध नहीं, पूज्य की प्रारब्ध भी अभी बनती है। ऐसे नहीं समझो-हमारा तो बाप से ही काम चल जायेगा। नहीं। बाप का परिवार से कितना प्यार है। तो फालो फादर करो। ब्रह्मा बाप को देखा, कैसा भी बच्चा हो, शिक्षादाता बन शिक्षा भी देते लेकिन शिक्षा के साथ प्यार भी दिल में रखते। और प्यार कोई बाहों का नहीं, लेकिन प्यार की निशानी है

बीबी तो ठीक लेकिन मियाँ निराकार और बीबी साकार तो मेल कम होता है। इसलिए कभी मिलन होता है कभी नहीं होता है - कभी रूह-रूहान पहुँचती है कभी नहीं पहुँचती अर्थात् रेसपान्स नहीं मिलता है। इसलिए काज़ी करना पड़ता है।' लेकिन मियाँ ऐसे मिला है जो बहुरूपी है। जो रूप आप चाहो तो एक सेकेण्ड में जी हज़ूर कह हाज़िर हो सकते हैं लेकिन आप भी बाप समान बहुरूपी बनो।

टीचर्स के प्रति अव्यक्त महावाक्य :- टीचर्स अर्थात् बाप समान सर्वश्रेष्ठ आत्मायें। टीचर्स को हर वर्ष कोई नया प्लैन बनाना चाहिए। सेवा के प्लैन तो स्टूडेन्ट्स भी बनाते हैं। लेकिन टीचर्स को विशेष क्या करना है? अब ऐसा अपना संगठन बनाओ जो सबके मुख से यह निकले कि यह अनेक होते भी एक हैं। जैसे यहाँ दीदी-दादी दो हैं लेकिन कहते हैं दोनो एक हैं तो यह प्रभाव पड़ता है ना। जब ये दो होते हुए भी एक-समान एक दूसरे को रिगार्ड देते, दो होते हुए एक दिखा रही हैं तो आप अनेक होते हुए एक का प्रमाण दे सकते हो। जैसे कहते हैं कि सब की वाणी एक ही होती है, जो एक बोलती वही सब बोलते हैं, ड्रैस भी एक जैसी, वाणी सबकी एक ही ज्ञान के पॉइन्ट्स की होती, भले सुनाने का ढंग अलग हो, सार एक ही होता है। वैसे ऐसा ग्रुप बनाओ जो सब कहें यह अनेक नहीं हैं, एक हैं। यही विशेषता है ना। तो एक्ज़ैम्पल कोई निमित्त बनें जिसको फिर सब फालो करेंगे। इसमें जो ओटे सो अर्जुन। तो कौन अर्जुन बनेगा? जो अर्जुन बनेंगे उसे फर्स्ट प्राइज़ मिलेगी। सिर्फ एक बात का ध्यान देना पड़ेगा। कौन-सी बात? क्या करना पड़ेगा? सिर्फ एक दूसरे को सहयोग दें, विशेषता देखते हुए, कमजोरियों को न देखना, न सुनना, यह अभ्यास पक्का करना पड़ेगा। देखते हुए भी कमज़ोरी को समाकर सहयोग देते रहें। तिरस्कार नहीं करें लेकिन तरस की भावना रखें। जैसे दु:खी आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनते हो वैसे कमजोरियों के उपर भी रहमदिल बनो। अगर ऐसे रहमदिल बन गये तो क्या हो जायेगा? अनेक होते हुए भी एक बन जायेंगे। वैसे भी लौकिक में देखो - जो समझदार परिवार होते हैं, स्नेही परिवार होते हैं वह क्या करते हैं, एक दूसरे की कमज़ोरी की बात समाकर एक-

दूसरे के सहयोगी बनकर बाहर अपना नाम बाला करते हैं। अगर कोई परिवार में गरीब होता है तो उसको मदद देकर के भरपूद कर देते हैं। यह भी परिवार है। अगर कोई संस्कार के वश हैं, तो क्या करना चाहिए। सहयोग देकर, हिम्मत बढ़ाकर के हुल्लास में लाते हुए उसको अपना साथी बनाना चाहिए फिर देखो अनेक होते भी एक हो जायेंगे। यह करना मुश्किल है क्या? जब वरदानी मूर्त हो तो वरदानी कभी किसी की कमज़ोरी नहीं देखते। वरदानी सदा सबके उपर रहमदिल होते है। ऐसे कर के दिखाओ। तो क्या करेंगे? ऐसा कोई आत्मिक बाम्ब लगाके दिखाओ। टिचर्स का कर्त्तव्य ही यह है। जैसे बाप कमज़ोरी दिल पर नहीं रखते लेकिन दिलाराम बनकर दिल को आराम देते हैं तो टीचर्स अर्थात बाप समान। किसी की कमज़ोरी तो देखो ही नहीं। दिल पर धारण नहीं करो लेकिन हरेक की दिल को दिलाराम समान आराम दो। तो सब आपके गुणगान करेंगे। साथी हों चाहे प्रजा हो, हर आत्मा के मुख से दुआयें निकलें। आपके लिए आशीर्वाद निकले कि यह सदा स्नेही और सहयोगी आत्मा है, यह बाप-समान रहमदिल, दिलाराम की बच्ची दिलाराम है। तब कहेंगे योग्य टीचर। अगर टीचर की कमी देखें ता स्टूडेन्ट और टीचर में अन्तर ही क्या हुआ? टीचर तो बाप के गद्दी नशीन हैं। साथ में बाप की गद्दी पर विराजमान हो ना। सबसे समीप तो साथी ही बैठेंगे ना। टीचर अर्थात गद्दीनशीन। तो ऐसी कमाल करके दिखाओ। समझा टीचर किसको कहते हैं? इसमें कोई भी प्राईज़ ले सकता है। टीचर के मुख से कभी भी किसी की कमज़ोरी वर्णन नही होनी चाहिए, विशेषता ही वर्णन हो। टीचर का अर्थ ही है बाप-समान हिम्मतहीन की लाठी बनने वाली। समझा, टीचर किसको कहते हैं? विस्तार तो अच्छा बना रही हो। अब संगठन का सार बनाना है।

(28.11.1979)

जैसे द्वापर के इनडायरेक्ट दान-पुण्य करने वाले सकामी अल्पकाल के राजायें देखे व सुने होंगे, उन राजाओं में भी राज्य सत्ता की फुल पावर थी। जो

नहीं है, दूसरे या तीसरे नम्बर का निश्चय है तो धीरे-धीरे जो शुरु की खुशी, शुरू का जोश है, उसमें फर्क आ जाता है।

(04.12.1995)

आदि से चारों ही सब्जेक्ट में बाप के दिल पसन्द है वो तख्त ले सकता है। साथ-साथ जो ब्राह्मण संसार में सर्व के प्यारे, सर्व के सहयोगी रहे हैं, ब्राह्मण परिवार हर एक दिल से सम्मान करता है, ऐसा सम्मानधारी तख्त नशीन बन सकता है। अगर इन बातों में किसी न किसी में कमी है तो वो नम्बरवार रॉयल फैमिली में आ सकता है। चाहे पहली में आवे, चाहे आठवीं में आए, चाहे त्रेता में आए। तो अगर तख्तनशीन बनना है तो इन सभी बातों को चेक करो। अगर सेवा में 100 मार्क्स जमा हैं और धारणा में 25 परसेन्ट तो क्या होगा? वो अधिकारी बनेगा? कई बच्चे और सब्जेक्ट में आगे चले जाते हैं लेकिन प्रैक्टिकल धारणा में जैसा समय है वैसा अपने को मोल्ड करना वो है रीयल गोल्ड।

(13.12.1995)

डबल विदेशी ब्राह्मण परिवार का विशेष श्रृंगार हैं। जैसे आज विशेष श्रृंगार किया है ना। (पूरी स्टेज सुगन्धित फूल मालाओं से सजाई गई है) अच्छा लगता है ना! तो आप लोग भी एक-एक रत्न ब्राह्मण परिवार का श्रृंगार हो। तो श्रृंगार कभी गिर नहीं जाये, श्रृंगार गिर गया तो कैसे लगेगा? अभी श्रृंगार किया है और गिर जाये तो क्या अच्छा लगेगा? सदैव समझो कि हम ब्राह्मण परिवार के ताज के हीरे हैं। तो ताज से एक भी हीरा गिर जाये तो अच्छा लगेगा? तो इतना अपना महत्व समझो। साधारण नहीं समझो, महान् हो।

(31.12.1995)

हर एक आत्मा इस ब्राह्मण परिवार की विशेष शोभा हो। एक रत्न भी

कभी-कभी बन जाते हो। खेल करते हैं! माया के भी नॉलेजफुल हो गये! क्योंकि माया भी नॉलेजफुल है। गिराने में माया नॉलेजफुल है और उड़ने में आप नॉलेजफुल हो। तो माया भी देखती है कि इसकी उड़ान थोड़ी नीचे-ऊपर हो गई है तो देख करके वार करती है। और आप नॉलेजफुल होने के कारण जान जाते हो, तो हार नहीं खाते हो लेकिन विजय का हार गले में पड़ा। सबके गले में विजय की माला है या कभी-कभी उतार देते हो? अच्छा।

(31.03.1995)

दूसरा निश्चय है - योग द्वारा थोड़े समय के लिए अशान्ति से शान्ति का अनुभव करते हैं और स्थान का शक्तिशाली शान्त वायुमण्डल आकर्षित करता है वा ब्राह्मण परिवार, ब्राह्मण आत्माओं का आत्मिक प्यार और पवित्रता की जीवन का प्रभाव पड़ता है, कम्पनी अच्छी लगती है, दुनिया के वायुमण्डल के कान्ट्रास्ट में ये संग अच्छा लगता है, ज्ञान भी अच्छा, परिवार भी अच्छा, वायुमण्डल भी अच्छा ..... तो वो अच्छा लगना, उस फाउण्डेशन के आधार पर चलते रहते हैं। ये है दूसरा नम्बर। पहला नम्बर सुनाया 'यथार्थ निश्चय' और दूसरा नम्बर 'अच्छा लगता है' और तीसरा नम्बर - दुनिया के सम्बन्धियों के दु:खमय वातावरण से बचकर जितना समय भी सेवाकेन्द्र पर आते हैं उतना समय दु:ख से किनारा होकर शान्ति का अनुभव करते हैं। ज्ञान की गुह्यता में नहीं जायेंगे लेकिन शान्ति की प्राप्ति के कारण कभी आते हैं और कभी नहीं भी आते हैं। लेकिन यथार्थ निश्चय बुद्धि विजयी होते हैं। और देखा जाता है कि जब शुरु-शुरु में आते हैं तो अशान्ति से तंग होते हैं, शान्ति के इच्छुक होते हैं। तो जैसे प्यासे को एक बूंद भी अगर पानी की मिल जाये तो वो बहुत बड़ी बात अनुभव करता है। तो अप्राप्ति से प्राप्ति होती है, परिवार में, ज्ञान में, योग में, वायुमण्डल में अन्तर दिखाई देता है। तो पहला समय बहुत अच्छे उमंग-उत्साह से चलते हैं, बहुत नशा रहता है, खुशी भी होती है। लेकिन अगर पहले नम्बर के यथार्थ निश्चय का फाउण्डेशन पक्का

आर्डर करें, कोई उसको बदल नहीं सकता। चाहे किसी को क्या भी बना दें। किसी को मालामाल बना दें, किसी को फाँसी पर चढ़ा दें, दोनों अथार्टी थी। यह है इनडायरेक्ट दान-पुण्य की सत्ता जो द्वापर के आदि में यथार्थ रूप में यूज़ करते थे। पीछे धीरे-धीरे वही राज्य सत्ता अयथार्थ रूप में हो गई। इस कारण आखिर अन्त में समाप्त हो गई। लेकिन जैसे इनडायरेक्ट राज्य सत्ता में भी इतनी शक्ति थी जो अपनी प्रजा को, परिवार को अल्पकाल के लिए सुखी वा शान्त बना देते थे। ऐसे ही आप पुण्य आत्माओं व महादानियों को भी डायरेक्ट बाप द्वारा प्रकृति-जीत, मायाजीत की विशेष सत्ता मिली हुई है तो आप ऑलमाइटी सत्ता वाले हो। अपनी ऑलमाइटी सत्ता के आधार पर अर्थात् पुण्य की पूंजी के आधार पर, शुद्ध संकल्प के आधार से, किसी भी आत्मा के प्रति जो चाहो, वह उसको बना सकते हो। आपके एक संकल्प में इतनी शक्ति है जो बाप से सम्बन्ध जोड़ मालामाला बना सकते हो। उनका हुक्म और आपका संकल्प। वह अपने हुक्म के आधार से जो चाहों वह कर सकते हैं - ऐसे आप एक संकल्प के आधार से आत्माओं को जितना चाहे उतना ऊंचा उठा सकते हो क्योंकि डायरेक्ट परमात्म-अधिकार प्राप्त हुआ है - ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें हो? लेकिन अब प्रैक्टिल में क्यों नहीं होता? अधिकार है, आलमाइटी सत्ता भी है फिर उसको यूज़ क्यों नहीं कर पाते? कारण क्या है? यह श्रेष्ठ सेवा अब तक शुरू क्यों नहीं हुई है?

(10.12.1979)

आज की राजनीति की हलचल को देख आप विश्व के महाराजन महारानियों को व वैकुण्ठ रामराज्य को सब याद कर रहे हैं कि अब वह राज्य चाहिए। रामराज्य में व सतयुगी वैकुण्ठ में आप सब बाप के साथ-साथ राज्य-अधिकारी हो ना। तो आप अधिकारियों को आपकी प्रजा आव्हान कर रही हे कि फिर से वह राज्य लाओ। आप सब श्रेष्ठ आत्माओं को उनकी आवाज़ नहीं पहुँचती है? सब चिल्ला रहे हैं, कोई भूख से चिल्ला रहे हैं, कोई महँगाई से चिल्ला रहे है, कोई तन

के रोग से चिल्ला रही है, कोई मन की अशान्ति से चिल्ला रहे हैं, कोई टैक्स से चिल्ला रहे हैं, कोई परिवार की समस्याओं से चिल्ला रहे हैं, कोई अपनी कुर्सी की हलचल के कारण चिल्ला रहे हैं, बड़े-बड़े राज्य-अधिकारी एक-दूसरे से भयभीत होकर चिल्ला रहे हैं, छोटे-छोटे बच्चे पढ़ाई के बोझ से चिल्ला रहे हैं। छोटे से बड़े, सब चिल्ला रहे हैं। चारों ओर का चिल्लाना आप सबके कानों तक पहुँचता है? ऐसे समय पर बाप के साथ-साथ आप सब भी टॉवर ऑफ पीस हो। सबकी नज़र टॉवर ऑफ पीस की तरफ जा रही है। सब देख रहे हैं - हा-हाकार के बाद जय-जयकार कब होती है। तो सब टॉवर ऑफ पीस बताओ, कब जय-जयकार कर रहे हो? क्योंकि बाप-दादा ने साकार रूप में निमित्त आप बच्चों को ही रखा है। तो हे साकारी फरिश्ते, कब अपने फरिश्ते रूप से विश्व के दु:ख दूर कर सुखधाम बनायेंगे।

(15.12.1979)

करेन्सी में अशर्फियाँ होंगी। लेकिन आजकल जैसी नहीं होगी। रूप-रेखा परिवर्तित होगी। डिज़ाइन और अच्छी-अच्छी होंगी। निमित्त मात्र लेन-देन होंगी। जैसे यहाँ मधुबन में परिवार होते हुए भी चार्ज वाले अलग-अलग बनाये हुए हैं ना। अलग-अलग डिपार्टमेंट बनाए हुए है। परिवार होते भी चार्ज वाले से लेते हो ना। एक देता है दूसरा लेता है। ऐसे वहाँ भी फैमिली सिस्टम होगा। दुकानदार और ग्राहक का भाव नहीं होगा। मालिकपन का ही भाव होगा। सिर्फ आपस में एक्सचेन्ज करेंगे। कुछ देंगे कुछ लेंगे कमी तो किसी को भी नहीं होगी। प्रजा को भी कमी नहीं होगी। प्रजा भी अपने शरीर निर्वाह से पदमगुणा भरपूर होगी। इसलिए मैं ग्राहक हूँ, यह मालिक है - यह भाव नहीं रहेगा। स्नेह की लेन-देन होगी। हिसाब-किताब की खींचातान नहीं होगी। रजिस्टर नहीं होंगे।

(02.01.1980)

का भी स्नेह है तो बच्चों का भी स्नेह है, दोनों मिल गये तो क्या हो गया? मेला। दृश्य भी कितना अच्छा लग रहा है। ऐसा कभी सोचा था-इतना बड़ा परिवार मिलेगा और इतना परिवार किसको होगा? आपके घर कितने हैं? (एक है) और आपके सेवा के स्थान कितने हैं? (अनेक हैं) तो उसको भी तो बाबा का घर कहते हो ना! तो बाबा का घर आपका घर है। दुनिया कहती है घरबार छोड़ते हैं और आपने कितने घर बनाये हैं! गिनती नहीं कर सकते हो, याद रखना पड़ता है। तो ये छोड़ना नहीं है, बनाना है। और परिवार को छोड़ा है या परिवार इतना बड़ा बनाया है जो मिलना ही मुश्किल होता है। सारे ब्राह्मण जितने भी जहाँ भी हैं, एक स्थान पर मिल सकते हैं? मुश्किल होगा ना। क्योकि दूसरे का राज्य है ना, अपना राज्य तो नहीं है। लेकिन बाप मिला, बेहद का परिवार मिला। तो बेहद को याद करने से बेहद की खुशी, बेहद का नशा होगा। अगर हद में समझते हैं-मैं तो फलाने देश में हूँ, फलाने देश का हूँ, फलाने ज़ोन का हूँ तो हद होती है लेकिन ये तो निमित्त मात्र निशानी के लिये कहते हैं-ये फलाना ज़ोन, ये फलाना स्थान। बाकी अपने को बेहद का समझते हो ना। नियम भी रखने पड़ते हैं। कई ऐसे भी सोचते हैं कि ये क्या बैज लगाओ तभी खाना मिलेगा। आपको खाने पर तंग करते हैं ना? लेकिन ये करना ही पड़ता है। क्योंकि कायदे में फायदे हैं। ये बंधन नहीं है लेकिन विघ्नों से निर्बन्धन बनाने का साधन है। ये क्या नई बात निकाली-ये नहीं सोचना। संकल्प तो बाप के पास पहुँचते हैं ना। लेकिन मर्यादा पुरुषोत्तम आप ही हो ना। या सिर्फ बड़ी दादियां मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, आप - हो? मर्यादा पुरुषोत्तम अर्थात् मर्यादा के अन्दर रहने वाले, चलने वाले। हाँ जी का पाठ पक्का है ना? अच्छा! और जब कोई बात हो जाती है तो हाँ जी होता है या ना जी भी होता है? जब कोई ऐसी बात करते हैं तो हाँ जी के बदले फिर ना जी में इतने पक्के हो जाते हैं जो बाप भी कहे तो भी नहीं सुनेंगे। जैसे स्थापना में जब छोटे-छोटे बच्चे आये तो बापदादा उन्हों को पाठ पक्का कराने के लिये हमेशा कहते रहे कि ना करना माना नास्तिक, हाँ करना माना आस्तिक। तो आप सब कौन हो? आस्तिक हो। नास्तिक तो नहीं हो ना!

आज्ञाकारी कहाँ तक हैं? जैसे ब्रह्मा बाप को देखा हर एक छोटा-बड़ा सन्तुष्ट होकर खुशी में नाचता। नाचने के टाइम तो हल्के होंगे ना तभी तो नाचेंगे ना। चाहे कोई मोटा है लेकिन मन से हल्का है तो भी नाचता है और पतला है लेकिन भारी है तो नहीं नाचेगा। तो बोल ऐसे हों जो स्वयं भी अपने आपसे सन्तुष्ट हो और दूसरे भी सन्तुष्ट रहें। ऐसे नहीं, हमारा तो भाव नहीं था, हमारी तो भावना नहीं थी, लेकिन भाव और भावना पहुँचती क्यों नहीं? अगर सही है तो दूसरे तक वायब्रेशन्स क्यों नहीं जाता है? कोई तो कारण होगा ना? तो चेक करो दुआओं के पात्र कहाँ तक बने हैं?

जितना आभी बाप और ब्राह्मण आत्माओं की दुआओं के पात्र बनेंगे उतना ही राज्य के पात्र बनेंगे। अगर अभी ब्राह्मण परिवार को सन्तुष्ट नहीं कर सकते, तो राज्य क्या चलायेंगे! राज्य को क्या सन्तुष्ट करेंगे! क्योंकि ब्राह्मण आत्मायें आपकी रॉयल फैमिली बनेंगे तो जो फैमिली को सन्तुष्ट नहीं कर सकते वो प्रजा को क्या करेंगे? संस्कार तो यहाँ भरना है ना! कि वहाँ योग करके भरेंगे! यहाँ ही भरना है। अगर वर्तमान ब्राह्मण परिवार में कारण का निवारण नहीं कर सकते, कारण-कारण ही कहते रहते हैं, तो जहाँ कारण है वहाँ निवारण शक्ति नहीं है। अगर परिवार में निवारण शक्ति नहीं तो विश्व के राज्य को क्या निवारण करेंगे! क्योंकि आपके राज्य में हर आत्मा सदा निवारण स्वरूप है। वहाँ कारण होंगे क्या? जैसे अभी राज्य सभा में कारण बताते हैं-ये कारण है, ये कारण है, ये कारण है..... वहाँ ऐसे राज्य दरबार होगी क्या? वहाँ तो सिर्फ खुश ख़ैराफ़त पूछेंगे। सिर्फ दरबार नहीं है लेकिन बहुत अच्छा मिलन है। तो कारण कहकर अपने को दुआओं से वंचित नहीं करो। ब्रह्मा बाप ने कारण को निवारण किया इसीलिये नम्बरवन हुआ।

(19.01.1995)

बापदादा को बच्चों का स्नेह देख खुशी है। स्नेह ने मेला रचाया है। बाप

एक बाप के बच्चे होते भी इतना अन्तर क्यों?

एक हैं विश्व-कल्याण का कार्य करने वाले और दूसरे हैं कार्य करने वालों की और कार्य की महीमा करने वाले, दूसरे महीमा योग्य बनने वाले। एक हैं करना है, दूसरे हैं करना चाहिए, होनो चाहिए, बनना चाहिए। इसलिए एक बाप के बच्चे बनकर भी कितना अन्तर रह जाता है। 'चाहिए' को 'है' में बदलना है। जो सदा 'है, है' करता है वह हाय-हाय से छूट जाता। चाहिए वाले कभी बहुत उमंग में नाचते रहेंगे, कभी विघ्न में हाय-हाय करते रहेंगे। वह लोक पसन्द सभा के मेम्बर नहीं हैं। जैसे वहाँ पार्टी के मेम्बर बहुत होते हैं लेकिन सभा के मेम्बर थोड़े होते हैं। यहाँ भी ब्राह्मण परिवार के मेम्बर ज़रूर हैं लेकिन लोक पसन्द सभा के मेम्बर अर्थात् लॉ एण्ड आर्डर का राज्य अधिकार लेने वाले अधिकारी आत्मायें, उस लिस्ट में नहीं आयेंगे। वह हैं राज्य गद्दी के अधिकारी और वह हैं राज्य में आने के अधिकारी। 16 हज़ार की माला में, राज्य में आने के अधिकारी, लेकिन राज्य सिंहासन के अधिकारी नहीं। तो लोक पसन्द सभा की टिकट बुक कर लो तो राज्य सिंहासन स्वत: ही प्राप्त होगा।

(16.01.1980)

ब्राह्मण परिवार की विशेषता है - अनेक होते भी एक। तो हर सेवाकेन्द्र का वायब्रेशन ऐसा हो जो सबको महससू हो कि ये अनेक नहीं लेकिन एक हैं। एकता का वायब्रेशन सारे विश्व में एक धर्म, एक राज्य की स्थापना करेगा। यह भी विशेष अटेन्शन देकर भिन्नता को मिटाकर एकता लाना।

(18.01.1980)

सभी अंगद के समान अचल अडोल रहने वाले हो ना। रावण राज्य की कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति ज़रा भी संकल्प रूप में भी हिला न सके, नाखुन को भी न हिला सके। संकल्प में हिलना अर्थात् नाखुन हिलना। तो संकल्प रूप में भी

न व्यक्ति, न परिस्थिति हिला सके, कभी कोई सम्बन्धी या दैवी परिवार का भी ऐसा निमित्त बन जाता है जो विघ्न रूप बन जाता है। लेकिन अंगद के समान सदा अचल रहने वाला व्यक्ति हो, विघ्न को और परिस्थितियों को पार कर लेगा क्योंकि नॉलेजफुल है। वह जानता है कि यह विघ्न क्यों आया। ये विघ्न गिराने के लिए नहीं है लेकिन और ही मज़बूत बनाने के लिए हैं। वह कन्फ्यूज नहीं होगा। जैसे इम्तिहान के हाल में जब पेपर आता है तो कमज़ोर स्टूडेन्ट कनफ्यूज हो जाते हैं, अच्छे स्टूडेन्ट देखकर खुश होते हैं क्योंकि बुद्धि में रहता है कि यह पेपर देकर वह क्लास आगे बढ़ेगा। उन्हें मुश्किल नहीं लगता। कमज़ोर क्वेश्चन ही गिनती करते रहेंगे। ऐसा क्वेश्चन क्यों आया, ये किसने निकाला, क्यों निकाला तो यहाँ भी कोई निमित्त पेपर बनकर आता है तो यह क्वेश्चन नहीं उठना चाहिए कि यह क्यों करता है, ऐसा नहीं करना चाहिए। जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, अच्छी बात उठा लो। जैसे हँस मोती चुगता है ना, कंकड़ को अलग कर देता है। दूध और पानी को अलग कर देता है। दूध ले लेता है, पानी छोड़ देता है। ऐसे कोई भी बात सामने आये तो पानी समझकर छोड़ दो। किसने मिक्स किया, क्यों किया - यह नहीं, इसमें भी टाइम टाइम वेस्ट हो जाता है। अगर क्यों, क्या करते इम्तिहान की अन्तिम घड़ी हो गई तो फेल हो जायेंगे। वेस्ट किया माना फेल हुआ। क्यों-क्या में श्वास निकल जाए तो फेल। कोई भी बात फील करना माना फेल होना। माया शेर के रूप में भी आये तो आप योग की अग्नि जलाकर रखो, अग्नि के सामने कोई भी भयानक शेर जैसी चीज़ भी वार नहीं कर सकती। सदा योगाग्नि जगती रहे तो माया किसी भी रूप में आ नहीं सकती। सब विघ्न समाप्त हो जायेंगे।

(23.01.1980)

मधुबन के पाण्डवों की यूनिटी की भी विशेषता है। पूरी सीज़न निर्विघ्न चले तो निर्विघ्न भव के वरदानी हो गये ना। सेवा की सफलता में सब पास हैं। सेवा

अमृतवेले से लेकर रात तक मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध, सम्पर्क में जो आज्ञा मिली हुई है उसी आज्ञा प्रमाण चलते हैं? कि कोई आज्ञा पालन होती है और कोई नहीं होती है? संकल्प भी आज्ञा प्रमाण है, कि मिक्स है? अगर मिक्स है तो फुल आज्ञाकारी हैं या अधूरे आज्ञाकारी? हर समय के संकल्प की आज्ञा स्पष्ट मिली हुई है। अमृतवेले क्या संकल्प करना है ये भी स्पष्ट है ना! तो फालो करते हो कि कभी परमधाम में चले जाते हो और कभी निद्रालोक में चले जाते हो? हर कर्म में, हर समय कदम पर कदम है? बाप का कदम एक और बच्चे का कदम दूसरा हो तो उसे आज्ञाकारी नहीं कहेंगे ना! चाहे परमार्थ में, चाहे व्यवहार में, दोनों में जो जैसी आज्ञा है वैसे आज्ञा को पालन करना-इसकी परसेन्टेज़ चेक करो। चेक करना आता है? तो पहला कदम आज्ञाकारी बने, इसलिये आज्ञाकारी को सदा बाप की दुआएं स्वत: मिलती हैं और साथ-साथ ब्राह्मण परिवार की भी दुआएं हैं। तो चेक करो कि जो भी संकल्प किया, चाहे स्व प्रति, चाहे सेवा के प्रति, चाहे स्थूल कर्म के प्रति या अन्य आत्माओं के प्रति उसमें सबकी दुआयें मिली? क्योंकि आज्ञाकारी बनने से सर्व की दुआयें मिलती हैं और यदि दुआयें मिल रही हैं तो उसकी निशानी है कि दुआओं के प्रभाव से दिल सदा सन्तुष्ट रहेगी, मन सन्तुष्ट रहेगा। बाहर की सन्तुष्टता नहीं लेकिन मन की सन्तुष्टता। और मन की सन्तुष्टता यथार्थ है वा मियाँ मिट्ठू हैं-इसकी निशानी, अगर यथार्थ रीति से यथार्थ आज्ञाकारी हैं, दुआएं हैं तो सदा स्वयं और सर्व डबल लाइट रहेंगे। अगर डबल लाइट नहीं रहते तो समझो मन की सन्तुष्टता नहीं। बाप की वा परिवार की दुआएं भी नहीं मिल रही हैं। परिवार की भी दुआएं आवश्यक हैं। ऐसे नहीं समझो कि बाप से हमारा कनेक्शन है, बाप की तो दुआएं हैं, परिवार से नहीं बनता कोई हर्जा नहीं। पहले भी सुनाया कि माला में सिर्फ युगल दाना नहीं है, उससे माला नहीं बनती। तो माला में आना है इसलिए पूरा लक्ष्य रखो कि हरेक आत्मा मुझे देखकर खुश रहे, देख करके हल्के हो जायें, बोझ खत्म हो जाए। तो दिल की सन्तुष्टता वा आज्ञाकारी की दुआएं स्वयं को भी लाइट और दूसरे को भी लाइट बनायेंगी। इससे समझो कि

कई बार कई कहते हैं बापदादा तो बहुत अच्छा, वो तो पक्का है कि बाप है और हम बच्चे हैं, हमारा बाप से ही सम्बन्ध है लेकिन दैवी परिवार में खिटखिट होती है, उसमें निश्चय डगमग हो जाता है इसीलिये परिवार को छोड़ देते हैं, हल्का कर देते हैं। तो एक साइड ढीला हो गया ना। बिना परिवार के माला में कैसे आयेंगे? माला कब बनती है? जब दाना दाने से मिलता है और एक ही धागे में पिरोये हुए होते हैं। अगर अलग-अलग धागे में अलग-अलग दाना हो तो उसको माला नहीं कहेंगे। तो परिवार है माला। अगर परिवार को छोड़कर तीन निश्चय पक्के हैं तो भी विजय निश्चित नहीं है। चलो परिवार की खिटखिट से किनारा कर लो, बाप का सहारा हो, परिवार का किनारा हो, तो चलेगा? काम तो बाप से है या भाइयों से है? बाप से काम है, वर्सा बाप से मिलना है, भाई-बहनों से क्या मिलेगा? लेकिन ब्राह्मण जीवन में यही न्यारापन है कि धर्म और राज्य दोनों की स्थापना होती है, सिर्फ धर्म की नहीं। और धर्म पितायें सिर्फ धर्म की स्थापना करते हैं, बाप की विशेषता है धर्म और राज्य की स्थापना करना। तो राज्य में एक राजा क्या करेगा? बहुत अच्छा तख्त भी हो, ताज भी हो, क्या करेगा? राजधानी भी चाहिये ना? तो राजधानी अर्थात् ब्राह्मण परिवार सो राज परिवार। इसलिए ब्राह्मण परिवार में हर परिस्थिति में निश्चयबुद्धि, तब राज्य-भाग्य में भी सदा राज्य अधिकारी होंगे। तो ऐसे नहीं समझना - कोई बात नहीं, परिवार से नहीं बनती है, बाप से तो बनती है! ड्रामा अगर भूल जाता है तो बाप तो याद रहता ही है! लेकिन कोई भी कमजोरी एक ही समय पर होती है, स्व स्थिति अर्थात् स्व-निश्चय भी अगर कमजोर होता है तो विजय निश्चित के बजाय हलचल में आ जाती है। तो बापदादा निश्चय के फाउण्डेशन को चेक कर रहे थे।

(09.01.1995)

पहला कदम आज्ञाकारी बने। जो आज्ञा मिली उसी आज्ञा को प्रत्यक्ष स्वरूप में लाया। तो चेक करो कि आज्ञाकारी के पहले कदम में फालो फादर हैं?

नहीं करते, लेकिन मेवा खाते हो। सर्व ब्राह्मण परिवार की आशीर्वाद के अधिकारी बनना, यह मेवा खाया या सेवा की?

(09.02.1980)

बाप-दादा की नज़र हरेक बच्चे की विशेषता पर जाती है। और ऐसा कोई भी नहीं हो सकता जिसमें कोई विशेषता न हो। विशेषता है तब विशेष आत्मा बनकर ब्राह्मण परिवार में आये हैं। आप भी जब किसी के सम्पर्क में आते हो तो विशेषता पर नज़र जानी चाहिए। विशेषता द्वारा उनसे वह कार्य करा सकते हो और लाभ ले सकते हो। जैसे बाप होपलेस को होपवाला बना देते। ऐसा कोई भी हो कैसा भी हो उनसे कार्य निकालना है, यह है संगमयुगी ब्राह्मणों की विशेषता। जैसे जवाहरी की नज़र सदा हीरे पर रहती, आप भी ज्वैलर्स हो अपनी नज़र पत्थर की तरफ न जाए, हीरे को देखो। संगमयुग है भी हीरे तुल्य युग। पार्ट भी हीरो, युग भी हीरे तुल्य, तो हीरा ही देखो। फिर स्टेज कौन-सी होगी? अपनी शुभ भावना की किरणें सब तरफ फैलाते रहेंगे। वर्तमान समय इसी बात का विशेष अटेन्शन चाहिए। ऐसे पुरुषार्थी को ही तीव्र पुरुषार्थी कहा जाता हें

(18.01.1981)

सिर्फ दो बातें देखो - एक लाइन किलियर है। दूसरा मर्यादाओं की लकीर के अन्दर हैं। अगर दोनों बातें ठीक हैं तो कभी भी दिलशिकस्त नहीं होंगे। जिसका कनेक्शन ठीक है चाहे बाप से चाहे निमित्त बनने वालों से, वह कभी भी असफल नहीं हो सकता। सिर्फ बाप से ही कनेक्शन हो वह भी करेक्ट नहीं। परिवार से भी चाहिए। क्योंकि बाप से तो शक्ति मिलेगी लेकिन सम्बन्ध में किसके आना है। सिर्फ बाप से? राजधानी अर्थात् परिवार से सम्पर्क में आना है। तीन सर्टीफिकेट लेने हैं। सिर्फ एक नहीं।

एक - बाप पसन्द अर्थात् बाप का सर्टीफिकेट। दूसरा लोक पसन्द

अर्थात् दैवी परिवार से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट। तीसरा मन पसन्द - अपने मन मेंभी सन्तुष्टता हो। अपने आप से भी मूंझा हुआ न हो। पता नहीं कर सकूंगा, चल सकूंगा! तो अपने मन पसन्द अर्थात् मन की सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट। यह तीन सर्टीफिकेट चाहिए। त्रिमूर्ति हैं ना। तोयह त्रिमूर्ति सर्टीफिकेट चाहिए। दो से भी काम नहीं चलेगा। तीनों चाहिए। कोई समझते हैं - हम अपने से सन्तुष्ट हैं, बाप भी सन्तुष्ट है। चल जायेगा। लेकिन नहीं। जब बाप सन्तुष्ट है, आप भी सन्तुष्ट हो तो परिवार सन्तुष्ट न हो, यह हो नहीं सकता। परिवार को सन्तुष्ट करने के लिए सिर्फ छोटी सी बात है। 'रिगार्ड दो और रिगार्ड लो'। यह रिकार्ड दिन रात चलता रहे। रिगार्ड का रिकार्ड निरन्तर चलता रहे। कोई कैसा भी हो लेकिन आप दाता बन देते जाओ। रिर्टन दे वा न दे लेकिन आप देते जाओ। इसमे निष्काम बनो। मैंने इतना दिया। उसने तो कुछ दिया नही। हमने सौ बार दिया उसने एक बार भी नहीं। इसमें निष्काम बनो तो परिवार स्वत: ही सन्तुष्ट होंगे। आज नहीं तो कल। आपका देना जमा होता जायेगा, वह जमा हुआ फल जरूर देगा। और बाप पसन्द बनने के लिए क्या चाहिए? बाप तो बड़े भोले हैं। बाप जिसको भी देखते हैं सब अच्छे ते अच्छे हैं। 'अच्छा नहीं' ऐसे तो कोई नजर ही नहीं आता। एक एक पाण्डव, एक एक शक्ति एक से एक आगे है। तो बाप पसन्द बनने के लिए - 'सच्ची दिल परसाहेब राजी'। जो भी हो सच्चाई, सत्यता बाप को जीत लेती है। और मन पसन्द बनने के लिए क्या चाहिए? मनमत पर नहीं चलना। मनपसन्द औरचीज हैं। मन पसन्द बनने के लिए बहुत सहज साधन है। 'श्रीमत की लकीर के अन्दर रहो'। संकल्प करो तो भी श्रीमत की लकीर के अन्दर। बोलो, कर्म करो, जो कुछ भी करो लकीर के अन्दर। तो सदा स्वयं से भी सन्तुष्ट और सर्व को भी सन्तुष्ट कर सकेंगे। संकल्प रूपी नाखून भी बाहर न हो।

(27.03.1981)

माया कनेक्शन को ही ढ़ीला करती है उसकी सिर्फ सम्भाल करो। यह

जानना नहीं लेकिन मानकर चलना। अगर जानते हैं लेकिन चलते नहीं हैं तो विजय डगमग होती है। जिस समय विजय हलचल में आती है, तो चेक करना कि चारों तरफ से कौन-सा तरफ हलचल में है? बापदादा देखते हैं कि कई बच्चों को बाप में पूरा निश्चय है, इसमें पास हैं लेकिन अपने आपमें जो निश्चय चाहिए उसमें अन्तर पड़ जाता है। जानते भी हैं, कहते भी हैं कि मैं ये हूँ, मैं ये हूँ, लेकिन जो जानते हैं, मानते हैं वो स्वरूप में, चलन में, कर्म में हो - इसमें ही अन्तर पड़ जाता है। एक तरफ सोचते हैं कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ, विश्व कल्याणकारी हूँ, दूसरे तरफ छोटी-सी परिस्थिति पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते हैं तो मास्टर सर्वशक्तिमान् लेकिन ये परिस्थिति बहुत बड़ी है, ये बात ही ऐसी है! तो क्या ये निश्चय है कि सिर्फ जानना है लेकिन मानकर चलना नहीं? कहते वा सोचते हैं कि मैं विश्व कल्याणकारी हूँ लेकिन विश्व को तो छोड़ो, स्व कल्याण में भी कमजोर होते हैं। अगर उस समय उन्हें कहो कि क्या स्वयं को परिवर्तन कर स्व कल्याणकारी नहीं बन सकते? तो जवाब देते हैं कि हैं तो विश्व कल्याणकारी लेकिन स्व कल्याण बहुत मुश्किल है! ये बात बदलना मुश्किल है! तो विश्व कल्याणकारी कहेंगे या कमजोर? तो स्व में भी परिस्थिति प्रमाण, समय प्रमाण, सम्बन्ध-सम्पर्क प्रमाण निश्चय स्वरूप में आये, ऐसे निश्चय बुद्धि की विजय हुई ही पड़ी है। जैसे सभी को ये पक्का निश्चय है कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, इसके लिए कोई दुनिया के वैज्ञानिक भी आपको हिलाने की कोशिश करें कि आत्मा नहीं शरीर हो, तो मानेंगे नहीं और ही उसको मनायेंगे। तो जैसे ये पक्का है कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ और कौन-सी आत्मा हूँ, ये भी पक्का है, ऐसे निश्चयबुद्धि की विजय भी इतनी निश्चित है। हार असम्भव है और विजय निश्चित है। और ये भी निश्चित है कि बातें भी अन्त तक आनी हैं। लेकिन उसमें विजयी बनने के लिए एक ही समय पर चारों ही तरफ का निश्चय पक्का चाहिये। तीन में निश्चय है और एक में नहीं है तो विजय निश्चित नहीं है लेकिन मेहनत से विजय होगी। निश्चित विजय वाले को मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

अर्थात् पुराने से रिश्ता नहीं, यही परिभाषा बोलते हो ना? फिर समय पर कहाँ से निकल आते हैं? टूटा हुआ रिश्ता जुड़ जाता है? मरे हुए से जिन्दा हो जाते हो? फ़रिश्ता अर्थात् पुराने से रिश्ता नहीं, सब नया। बापदादा ने देखा कि फ़रिश्ता बनने में जो रुकावट होती है उसका कारण एक पहली सीढ़ी है देह भान को छोड़ना, दूसरी सीढ़ी जो और सूक्ष्म है वो है देह अभिमान को छोड़ना। देह भान और देह अभिमान। देह भान फिर भी कॉमन चीज़ है लेकिन जितने ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा बनते हैं उतना देह अभिमान रुकावट डालता है। और अभिमान अनेक प्रकार का आता है-अपने बुद्धि का अभिमान, अपने श्रेष्ठ संस्कार का अभिमान, अपने अच्छे स्वभाव का अभिमान, अपनी विशेषताओं का अभिमान, अपनी कोई विशेष कला का अभिमान, अपनी सेवा की सफलता का अभिमान। ये सूक्ष्म अभिमान देह भान से भी बहुत महीन हैं। अभिमान का दरवाजा तो जानते हो ना? मैं-पन, मेरापन-ये है अभिमान के दरवाजे। तो फ़रिश्ता का अर्थ ये नहीं कि सिर्फ देह भान वा देह के आकर्षण से परे होना वा देह के स्थूल सम्बन्ध से परे होना, लेकिन फ़रिश्ता अर्थात् देह के सूक्ष्म अभिमान के सम्बन्ध से भी न्यारे होना। और अभिमान की निशानी-जहाँ अभिमान होता है वहाँ अपमान भी जल्दी फील होता है। जहाँ अभिमान होता है वहाँ अपमान की फीलिंग बहुत जल्दी होती है। क्योंकि 'मैं' और 'मेरे' के दरवाजे खुले हुए होते हैं। फ़रिश्ते का यथार्थ स्वरूप है देह भान और देह के सम्बन्ध से, देह अभिमान से न्यारा।

(23.12.1994)

निश्चय का फाउण्डेशन चारों ओर से मजबूत है या चारों ओर के बजाय कभी एक और कभी दो ओर ढीले हो जाते हैं? कोई भी चीज को मजबूत किया जाता है तो चारों ओर से टाइट किया जाता है ना। अगर एक साइड भी थोड़ा-सा हलचल वाला हो तो हिलेगा ना! तो चारों प्रकार का निश्चय अर्थात् बाप में, आप में, ड्रामा में और ब्राह्मण परिवार में निश्चय। ये चार ही तरफ के निश्चय को

समझ लो कि कनेक्शन कहाँ लूज हुआ है। तब निर्बलता आई है। क्यों हुआ, क्या हुआ यह नहीं सोचो। कयों क्या के बजाए कनेक्शन को ही ठीक कर दो तो खत्म। सहयोग के लिए समय भल लो। योग का वायुमण्डल वायब्रेशन बनाने के लिए सहयोग भल लो, बाकी और व्यर्थ बातें करना वा विस्तार में जाना इसके लिए कोई का साथ न लो। वह हो जायेगा शुभचिन्तक। और वह हो जायेगा परचिन्तन। सब समस्याओं का मूल कारण कनेक्शन लूज होना है। है ही यह एक बात। मेरा पार्ट ड्रामा में नहीं है, मेरे को सहयोग नहीं मिला, मेरे को स्थान नहीं मिला। यह सब फालतू बातें हैं। सब मिल जावेगा सिर्फ कनेक्शन को ठीक करो तो सर्व शक्तियाँ आपके आगे घूमेंगी। कहाँ जाने की फुर्सत ही नहीं होगी। बापदादा के सामने जाकर बैठ जाओ तो कनेक्शन जोड़ने के लिए बापदादा आपके सहयोगी बन जायेंगे। अगर एक दो सेकेण्ड अनुभव न भी हो तो कनफ्यूज न हो जाओ। थोड़ा सा जो टूटा हुआ कनेक्शन है उसको जोड़ने में एक सेकेण्ड वा मिनट लग भी जाता है तो हिम्मत नहीं हारो। निश्चय के फाउन्डेशन को हिलाओ नहीं। और ही निश्चय को परिपक्व करो। 'बाबा मेरा मैं बाबा का', इसी आधार से निश्चय की फाउन्डेशन को और ही पक्का करो। बाप को भी अपने निश्चय के बन्धन में बाँध सकते हो। बाप भी जा नहीं सकते। इतनी अथार्टी इस समय बच्चों को मिली हुई है। अथार्टी को, नालेज को यूज करो। परिवार के सहयोग को यूज करो। कम्पलेन्ट लेकर नहीं जाओ सहयोग की भी माँग नहीं करो। प्रोग्राम सेट करो, कमजोर होकर नहीं जाओ, क्या करूँ, कैसे करूँ, घबरा के नहीं जाओ। लेकिन सम्बन्ध के आधार से सहयोग के आधार से जाओ। समझा सेकेण्ड में सीढ़ी नीचे, सेकेण्ड में ऊपर यह संस्कार चेन्ज करो।

दीदी से : वैरायटी देख करके खुशी होती है ना। फिर भी अच्छी हिम्मत वाले हैं। अपना सब कुछ चेन्ज करना और दूसरे को अपना बनाना यह भी इन्हों को हिम्मत है। इतना ट्रान्सफर हो गये हैं जो अपने ही परिवार के लगते हैं यह भी ड्रामा में इन्हों का विशेष पार्ट है। अपने पन की भासना से ही यह आगे बढ़ते हैं। एक-

एक को देख करके खुशी होती है। पहले तो थे एक ही भारत की अनेक लकड़ियों का एक वृक्ष। लेकिन अभी विश्व के चारों कोनो से अनेक संस्कार, अनेक भाषायें, अनेक खानपान, सब आत्मायें एक वृक्ष के बन गये हैं यह भी तो वन्डर है। यही कमाल है जो सब एक थे और है और होंगे। ऐसा ही अनुभव करते हैं। विशेष सर्व का स्नेह प्राप्त हो ही जाता है।

(29.03.1981)

इस वर्ष ऐसा कोई नया प्लैन बनाओ जैसे मोहजीत परिवार की कहानी सुनाते हैं कि जिस भी सम्बन्धी के पास गया उसको ज्ञान सुनाया, तो यहाँ भी आप बच्चों से जब भी कोई मिलने आये तो उसको यही अनुभव हो कि - मैं कोई फरिश्ते से मिल रहा हूँ। आने से ही उस जादू लग जाए। जहाँ जाए जिससे मिले उससे जादू का ही अनुभव करे। जैसे शुरु-शुरु में बाप को देखा, मुरली सुनी, परिवार को देखा तो मस्त हो जाता था, ऐसे अभी भी जो सोचकर आवे उससे पदमगुणा अनुभव करके जाए। ऐसा अब प्लैन बनाओ। दृढ़ संकल्प से सब कुछ हो सकता है। अगर एक ऐसा अनुभव करायेगा तो सब उसके फालो करेंगे।

(05.04.1981)

ऐसे की दृष्टि में भी सदा सुप्रीम रूह समाय हुआ होगा। वह बाप की दृष्टि में और बाप उनकी दृष्टि में समाया हुआ होगा। ऐसे रूह गुलाब को को देह वा देह की दुनिया वा पुरानी देह की दुनिया की वस्तु, व्यक्ति देखते हुए भी नहीं दिखाई देंगे। देह द्वारा बोल रहा हूँ लेकिन देखता रूह को है, बोलता रूह से है।

क्योंकि उनके नयनों की दुनिया में सदा रूहानी दुनिया है, फरिश्तों की दुनिया है, देवताओं की दुनिया है। सदा रूहानी सेवा में रहते। दिन है वा रात है लेकिन उनके लिए सदा रूहानी सेवा है। ऐसे रूहे गुलाब की सदा रूहानी भावना रहती कि सर्व रूहें हमारे समान वर्से के अधिकारी बन जाएँ। परवश, आत्माओं

करेन्ट की तारें लगा दो, जो उन्हों को स्मृति आ जाये। अच्छा!

(18.02.1994)

जो स्वभाव, संस्कार, सम्बन्ध, सम्पर्क में हल्का होगा उसकी निशानी-वो सर्व के प्यारे और न्यारे होंगे। क्योंकि ब्राह्मण स्वभाव है, अलग स्वभाव नहीं। ब्राह्मण अर्थात् सबके दिल पसन्द स्वभाव-संस्कार वा सम्बन्ध-सम्पर्क वाले हो। मैजारिटी 95 परसेन्ट के दिलपसन्द जरूर हो-इतनी रिज़ल्ट जरूर होनी चाहिये। 5 परसेन्ट अभी भी मार्जिन दे रहे हैं, अन्त तक नहीं है लेकिन अभी दे रहे हैं। 95 परसेन्ट सर्व के दिल पसन्द अर्थात् सर्व से लाइट। और वो हल्कापन बोल, कर्म और वृत्ति से अनुभव हो। ऐसे नहीं, मैं तो हल्का हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं समझते, पहचानते नहीं। अगर नहीं पहचानते तो आप अपने विल पॉवर से उन्हों को भी पहचान दो। आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करे। इसमें सिर्फ परिवर्तन करने में सहनशक्ति की आवश्यकता होती है। और फ़रिश्ता अर्थात् जिसका पुरानी देह और पुरानी दुनिया से रिश्ता नहीं। ये सभी को याद है ना? कि अभी भी वो रहा हुआ है? पुरानी देह से लगाव है क्या? देह के सम्बन्ध से हल्के हो गये हो कि नहीं? काका, चाचा, मामा, उससे न्यारे हो गये हो ना? कि अभी भी हैं? न्यारे और प्यारे हैं? प्यारे हैं लेकिन न्यारे होकरके प्यारे बनते हैं, ये ग़लती हो जाती है। ये मिस हो जाता है। या तो न्यारे हो जाना सहज लगता है या तो प्यारा होना सहज लगता। लेकिन ये देह के सम्बन्ध काका, चाचा, मामा, ये फिर भी सहज हैं। सहज हैं या थोड़ा-थोड़ा स्वप्न में, संकल्प में आ जाता है? जब ब्राह्मण परिवार में कोई परिस्थिति आती है तो चाचा, काका, मामा याद आते हैं? बापदादा देखते हैं कि परिस्थिति के समय कई आत्माओं को ब्राह्मण परिवार के बजाय लौकिक सम्बन्ध जल्दी स्मृति में आता है। परिस्थिति किनारे के बजाय सहारा अनुभव कराती है। जब मरजीवा बन गये तो अगले जन्म के सम्बन्धी काका, चाचा, माँ, बाप, याद हैं क्या? स्वप्न में भी आते हैं क्या? तो सम्बन्ध, जन्म बदल गया ना। तो फ़रिश्ता

कोई-कोई चिन्ता रहती है? अगर सब बाप के हवाले कर दिया तो निश्चिन्त होंगे। अपने ऊपर बोझ रखा तो निश्चिन्त नहीं होंगे, फिर चिन्ता ज़रूर होगी। मेरी ज़िम्मेवारी है, मेरी फर्ज-अदाई है, मेरापन आना माना चिन्ता। अगर फर्ज है या ज़िम्मेवारी है तो बेहद की है, हद की नहीं। विश्व की है। दो-चार की नहीं। अपने को अभी जगत माता समझती हो कि चार-पांच बच्चे, पोत्रे पोत्रियों की मातायें हो? किसी आत्मा को भी देखेंगे तो क्या लगता है? यह हमारा परिवार है? कि सिर्फ लौकिक को अपना परिवार समझते हो? बेहद परिवार के हैं। बाप की सहयोगी आत्मायें हैं। बेहद का नशा है ना, कि कभी हद का, कभी बेहद का? जैसे बाप वैसे बच्चे होते हैं तो बाप बेहद का बाप है तो बच्चे भी बेहद के हुए ना। तो क्या याद रखेंगे? हम अधिकारी आत्मायें हैं। सिर्फ वर्से के नहीं, वरदानों के भी-डबल अधिकार है। वरदान भी देखो कितने मिलते हैं! रोज़ वरदान मिलता है ना! तो वरदानों से भी झोली भरते हो और वर्से से भी झोली भरते हो। इसलिये सदा भरपूर रहते हो, खाली नहीं। सदा यह स्मृति रखो कि अनेक बार की अधिकारी आत्मायें हैं।

(01.02.1994)

दुनिया वाले कहते हैं छोटा परिवार सुखी परिवार और यहाँ कहते हैं बड़ा परिवार, सुखी परिवार। सभी अच्छी मेहनत करते हैं। 'मेहनत' शब्द के बजाय, अच्छी सेवा करते हो। 'मेहनत' शब्द थोड़ा अच्छा नहीं लगता। सेवा द्वारा प्रत्यक्षफल खा रहे हो। डॉयलॉग अच्छा हुआ ना? (इस बार 'आबू डॉयलॉग' के नाम से रिट्रीट का कार्यक्रम रखा गया था) सेवा से सभी खुश हैं? सब आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते ही रहेंगे। बुद्धि अच्छी चलाते हो। अब ऐसा प्लैन बनाओ जो कोई भी आत्मा ब्राह्मण परिवार से किनारे नहीं हो जाये। किले को ऐसा मज़बूत करना पड़े जो कोई जा ही नहीं सके। अभी फिर भी सुनते हैं अच्छे-अच्छे चले गये, क्यों चले गये, कहाँ चले गये? तो ऐसा किला मज़बूत करो तो जो कोई सोचे तो भी जा नहीं सके। जैसे चारों ओर करेन्ट की तारें लगा देते हैं ना तो आप भी वायब्रेशन द्वारा

को बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्तियों का सहयोग दे उन्हों को भी अनुभव करावें। किसी की भी कमजोरी और कमी को नहीं देखेंगे। अपने धारण किये हुए गुणों का, शक्तियों का सहयोग देने वाला दाता बनेंगे। ब्राह्मण परिवार के लिए सहयोगी, अन्य आत्माओं के लिए महादानी। यह ऐसा है, यह भावना नहीं। लकिन इसको भी बाप समान बनाऊं, यह शुभ भावना। साथ साथ यही श्रेष्ठ कामना। यह सर्व आत्मायें कंगाल दुखी, अशान्त से सदा शान्त, सुख-रूप मालामाल बन जाएँ। सदा स्मृति में एक ही धुन होगी कि विश्व परिवर्तन जल्दी से जल्दी कैसे हों। इसको कहा जाता है 'रूहे गुलाब'।

(13.04.1981)

हर आत्मा एक बाप की सन्तान होने के कारण भाई-भाई लगती है। हर आत्मा के प्रति यही शुभभावना, शुभ कामना इमर्ज रूप में रहती है कि यह सर्व आत्मायें सदा सुखी और शान्त हो जायें। बेहद का परिवार और बेहद का स्नेह होता। हद में दु:ख होता है, बेहद में दु:ख नहीं होता। क्योंकि बेहद में आने से बेहद का सम्बन्ध, बेहद का ज्ञान, बेहद की वृत्ति, बेहद का रूहानी स्नेह दु:ख को समाप्त कर सुख स्वरूप बना देते हैं। रूहानी नालेज के कारण हर आत्मा की कर्म कहानी के पार्ट के संस्कारों की लाइट और माइट होने के कारण जो भी देखेंगे, सुनेंगे, सम्पर्क में, सम्बन्ध में आयेंगे, हर कर्म में अति न्यारे और अति प्यारे होंगे। न्यारे और प्यारे बनने की समान्ता होगी। किस समय प्यारा बनना है, किस समय न्यारा बनना है - यह पार्ट बजाने की विशेषता आत्मा को सदा सुखी और शान्त बना देती है। रूहानी सम्बन्ध होने के कारण बुद्धि एकाग्रता के कारण निर्णय शक्ति, समाने की शक्ति, सामना करने की शक्ति, सर्व शक्तियाँ हर आत्मा के पार्ट और अपने पार्ट को अच्छी तरह से जानकर पार्ट में आते हैं। इसलिए अचल और साक्षी रहते हैं। ऐसी तकदीरवान आत्मा हर संकल्प और कर्म को, हर बात को त्रिकालदर्शी की स्थिति में स्थित हो देखती है। इसलिए क्वेश्चन मार्क समाप्त हो

जाता। यह क्यों, यह क्या, यह क्वेश्चन मार्क है। सदा फुल स्टाप। सभी को तीन बिन्दी का तिलक लगा हुआ है ना? उसमें आश्चर्य नहीं लगता। नथिंग न्यू। क्या हुआ। नहीं, क्या करना है। यह है नम्बरवन तकदीरवान।

सतयुग के आदि की संख्या अपनी ऑखों से देखेंगे वा नहीं। वा स्वप्न में देखेंगे, वा समाचार पत्रों में सुनेंगे - क्या होगा? अभी तो एक हजार को भी रख नही सकते हो, फिर कहाँ रखेंगे। सब ब्राह्मण परिवार है। जिस दिन सब मधुबन भूमि पर इक्ट्ठे हो जायेंगे फिरतो हलचल शुरू हो जायेगी। संगठन का चित्र तो दिखाया है ना। कि सभी ने अंगुली दी। सूक्ष्म में तो देते ही हो लेकिन इतना बड़ा परिवार है, परिवार को देखना तो चाहिए ना। इसका प्लैन बनाया है। सतयुग में तो सिर्फ आपकी प्रजा होगी यहाँ तो आपके भक्त भी आयेंगे। डबल वंशावली होगी। जब भक्तों को पता पड़ेगा कि हमारे इष्ट इक्ट्ठे हो गये हैं तो क्या करेंगे? वह भी पूछेंगे नहीं। पहुँच जायेंगे। जैसे अभी भी कई पहुँच जाते हैं ना। भक्त तो होते ही चात्रक हैं।

(15.04.1981)

बापदादा को सभी बच्चे अति प्रिय हैं। क्योंकि बापदादा ने विशेषताओं के आधार पर ड्रामा अनुसार चुनकर इस ब्राह्मण परिवार के गुलदस्ते में लाया है। यह चैतन्य फूलों का गुलदस्ता है ना। हरेक फूल की विशेषता रंग-रूप अपना-अपना होता है। किसमें खुशबू ज्यादा होगी, किसका रंग रूप गुलदस्ते को सजाने वाला होगा लेकिन है तो दोनों ही आवश्यक। सिर्फ गुलाब के फूलों का गुलदस्ता बनाओ और वैरायटी का बनाओ, तो सुन्दर क्या लगेगा? वैरायटी भी चाहिए। लेकिन गुलाब के फूलों को तो सदा बीच में डालेंगे और वैरायटी फूलों को किनारे पर डालेंगे। तो मैं कौन हूँ? वह हरेक अपने आपको जानता है। बापदादा के बेहद के गुलदस्ते के अन्दर मेरा स्थान कहां है, वह भी जानते हो- क्योंकि गुलदस्ते के

चिल्लाती हैं? तो जब मर्सी, रहम मांगते हैं तो आप लोगों को उनके रहम की पुकार पहुँचती तो है ना! ये छोटी-छोटी आपदायें और तड़पाती हैं। ब्राह्मण सम्पन्न हो जाओ तो दु:ख की दुनिया सम्पन्न हो जाये। तो रहम पड़ता है या नहीं? रहम पड़ता है तो फिर क्या करते हो? फिर भी ईश्वरीय परिवार के हैं ना। तो परिवार का कोई भी दु:ख, सुख में परिवर्तन करने का संकल्प तो आता है ना। कोई परिवार में बीमार भी हो तो क्या संकल्प होता है? जल्दी ठीक हो जाये। तो चिल्लाते-चिल्लाते मरना और एकधक से परिवर्तन होना, फ़र्क तो है ना। महाविनाश और रिहर्सल का विनाश, फ़र्क है। महाविनाश अर्थात् महान् परिवर्तन। उसके निमित्त आप हो। सम्पन्न बनेंगे तो समाप्ति होगी। तो जो परेशान हैं वो तो समझते हैं कि प्रत्यक्षता का पर्दा खुल जाये, लेकिन स्टेज पर आने वाले हीरो एक्टर सम्पन्न तैयार होने चाहिये ना, तब तो पर्दा खुलेगा कि आधे में खुल जायेगा? परिवर्तन की शुभ भावना को तीव्र करना अर्थात् अपने को तीव्र गति से सम्पन्न बनाना। आप भी कभी कैसे, कभी कैसे होते हो तो प्रकृति भी कभी बहुत तीव्र गति से कार्य करती, कभी ठण्डी हो जाती। तो अभी क्या करना है? रहम की भावना इमर्ज करो, चाहे स्व प्रति, चाहे सर्व आत्माओं के प्रति। होती है ना! लहर फैलाओ। रहम की भावना से विघ्न भी सहज खत्म हो जायेंगे। जहाँ रहम होगा, वहाँ तेरा-मेरा की हलचल नहीं होगी। पूज्य स्वरूप, मर्सीफुल का धारण करो। ठीक है ना। अभी ये लहर फैलाओ। हर संकल्प में मर्सीफुल। संकल्प में होंगे तो वाणी और कर्म स्वत: ही हो जायेंगे। सब चिल्लाते भी क्या हैं? मर्सी-मर्सी। अच्छा!

(25.01.1994)

आप जैसी खुशी किसके पास है? निश्चिन्त हो गये, कोई चिन्ता है क्या? पता नहीं, क्या होगा-ये चिन्ता है? निश्चिन्त हैं। क्योंकि अविनाशी अधिकार निश्चित ही है। तो जहाँ निश्चित होता है वहाँ निश्चिन्त होते हैं। कोई भी बात निश्चित नहीं होती है तो उसकी चिन्ता रहती है, पता नहीं क्या होगा! मातायें सभी निश्चिन्त है कि

प्रति शुभ भावना नहीं भी हो लेकिन आपकी शुभ भावना उनको फल दे देती है। ऐसे नहीं सोचो कि इतना कुछ सेवा की लेकिन फल तो मिला ही नहीं। लेकिन फल एक जैसे नहीं होते। कोई सीज़न का फल होता है, कोई सदा का फल होता है। तो सीज़न का फल सीज़न पर ही फल देगा ना। तो आपने शुभ भावना का बीज डाला, अगर सीज़न का फल होगा तो सीज़न में निकलेगा ही। वैसे भी देखो जो खेती का काम करते हैं, तो जो सीज़न पर चीज़ निकलने वाली होती है तो ये नहीं सोचते हैं कि 6 मास के बाद ये निकलेगा इसलिये बीज डालो ही नहीं। तो आप भी बीज डालते चलो। समय पर सर्व आत्माओं को जगना ही है। आपकी रहम भावना, शुभ भावना फल अवश्य देगी। अगर कोई आपोजिशन भी करता है तो भी आपको अपने रहम की भावना छोड़नी नहीं है और ही सोचो कि ये आपोजिशन या इन्सल्ट, गालियां-ये खाद का काम करेंगी। तो खाद पड़ने से अच्छा फल निकलेगा। जितनी गालियां देंगे, उतना आपके गुण गायेंगे। इसलिये हर आत्मा को दाता बन देते जाओ। अच्छा माने तो दें, नहीं। ये तो लेवता हो गये? लेने की इच्छा नहीं रखो कि वो अच्छा बोले, अच्छा माने तो दें। नहीं। इसको कहा जाता है दाता के बच्चे मास्टर दाता। चाहे वृत्ति द्वारा, चाहे वायब्रेशन्स द्वारा, चाहे वाणी द्वारा देते जाओ। इतने भरपूर हो ना? सब ख़ज़ाने हैं?

(18.01.1994)

आप ब्राह्मण जितने सम्पन्न बनते जायेंगे उतना भविष्य में प्रकृति भी प्रगति को प्राप्त करेगी क्योंकि प्रकृति समय प्रति समय अपना सिग्नल दिखा रही है। तो जितनी प्रकृति की हलचल उतनी अचल स्थिति प्रकृति को परिवर्तन करेगी। कितनी आत्मायें समय प्रति समय दु:ख की लहर में आती है। तो ऐसे दु:खी आत्माओं का सहारा तो बाप और आप ही हो। तो रहम पड़ता है ना। जब समाचार सुनते हो तो क्या दिल में आता है? नथिंग न्यू-अपनी अचल स्थिति के लिये तो ठीक है लेकिन प्रकृति की हलचल से जब आत्मायें चिल्लाती हैं तो किसको

अन्दर तो हो ना। यह तो पक्का है तब मधुबन के अन्दर आये हो।

(09.10.1981)

आज ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा अपने तारामण्डल को देखने आये हैं। सितारों के बीच ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा दोनों ही साथ में आये हैं। वैसे साकार सृष्टि में सूर्य, चन्द्रमा और साथ-साथ में सितारे इकट्ठे नहीं होते हैं। लेकिन चैतन्य सितारे, सूर्य और चांद के साथ हैं। यह सितारों का अलौकिक संगठन है। तो आज बापदादा भिन्न-भिन्न सितारों को देख रहें हैं। हर सितारे में अपनी-अपनी विशेषता है। छोटे-छोटे सितारे भी इस तारा मण्डल को बहुत अच्छा शोभनीक बना रहें हैं। बड़े तो बड़े हैं ही लेकिन छोटों की चमक से संगठन की शोभा बढ़ रहीं है। बापदादा यही बात देख देख हर्षित हो रहें हैं कि हरेक सितारा कितना आवश्यक है। छोटे से छोटा सितारा भी अति आवश्यक है। महत्वपूर्ण कार्य करने वाला है, तो आज बापदादा हरेक के महत्व को देख रहें थे। जैसे हद के परिवार मे माँ बाप हर बच्चे के गुणों की, कर्तव्यों की, चाल-चलन की बातें करते हैं वैसे बेहद के माँ-बाप, ज्ञान सूर्य और चन्द्रमा, बेहद के परिवार वा सर्व सितारों के विशेषताओं की बातें कर रहे थे। ब्रह्मा बाप वा चन्द्रमा आज चारों ओर विश्व के कोने-कोने में चमकते हुए अपने सितारों को देख-देख खुशी में विशेष झूम रहे थे। ज्ञान सूर्य बाप को हर सितारे की आवश्यकता और विशेषता सुनाते हुए इतना हर्षित हो रहे थे कि बात मत पूछो। उस समय का चित्र बुद्धियोग की कैमरा से खींच सकते हो। साकार में जिन्होने अनुभव किया वह तो अच्छी तरह से जान सकते हैं। चेहरा सामने आ गया ना? क्या दिखाई दे रहा है? इतना हर्षित हो रहे हो जो नयनों में मोती चमक रहें हैं। आज जैसे जौहरी हर रत्न की महिमा कर रहें थे। आप समझते हो कि आप सबकी क्या महिमा की होगी? अपने महानता की महिमा जानते हो?

सभी की विशेष एक बात की विशेषता वा महानता बहुत स्पष्ट है, जो कोई भी महारथी हो, वा प्यादा हो, छोटा सितारा हो वा बड़ा सितारा हो, लेकिन

बाप को जानने की विशेषता, बाप का बनने की विशेषता, यह तो सब में है ना। बाप को बड़े-बड़े शास्त्रों की अथार्टी, धर्म के अथार्टी, विज्ञान के अथार्टी, राज्य के अथार्टी, बड़े-बड़े विनाशी टाइटल्स के अथार्टीज, उन्होने नहीं जाना, लेकिन आप सबने जाना। वे अब तक आह्वान ही कर रहें हैं। शास्त्रवादी तो अभी हिसाब ही लगा रहें हैं। विज्ञानी अपनी इन्वेन्शन में इतने लगे हुए हैं जो बाप की बातें सुनने और समझने की फुर्सत नहीं है। आपने ही कार्य में मगन हैं। राज्य की अथार्टीज अपने राज्य की कुर्सी को सम्भालने में बिजी हैं। फुर्सत ही नहीं है। धर्मनेतायें अपने धर्म को सम्भालने में बिजी हैं कि कहां हमारा धर्म प्राय:लोप न हो जाए। इसी हमारे-हमारे में खूब बिजी है। लेकिन आप सब आह्वान के बदले मिलन मनाने वाले हो। यह विशेषता वा महानता सभी की है। ऐसे तो नही समझते हो हमारे में क्या विशेषता है, वा हमारे में तो कोई गुण नहीं है। यह तो भक्तों के बोल हैं कि हमारे में कोई गुण नहीं। गुणों के सागर बाप के बच्चे बनना अर्थात् गुणवान बनना। तो हरेक में किसी न किसी गुण की विशेषता है। और बाप उसी विशेषता को देखते हैं। बाप जानते हैं-जैसे राज्य परिवार के हर व्यक्ति में इतनी सम्पन्नता जरूर होती है जो वह भिखारी नहीं हो सकता। ऐसे गुणों के सागर बाप के बच्चे कोई भी गुण की विशेषता के बिना बच्चा कहला नहीं सकते। तो सभी गुणवान हो, महान हो, विशेष आत्माये हो, चैतन्य तारामण्डल का श्रृंगार हो। तो समझा आप सब कौन हो? निर्बल नहीं हो, बलवान हो। क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान हो। ऐसा रूहानी नशा सदा रहता है? रूहानियत में अभिमान नहीं होता है। स्वमान होता है। स्वमान अर्थात स्व-आत्मा का मान।

(19.10.1981)

सभी ब्राह्मण आत्मायें अपने को आदि सनातन प्राचीन धर्म की श्रेष्ठ आत्मायें अर्थात् धर्मात्मा मानते ही हो। तो, हे धर्मात्मायें, आप सबका पहला धर्म अर्थात् धारणा है ही स्व के प्रति, ब्राह्मण परिवार के प्रति और विश्व की सर्व

अलौकिक परिवार सन्तुष्ट। तो तीनों सर्टीफिकेट हैं कि लेना है? जैसे साइन्स के साधनों का वायुमण्डल में प्रभाव पड़ता है ना, एयरकण्डीशन चलता है तो वायुमण्डल में ठण्डाई का प्रभाव पड़ता है, ऐसे ही योगी जीवन का प्रभाव होता है। ऐसा प्रभाव है? योग माना साइलेन्स की शक्ति। इसको कहा जाता है योगी जीवन अर्थात् साइलेन्स की शक्ति वाली जीवन। तो ऐसे है कि हाँ-हाँ करते रहते हो? हर रोज़ की चेकिंग हो। चेक करेंगे तो चेंज होंगे। अच्छा!

(10.01.1994)

फल की इच्छा छोड़ रहमदिल वन शुभ भावना का वीज डालते चलो

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि प्राण चले जायें लेकिन खुशी नहीं जाये। इसलिये खुशी को कभी भी किनारे नहीं रखो और ही महादानी बनो। क्योंकि वर्तमान समय और कुछ भी मिल सकता है लेकिन सच्ची खुशी नहीं मिल सकती। अल्पकाल की खुशी प्राप्त करने के लिये लोग कितना समय वा धन खर्च करते हैं फिर भी सच्ची खुशी नहीं मिलती। तो ऐसे आवश्यकता के समय आप आत्माओं को महादानी बनना है। कैसी भी अशान्त आत्मा, दु:खी आत्मा हो अगर उसको खुशी की अनुभूति करा दो तो कितनी दिल से दुआयें देगी। आप दाता के बच्चे हो तो फ्राकदिली से बांटो। बांटना तो आता है ना? तो क्यों नहीं बांटते हो? समय को देख रहे हो? दिल से रहम आना चाहिये। जो अशान्ति-दु:ख में भटक रहे हैं वो आपका परिवार है ना। परिवार को सहयोग दिया जाता है ना। तो वर्तमान समय महादानी बनने के लिये विशेष रहमदिल के गुण को इमर्ज करो। आपके जड़ चित्र वरदान दे रहे हैं। तो आप भी चैतन्य में रहम दिल बन बांटते जाओ। क्योंकि परवश आत्मायें हैं। कभी भी ये नहीं सोचो कि ये तो सुनने वाले नहीं हैं, ये तो चलने वाले नहीं हैं। नहीं, आप रहमदिल बनो, देते जाओ। गाया हुआ है कि भावना का फल मिलता है। तो चाहे आत्माओं में ज्ञान के प्रति, योग के

बेहद। सर्व के प्यारे। चाहे कैसी भी आत्मा हो, लेकिन आप सर्व के प्यारे हो। जो प्यार करे उसके प्यारे हो, ये नहीं। सर्व के प्यारे। लड़ाई करने वाले, कुछ बोलने वाले प्यारे नहीं। ऐसे नहीं, सर्व के प्यारे। आप लोगों ने द्वापर से बाप को कितनी गाली दी, फिर बाप ने प्यार किया या घृणा की? प्यार किया ना। तो फ़ालो फ़ादर। कैसी भी आत्मायें हो लेकिन अपनी दृष्टि, अपनी भावना प्यार की हो-इसको कहा जाता है सर्व के प्यारे। 12 के प्यारे हैं, एक के प्यारे नहीं। नहीं, सर्व के प्यारे। ऐसे है या किसी आत्मा के प्रति थोड़ा-थोड़ा आ जाता है? कोई थोड़ा इन्सल्ट करते हैं, कोई घृणा करते हैं तो प्यार आता है या घृणा आती है? नहीं, परवश आत्मायें है। सर्व के प्यारे-इसको कहा जाता है फ़रिश्ता। कोई-कोई के प्यारे हैं तो फरिश्ते नहीं।

कर्मयोगी आत्मा का हर कर्म योगयुक्त, युक्तियुक्त होगा। अगर कोई भी कर्म युक्तियुक्त नहीं होता तो समझो कि योगयुक्त नहीं है। अगर साधारण कर्म होता, व्यर्थ कर्म हो जाता तो भी निरन्तर योगी नहीं कहेंगे। कर्मयोगी अर्थात् हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर बोल सदा श्रेष्ठ है। तो सहज योगी अर्थात् कर्मयोगी और कर्मयोगी अर्थात् सहजयोगी। तो चेक करो कि सारे दिन में कोई साधारण कर्म तो नहीं होता? श्रेष्ठ हुआ? श्रेष्ठ कर्म की निशानी होगी-स्वयं सन्तुष्ट और दूसरे भी सन्तुष्ट। ऐसे नहीं-मैं तो सन्तुष्ट हूँ, दूसरे हों या नहीं हो। योगी जीवन वाले का प्रभाव स्वत: दूसरों के ऊपर पड़ेगा। अगर कोई स्वयं से असन्तुष्ट है वा और उससे असन्तुष्ट रहते हैं तो समझना चाहिये कि योगयुक्त बनने में कोई कमी है। तो सभी सन्तुष्ट रहते हो कि अपने को खुश करते हो कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ? सभी सन्तुष्ट हैं या कोई सन्तुष्ट, कोई असन्तुष्ट? अपने से सन्तुष्ट रहते हो? कि कभी कोई कमज़ोरी आती है तो असन्तुष्ट होते हो? कभी होता है या सम्पूर्ण हो गये? सन्तुष्टता योगी जीवन का विशेष लक्ष्य है। तो आपके साथियों से पूछे कि सन्तुष्ट हैं या नहीं हैं? वो हाँ कहेंगे या थोड़ी शक्ल ऐसी करेंगे? क्योंकि योगी जीवन के तीन सर्टीफिकेट हैं-एक-स्व से सन्तुष्ट और दूसरा-बाप सन्तुष्ट और तीसरा-लौकिक-

आत्माओं के प्रति दया भाव और कृपा दृष्टि। तो अपने आप से पूछो कि सदा दया की भावना और कृपा दृष्टि। तो अपने आप से पूछो कि सदा दया की भावना और कृपा दृष्टि सर्व के प्रति रहती है वा नम्बरवार रहती है? दया भाव वा कृपा दृष्टि किस पर करनी होती है? जो कमज़ोर आत्मा है, अप्राप्त आत्मा है, किसी-न-किसी बात के वशीभूत आत्मा है-ऐसी आत्मायें दया वा कृपा की इच्छा रखती हैं वा उनकी इच्छा न भी हो तो आप दाता के बच्चे उन आत्माओं को शुभ-इच्छा से देने वाले हो। सारे दिन में जिन भी आत्माओं के सम्पर्क में आते हो, चाहे ज्ञानी, चाहे अज्ञानी, सबके प्रति सदा यही दृष्टि रहती है वा दूसरी-दूसरी दृष्टि भी रहती है? चाहे कोई कैसा भी संस्कार वाला हो लेकिन या दया वा कृपा की भावना वा दृष्टि पत्थर को भी पानी कर सकती है। अपोज़ीशन वाले अपनी पोज़ीशन में टिक सकते हैं। स्वभाव के टक्कर खाने वाले ठाकुर बन सकते हैं। क्रोध-अग्नि, योग-ज्वाला बन जायेगी। अनेक जन्मों के कड़े हिसाब-किताब सेकण्ड में समाप्त हो नया सम्बन्ध जुट जायेगा। कितना भी विरोधी है-वह इस विधि से गले मिलने वाले हो जायेंगे। लेकिन इन सबका आधार है- 'दया भाव'। दया भाव की आवश्यकता ऐसी परिस्थिति और ऐसे समय में है! समय पर नहीं किया तो क्या मास्टर दया के सागर कहलायेंगे? जिसमें दया भाव होगा वह सदा निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी होगा। मंसा निराकारी, वाचा निर्विकारी, कर्मणा निरअहंकारी। इसको कहा जाता है दयालु और कृपालु आत्मा। तो, हे दया से भरपूर भण्डार आत्मायें, समय पर किसी आत्मा के प्रति दया भाव की अंचली भी नहीं दे सकते हो? भरपूर भण्डार से अंचली दे दो तो सारे ब्राह्मण परिवार की समस्यायें ही समाप्त हो जाएं। संस्कार तो आप सबके अनादि, आदि, अविनाशी दातापन के हैं। देवता अर्थात् देने वाला। संगम पर मास्टर दाता हो। आधाकल्प देवता देने वाले हो। द्वापर से भी आपके जड़ चित्र देने वाले देवता ही कहलाते हैं। तो सारे कल्प के संस्कार दातापन के हैं। ऐसे दातापन के संस्कार वाली, हे सम्पन्न आत्मायें, समय पर क्यों नहीं दाता बनते हो? लेने की भावना दाता के बच्चे कर नहीं सकते। यह दे तो मैं दूँ, यह देवता नहीं

लेवता हो गये। तो कौन-सी आत्मायें हो? देवता वा लेवता?

(22.10.1981)

मधुबन के आंगन में आज अनेक बच्चे फरिश्तों के रुप में हाजिर-नाजिर हैं। साकार रुप की सभा तो बहुत छोटी है लेकिन आकारी फरिश्तों की सभा बहुत बड़ी है। यह बड़ा हाल जो बना रहे हो वह भी छोटा है। सागर के बच्चों के आगे कितना भी बड़ा हाल बनाओ लेकिन सागर के समान हो जायेगा, फिर क्या करेंगे। आकाश और धरनी, इसी बेहद के हाल में समा सकते हो। बेहद बाप के बच्चे चार दीवारों की हद में कैसे समा सकते हैं। ऐसा भी समय आयेगा जब बेहद के हाल में यह चार तत्व चार दीवारों का काम करेंगे। कोई मौसम के नीचे ऊपर के कारण छत की वा दीवारों की आवश्यकता ही नहीं होगी। कहाँ तक बड़े हाल बनायेंगे। यह प्रकृति भविष्य की रिहर्सल आपको यहाँ ही अन्त में दिखायेगी। चारों ओर कितनी भी किसी तत्व द्वारा हलचल हो लेकिन जहाँ आप प्रकृति के मालिक होंगे वहाँ प्रकृति दासी बन सेवा करेगी। सिर्फ आप प्रकतिजीत बन जाओ। प्रकृति आप मालिकों का अब से आह्वान कर रही है। वह दिव्य दिवस जिसमें प्रकृति मालिकों को माला पहनायेगी, कौन सी माला पहनायेगी? चंदन की माला पहनेंगे वा हीरे रतनों की पहनेंगे? प्रकृति सहयोग की ही माला पहनायेगी। जहाँ आप प्रकृतिजीत ब्राह्मणों का पाँव होगा, स्थान होगा वहाँ कोई भी नुकसान हो नहीं सकता। एक दो मकान के आगे नुकसान होगा लेकिन आप सेफ होंगे। सामने दिखाई देगा यह हो रहा है, तूफान आ रहा है, धरनी हिल रही है लेकिन वहाँ सूली होगी, यहाँ काँटा होगा। वहाँ चिल्लाना होगा यहाँ अचल होंगे। सब आपके तरफ स्थूल-सूक्ष्म सहारा लेने के लिए भागेंगे। आपका स्थान एसलम बन जायेगा। तब सबके मुख से, 'अहो प्रभू, आपकी लीला अपरमपार है' यह बोल निकलेंगे। 'धन्य हो, धन्य हो। आप लोगों ने पाया, हमने नहीं जाना, गंवाया'। यह आवाज़ चारों ओर से आयेगा। फिर आप क्या करेंगे? विधाता के बच्चे विधाता और वरदाता बनेंगे। लेकिन इसमें भी

में जाकर थोड़ा फ़िक्र हो जाता है? वायुमण्डल में जाकर थोड़ा प्रभाव पड़ जाता है? वायुमण्डल का प्रभाव नहीं पड़ता? अपना प्रभाव वायुमण्डल पर डालो, वायुमण्डल का प्रभाव आपके ऊपर नहीं पड़े। क्योंकि वायुमण्डल रचना है, आप मास्टर रचता हो। वायुमण्डल बनाने वाला कौन? मनुष्यात्मा। तो रचता हो गया ना। तो रचता के ऊपर रचना का प्रभाव नहीं हो, लेकिन रचता का रचना के ऊपर प्रभाव हो। तो कोई भी बात आये तो यह याद करो कि मैं विजयी आत्मा हूँ।

(09.12.1992)

पवित्रता का अर्थ ही है-सदा संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में तीन बिन्दु का महत्व हर समय धारण करना। कोई भी ऐसी परिस्थिति आये तो सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने में स्वयं को सदा पहले ऑफर करो-मुझे करना है। ऐसी ऑफर करने वाले को तीन प्रकार की दुआएं मिलती हैं-(1) स्वयं को स्वयं की भी दुआएं मिलती हैं, खुशी मिलती है, (2) बाप द्वारा, (3) जो भी श्रेष्ठ आत्मायें ब्राह्मण परिवार की हैं उन्हों के द्वारा भी दुआएं मिलती हैं। तो मरना हुआ या पाना हुआ, क्या कहेंगे? पाया ना। तो फुल स्टॉप लगाने के पुरुषार्थ को वा कन्ट्रोलिंग पॉवर द्वारा परिवर्तन शक्ति को तीव्र गति से बढ़ाओ। अलबेलापन नहीं लाओ-ये तो होता ही है, ये तो चलना ही है. . . ये अलबेलेपन के संकल्प हैं। अलबेलापन परिवर्तन कर अलर्ट बन जाओ। अच्छा!

(23.12.1992)

फ़रिश्ता कितना प्यारा लगता है! अगर स्वप्न में भी किसके पास फ़रिश्ता आता है तो कितना खुश होते हैं। फ़रिश्ता जीवन अर्थात् सदा प्यारा जीवन। बाप प्यारे से प्यारा है ना तो बच्चे भी सदा सर्व के प्यारे से प्यारे हैं। सिर्फ बाल बच्चे, पोत्रे धोत्रों के प्यारे नहीं, हद के प्यारे नहीं, बेहद के प्यारे। क्योंकि सर्व आत्मायें आपका परिवार हैं, सिर्फ 10-12 का परिवार नहीं है। कितना बड़ा परिवार है?

सदा यह स्मृति में रहे। निश्चय भी है और विजय भी है। ये नशा हो कि हमारी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी। विजय है और सदा होगी। तो अटल निश्चय हो। टलने वाला नहीं हो, थोड़ी सी बात हुई और निश्चय अटल नहीं रहे, ऐसा निश्चय नहीं हो। अटल निश्चय तो अटल विजय होगी। विजय की भावी टल नहीं सकती। अटल है। तो ऐसे निश्चयबुद्धि सदा हर्षित रहेंगे, निश्चिंत रहेंगे। क्योंकि चिन्ता खुशी को खत्म करती है। और निश्चिन्त हैं तो खुशी सदा रहेगी। तो निश्चयबुद्धि की दूसरी निशानी है निश्चिन्त। नहीं तो थोड़ी बात भी होगी तो चिन्ता होगी कि ये क्या हुआ, ये ऐसा हुआ। इस क्यों क्या से भी निश्चिन्त। क्या, क्यों, कैसे-ये चिन्ता की लहर है। अभी बड़ी चिन्ता नहीं होगी, इस रूप में होगी। होना नहीं चहिये था, हो गया, ऐसा, वैसा, क्यों, क्या, कैसा, ये शब्द बदल जाते हैं। तो ऐसा है कि कभी-कभी क्वेश्चन मार्क होता है? कई कहते हैं ना कि मेरे पास ही ये क्यों होता है? मेरे से ही क्यों होता है? मेरे पीछे ये बंधन क्यों है, मेरे पीछे माया क्यों आती है, मेरा ही हिसाब किताब कड़ा है क्यों? तो 'क्यों' आना माना चिन्ता की लहर है। तो इस चिन्ताओं से भी परे-इसको कहा जाता है निश्चिन्त। तो कौन हो? निश्चिन्त हो या थोड़ी-थोड़ी क्यों, क्या है? निश्चिन्त आत्मा का सदा सलोगन है अच्छा हुआ, अच्छा है और अच्छा ही होना है। बुराई में भी अच्छाई अनुभव करेंगे। बुराई से भी अपना पाठ पढ़ लेंगे। बुराई को बुराई के रूप में नहीं देखेंगे। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त। 'चिन्ता' शब्द से भी अविद्या हो। जैसे गायन है ना इच्छा मात्रम अविद्या। ऐसे चिन्ता की भी अविद्या हो। चिन्ता क्या होती है-यह अनुभव नहीं हो। तो ऐसी अवस्था इसको कहा जाता है निश्चिन्त। कोई भी बात आये तो 'क्या होगा' नहीं आयेगा, फ़ौरन ही यह आयेगा 'अच्छा होगा', बीत गया अच्छा हुआ। जहाँ अच्छा है वहाँ सदा बेफ़िक्र बादशाह हैं। तो निश्चयबुद्धि का अर्थ है बेफ़िक्र बादशाह। तो ऐसे है या थोड़ा-थोड़ा फ़िक्र कभी आ जाता है? तो बेफ़िक्र बादशाह ही बाप समान है। बाप को फ़िक्र है क्या? इतना बड़ा परिवार होते भी फ़िक्र है क्या? सब कुछ जानते हुए, देखते हुए बेफ़िक्र। ऐसे बेफ़िक्र हो? मातायें बेफ़िक्र हो या प्रवृत्ति

एसलम लेने वाले भी स्वत: ही नम्बरवार होंगे। जो अब से अन्त तक वा स्थापना के आदि से अब तक भी सहयोग भाव में रहे हैं, विरोध भाव में नहीं रहे हैं, मानना न मानना अलग बात है लेकिन ईश्वरीय कार्य में वा ईश्वरीय परिवार के प्रति विरोध भाव के बजाए सहयोग का भाव, कार्य अच्छा है वा कार्यकर्ता अच्छे हैं, यही कार्य परिवर्तन कर सकता है, ऐसे भिन्न-भिन्न सहयोगी भावनायें वाले, ऐसे आवश्यता के समय इस भावना का फल नजदीक नम्बर में प्राप्त करेंगे अर्थात् एसलम के अधिकारी नम्बरवन बनेंगे। बाकी इस भावना में भी परसेन्टेज वाले उसी परसेन्ट प्रमाण एसलम की अंचली ले सकेंगे। बाकी देखने वाले देखते ही रह जायेंगे। जो अभी भी कहते हैं - देख लेंगे, तुम्हारा क्या कार्य है! वा देख लेंगे आपको क्या मिला है! जब कुछ होगा तब देखेंगे, ऐसे समय की इन्तजार करने वाले, एसलम के इन्तजाम के अधिकारी नहीं बन सकते। उस समय भी देखते ही रह जायेंगे। हमारी बारी कब आती है, इसी इन्तज़ार में ही रहेंगे और आप दूर में इन्तज़ार करने वाली आत्माओं को भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन, शुभ भावना, श्रेष्ठ बनने के कामना की किरणें चारों ओर की आत्माओं पर विश्व कल्याणकारी बन डालेंगे। फिर-कितनी भी विरोधी आत्मायें हैं, अपने पश्चाताप की अग्नि में स्वयं को जलता हुआ, बेचैन अनुभव करेंगी। और आप शीतला देवियाँ बन रहम, दया, कृपा की शीतल छीटों से विरोधी आत्माओं को भी शीतल बनायेंगी। अर्थात् सहारे के गले लगायेंगी। उस समय आपके भक्त बन 'ओ माँ, ओ माँ' पुकारते हुए विरोधी से बदल भक्त बन जायेंगे। यह हैं आपके लास्ट भक्त। तो विरोधी आत्माओं को भी अन्त में भक्तपन की अंचली जरुर देंगे। वरदानी बन 'भक्त भव' का वरदान देंगे। फिर भी हैं तो आपके भाई ना। तो ब्रदरहुड का नाता निभायेंगे, ऐसे वरदानी बने हो? जैसे प्रकृति आपका आह्वान कर रही है ऐसे आप सब भी अपने ऐसे सम्पन्न स्थिति का आह्वान कर रहे हो? यही दीपमाला मनाओ! वे तो लक्ष्मी का आह्वान करेंगे आप क्या आह्वान करेंगे? वे तो धन देवी का आह्वान करते हैं, आप सभी 'धनवान भव'

की स्थिति का आह्वान करो। ऐसी दीपमाला मनाओ। समझा-क्या करना है?

(27.10.1981)

एक-एक कुमारी विश्व-कल्याणकारी बनेगी। परिवार कल्याण वाली नहीं, विश्व कल्याण करने वाली। अगर कुमारी गृहस्थी हो गई तो परिवार -कल्याणकारी हो गई और ब्रह्माकुमारी बन गई तो विश्व कल्याणकारी हो गई। तो क्या बनने वाली हो? वैसे भी देखो कुमारियों का भक्तिकाल के अन्त में भी पूजन होता है। तो लास्ट तक भी इतनी श्रेष्ठ हो। कुमारी जीवन का बहुत महत्व है। कुमारियों को ब्राह्मण जीवन में लिफ्ट भी है। कुमारिएँ कितना जल्दी सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज बन जाती हैं। कुमारों को देरी से चाँस मिलता है। कुमारी अगर रेस में आगे जाए तो बहुत अपने को आगे बढ़ा सकती है। एक कुमारी अनेक सेवकेन्द्रों को सम्भाल सकती है। ड्रामा अनुसार यह लिफ्ट गिफ्ट की रीति से मिली हुई है। मेहनत नहीं की है। कुमारियों की विशेषता क्या है? कुमारी जीवन अर्थात् सम्पूर्ण पावन। अगर कुमारी जीवन में यह विशेषता नहीं तो उसका कोई महत्व नहीं। ब्रह्माकुमारी अर्थात् मंसा में भी अपवित्रता का संकल्प न हो। तभी पूज्य है, नहीं तो खण्डित हो जाती है और खण्डित की पूजा नहीं होती।

(29.10.1981)

माताओं को:- प्रवृति में रहते, एक बाप दूसरा न कोई इसी स्मृति में रहती हो, यह चेकिंग करती हो? क्योंकि प्रवृत्ति के वायुमण्डल में रहते, उस वायुमण्डल का असर न हो, सदा बाप के प्यारे रहें इसके लिए इसी बात की चेकिंग चाहिए। निमित्त मात्र प्रवृति है लेकिन बाप की याद में रहना। परिवार की सेवा का कितना भी पार्ट बजाना पड़े लेकिन ट्रस्टी होकर बजाना है। ट्रस्टी होंगे तो नष्टोमोहा हो जायेंगे। गृहस्थीपन होगा तो मोह आ जायेगा। बाप याद नहीं आता माना मोह है। बाप की याद से हर प्रवृत्ति का कार्य भी सहज हो जायेगा क्योंकि याद से शक्ति

पर जायेंगे तो अलर्ट हो जायेंगे। तो सदा सेवा की स्टेज पर हैं-इस स्मृति से सदा अलर्ट रहना है। अच्छा!

(18.11.1993)

अखण्ड महादानी सदा तीन प्रकार से दान करने में बिज़ी रहते हैं-पहला मन्सा द्वारा शक्तियां देने का दान, दूसरा वाणी द्वारा ज्ञान का दान, तीसरा कर्म द्वारा गुणों का दान। इन तीनों प्रकार के दान देने वाले सहज महादानी बन सकते हैं। रिज़ल्ट में देखा वाणी द्वारा ज्ञान दान मैजारिटी करते रहते हो। मन्सा द्वारा शक्तियों का दान यथा शक्ति करते हो और कर्म द्वारा गुण दान ये बहुत कम करने वाले हैं और वर्तमान समय चाहे अज्ञानी आत्मायें हैं, चाहे ब्राह्मण आत्मायें हैं दोनों को आवश्यकता गुणदान की है। वर्तमान समय विशेष स्वयं में वा ब्राह्मण परिवार में इस विधि को तीव्र बनाओ।

(02.12.1993)

जहाँ निश्चय है, वहाँ विजय होगी। निश्चय वालों के पास ही जायेगी ना। तो निश्चय सब बातों में चाहिये। सिर्फ़ बाप में निश्चय नहीं। लेकिन अपने आपमें भी निश्चय, ब्राह्मण परिवार में भी निश्चय, ड्रामा के हर दृश्य में भी निश्चय। तभी कहेंगे कि सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि। अगर बाप में निश्चय है लेकिन अपने में नहीं है, चलते-चलते अपने से दिलशिकस्त होते हैं तो निश्चय नहीं है तब तो होते हैं। तो वह भी अधूरा निश्चय हुआ। बाप में भी है, अपने आपमें भी है लेकिन परिवार में नहीं है। परिवार के कारण डगमग होते हैं। तो भी अधूरा निश्चय कहेंगे। ड्रामा में भी फुल निश्चय हो। जो हुआ सो अच्छा हुआ। इसको कहते हैं ड्रामा में निश्चय। ऐसे सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि हैं? कभी तो फुल है, कभी आधा है। जब अनेक बार का नशा है तो अनेक बार विजयी बने हो, अब रिपीट कर रहे हो। कोई नई बात नहीं कर रहे हो, रिपीट कर रहे हो। तो रिपीट करना तो सहज होता है ना। तो निश्चयबुद्धि विजयी-

अपना-अपना है, वर्तमान समय देश-विदेश सर्व ब्राह्मण परिवार का सहयोग इस विशेष कार्य में है ना कि अपने-अपने सेन्टर में है? जितना बड़ा कार्य उतनी बड़ा दिल। और जितनी बड़ा दिल होता है ना उतनी स्वत: ही सम्पन्नता होती है। अगर छोटा दिल होता है तो जो आना होता है वह भी रुक जाता है, जो होना होता है वह भी रुक जाता है। और बड़े दिल से असम्भव भी सम्भव हो जाता है। मधुबन का ज्ञान सरोवर है वा आपका है? किसका है? मधुबन का है ना? गुजरात का तो नहीं है, मधुबन का है? महाराष्ट्र का है? विदेश का है? सभी का है। बेहद की सेवा का बेहद का स्थान अनेक आत्माओं को बेहद का वर्सा दिलाने वाला है। ठीक है ना।

सभी सन्तुष्ट आत्मायें हो ना। संगम पर सन्तुष्ट नहीं रहेंगे तो कब रहेंगे? संगमयुग है ही सन्तुष्टता का युग। तो सभी सन्तुष्ट हैं कि थोड़ी खिटखिट है? न स्वयं में, न दूसरों के सम्पर्क में आने में। स्वयं सन्तुष्ट हैं लेकिन सम्पर्क में आने में सन्तुष्टता, इसमें थोड़ा फ़र्क है। माला के मणके हो ना। तो माला कैसे बनती है? सम्बन्ध से। अगर दाने का दाने से सम्पर्क नहीं हो तो माला बनेगी? तो माला के मणके हैं इसलिए सम्बन्ध-सम्पर्क में भी सदा सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। सिर्फ़ रहना नहीं है, करना भी है तब माला के मणके बनते हैं। क्योंकि सभी परिवार वाले हो, निवृत्ति वाले नहीं। परिवार का अर्थ ही है सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। बापदादा सभी स्थानों को एक-दो से आगे ही रखते हैं। ऐसे नहीं फलाना स्थान आगे है, दूसरे पीछे हैं। बाप के लिये सब आगे हैं। चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, लेकिन सब आगे हैं। और अगर गुप्त हैं तो सबसे आगे हैं। जैसे गुप्त दान महादान कहा जाता है। ऐसे अगर गुप्त पुरुषार्थी हैं, नाम आउट नहीं होता है तो ऐसे नहीं समझो कि पीछे हैं लेकिन गुप्त पुरुषार्थी सदा आगे हैं। गुप्त सेवाधारी सदा ही आगे है। तो सभी क्या याद रखेंगे? कौन हो? निरन्तर सेवाधारी। सदा सेवा की स्टेज पर पार्ट बजा रहे हो। घर में नहीं, स्टेज पर हो। सेन्टर पर नहीं, स्टेज पर हो। तो स्टेज पर अलर्ट रहते हैं, घर में जायेंगे तो अलर्ट नहीं रहेंगे, अलबेले हो जायेंगे। स्टेज

मिलती है। तो बाप के याद की छत्रछाया के नीचे रहती हो ना? छत्रछाया के नीचे रहने वाले हर विघ्न से न्यारे होंगे। मातायें तो बापदादा को अति प्रिय हैं क्योंकि माताओं ने बहुत सहन किया है। तो बाप ऐसे बच्चों को सहन करने का फल सहयोग और स्नेह दे रहे हैं। सदा सुहागवती रहना। इस जीवन में कितना श्रेष्ठ सुहाग मिल गया है। जहां सुहाग है वहां भाग्य तो है ही। इसलिए सदा सुहागवती भव!

(01.11.1981)

बापदादा ने विशेषता के वरदान का शक्तिशाली बीज सब बच्चों को दिया है। सिर्फ विधिपूर्वक फलदायक बनाओ। यह रही स्व के विशेषता की बात। अब विशेष आत्माओं के सम्बन्ध सम्पर्क में सदा रहते हो क्योंकि ब्राह्मण परिवार अर्थात् विशेष आत्माओं का परिवार। तो परिवार के सम्पर्क में आते हरेक की विशेषता को देखो। विशेषता देखने की ही दृष्टि धारण करो। अर्थात् विशेष चश्मा पहन लो। आजकल फैशन और मजबूरी चश्में की है। तो विशेषता देखने वालो चश्मा पहनो। तो दूसरा कुछ दिखाई नहीं देगा। जब साइंस के साधनों द्वारा-लाल चश्मा पहनो तो हरा भी लाल दिखाई दे सकता है। तो इस विशेषता की दृष्टि द्वारा विशेषता ही देखेंगे। कीचड़ को नहीं देख कमल को देखेंगे और हरेक की विशेषता द्वारा विश्व परिवर्तन के कार्य में विशेष कार्य के निमित्त बन जायेंगे। तो एक बात- अपनी विशेषता को कार्य में लगाओ, विस्तार कर फलदायक बनाओ, दूसरी बात- सर्व में विशेषता देखो। तीसरी बात-सर्व की विशेषताओं को कार्य में लगाओ। चौथी बात-विशेष युग की विशेष आत्मा हो इसलिए सदा विशेष संकल्प, बोल और कर्म करना है। तो क्या हो जायेगा? विशेष समय मिल जायेगा। क्योंकि विशेष न समझने के कारण स्वयं द्वारा स्वयं के विघ्न और साथ-साथ सम्पर्क में आने से भी आये हुए विघ्नों में समय बहुत जाता है। क्योंकि स्वयं की कमजोरी वा औरों की कमजोरी, इसकी कथा और कीर्तन- दोनों बड़े लम्बे होते हैं।

(06.11.1981)

एक ही बात सदा याद रखना 'हर बात में चाहे स्व के प्रति, चाहे औरों के प्रति आगे बढ़ने और बढ़ानें के लिए मोल्ड होना ही रीयल गोल्ड बनना है।' अच्छा-कंगन भी पहन लिया। अभी विशेष सेवा का लक्ष्य क्या रखेंगे? जैसे आजकल की गवर्नमेन्ट हर वर्ष का विशेष कार्य बनाती है, उस गवर्नमेन्ट ने तो अपंगों का बनाया था। आप क्या करेंगे? जैसे बाप की महिमा में गायन करते हैं - 'निर्बल को बल देने वाला'। जैसे स्थूल में निर्बल आत्माओं को साइन्स के साधनों से बलवान बना देते हैं। लंगड़े को चलाने की शक्ति दे देते हैं। इसी प्रकार हरेक कमजोर को शक्ति के साधन दे देते हैं। ऐसे आप सभी भी चाहे ब्राह्मण परिवार में, चाहे विश्व की आत्माओं में हर आत्मा को, 'निर्बल को बल देने वाले महाबलवान बनो'। जैसे वह लोग नारा लगाते हैं गरीबी हटाओ, वैसे आप निर्बलता को हटाओ। 'हिम्मत और मदद' निमित्त बन बाप से दिलाओ। तो इस वर्ष का विशेष नारा कौन-सा हुआ? 'निर्बलता हटाओ'। तब ही जो सलोगन मिला सदा उत्साह दिलाने का, वह प्रैक्टिकल में ला सकेंगे। समझा-नये वर्ष में क्या करना है?

बापदादा को तो सदा बच्चों के ऊपर नाज़ रहता है, यही बच्चे कल्प-कल्प के अधिकारी हैं। बापदादा हरेक रत्न की वैल्यु को जानते हैं। बच्चे कभी-कभी अपनी वैल्यु को कम जानते हैं। बाप तो अच्छी तरह से जानते है। कैसा भी बच्चा हो, भले अपने को लास्ट नम्बर में समझता हो, तो भी महान है क्योंकि कोटो में कोई-कोई में भी कोई है। तो करोड़ो में से वह एक भी महान हुआ ना। तो सदा अपनी महानता को जानो इससे महान आत्मा बन फिर देवात्मा बन जायेंगे।

(31.12.1981)

बापदादा भी सेवाधारियों को देख खुश होते हैं। सभी सदा अपने को निमित्त समझकर चलना और नम्रचित्त होकर चलना। जितना निमित्त और नम्रचित्त होकर चलेंगे उतनी सेवा में सहज वृद्धि होगी। कभी भी मैंने किया, मैं टीचर हूँ, यह 'मैं' का भाव नहीं रखना। इसको कहा जाता है सर्विस करने के बजाए सर्विस मे

किया, क्लास भी किया, सेवा भी, जॉब भी किया-परन्तु ये क्यों हो रहा है?' कारण क्या होता है? मोटे रूप को तो चेक कर लेते हो और उसमें समझते हो कि कोई ग़लती नहीं हुई। लेकिन सूक्ष्म अभिमान के स्वरूप का अंश सूक्ष्म में प्रकट होता है। इसलिए कोई भी काम में दिल नहीं लगेगी, वैराग्य, उदास-उदास फील होगा। या तो सोचेंगे-कोई एकान्त के स्थान पर चले जायें; या सोचेंगे-सो जायें, रेस्ट में चले जायें या परिवार से किनारा कर लें थोड़े टाइम के लिए। इन सब स्थितियों का कारण अंश की कमाल होती है। कमाल नहीं कहो, धमाल ही कहो। तो सम्पूर्ण निरहंकारी बनना अर्थात् आकारी-निराकारी सहज बनना। जैसे कभी-कभी दिल नहीं होती कि क्या सदा एक ही दिनचर्या में चलना है? चेंज तो चाहिए ना? न चाहते भी यह स्थिति आ जाती है।

(26.03.1993)

टीचर्स को कोई चिन्ता है? सेन्टर्स कैसे बढ़ेंगे-यह चिन्ता है? सेवा कैसे बढ़ेगी-यह चिन्ता है? नहीं है? बेफ़िक्र हो? चिन्तन करना अलग चीज़ है, चिन्ता करना अलग चीज़ है। सेवा बढ़ाने का चिन्तन अर्थात् प्लैन भले बनाओ। लेकिन चिन्ता से कभी सफलता नहीं होगी। चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है इसलिये सब सहज होना ही है, सिर्फ़ निमित्त बन संकल्प, तन, मन, धन सफल करते चलो। जिस समय जो कार्य होता है वो कार्य हमारा कार्य है। जब हमारा कार्य है, मेरा कार्य है तो जहाँ मेरापन होता है वहाँ सब कुछ स्वत: ही लग जाता है। तो अभी ब्राह्मण परिवार का विशेष कार्य कौन-सा है? टीचर्स बताओ। ब्राह्मण परिवार का अभी विशेष कार्य कौन सा है, किसमें सफल करेंगे? (ज्ञान सरोवर में) सरोवर में सब स्वाहा करेंगे। परिवार में जो विशेष कार्य होता है तो सबका अटेन्शन कहाँ होता है? उसी विशेष कार्य के तरफ़ अटेन्शन होता है। ब्राह्मण परिवार में बड़े से बड़ा कार्य वर्तमान समय यही है ना। हर समय का

रॉकेट है। लेकिन दुआओं का रॉकेट उससे भी श्रेष्ठ है। विघ्न जरा भी स्पर्श नहीं करेगा, विघ्न-प्रूफ बन जाते। युद्ध नहीं करनी पड़ती। सहज योगयुक्त, युक्तियुक्त हर कर्म, बोल, संकल्प स्वत: ही बन जाते हैं। ऐसा यह दुआओं का खजाना है। सबसे बड़ा खजाना इस संगमयुग के समय का खजाना है।

(30.11.1992)

सब सेवा की लग्न में मग्न रहने वाले हैं। स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति-दोनों का बैलेन्स बढ़ाते हुए आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ा रहे हैं। सेवा भी हो रही है और याद में भी बैठते ही हैं। लेकिन अभी बैलेन्स के ऊपर और अटेन्शन दिलाते चलो। कभी सेवा में बहुत आगे चले जाते, कभी स्व-उन्नति की भी लग्न लग जाती है। लेकिन दोनों साथ-साथ हों तो सफलता सहज और जो चाहते हैं वही हो जाती है। तो यही अटेन्शन दिलाते रहते हो ना। जिनको बैलेन्स रखना आता है वे सदा दुआएं लेते हैं और दुआएं देते हैं। बैलेन्स की प्राप्ति है-ब्लैसिंग। बैलेन्स वाले को ब्लैसिंग नहीं मिले-यह हो नहीं सकता। तो बैलेन्स की निशानी है-ब्लैसिंग। यदि नहीं मिलती तो बैलेन्स की कमी है। आप सभी की पालना किससे हुई? दुआओं से आगे बढ़े ना। कि मेहनत करनी पड़ी? माता, पिता और परिवार की दुआओं से सहज आगे बढ़ते गये और अभी भी दुआएं मिल रही हैं। महारथियों की पालना क्या है? दुआएं ना। आपको कितनी दुआएं मिलती हैं! तो महारथी की पालना ही दुआएं हैं। अच्छा!

(10.12.1992)

चलते-चलते कोई विशेष स्थूल रूप में-उस दिन, उस समय-कोई भूल भी नहीं करते हो लेकिन कभी-कभी ये अनुभव करते हो ना कि - 'आज वा अभी नामालूम क्या है जो जैसी खुशी होनी चाहिए वैसी नहीं है, ना-मालूम आज अकेलापन वा निराशा वा व्यर्थ संकल्पों का अचानक तूफान क्यों आ रहा है! अमृतवेला भी

रुकती कला आने का आधार। चलते-चलते कभी सर्विस कम हो जाती है या ढीली होती है, उसका कारण विशेष यही होता है जो निमित्त के बजाए मैं-पन आ जाता है और इसके कारण ही सर्विस ढीली हो जाती है, फिर अपनी खुशी और अपना नशा ही गुम हो जाता है। तो कभी भी न स्वयं इस स्मृति से दूर होना, न औरों को बाप से वर्सा लेने से वंचित करना। दूसरी बात कि सदा यह स्लोगन याद रखना - कि स्व परिवर्तन से किसी भी परिवार की आत्मा को भी बदलना है और विश्व को भी बदलना है। स्व परिवर्तन के ऊपर विशेष अटेन्शन। तो सेवा स्वत: ही वृद्धि को पायेगी। घटने का कारण भी समझा और बढ़ाने का आधार भी समझा। तो सदा खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे और औरों को भी खुशी में लाते रहेंगे। समझा!

(20.01.1982)

बापदादा हरेक बच्चे की विशेषता को जानते हैं। उसी विशेषता के आधार पर हरेक अपना-अपना विशेष पार्ट बजा रहे हैं। यही ब्राह्मण आत्माओं की वा ब्राह्मण परिवार में नवीनता है जो एक भी ब्राह्मण आत्मा विशेषता के सिवाए साधारण नहीं है। सभी ब्राह्मण अलौकिक जन्मधारी, अलौकिक हैं। इसलिए सभी अलौकिक अर्थात् कोई न कोई विशेषता के कारण विशेष आत्मा हैं। विशेषता की अलौकिकता है। इसलिए बापदादा को बच्चों पर नाज़ है। सब विशेष आत्मायें हो। ऐसे ही अपने में इस अलौकिक जन्म का, अलौकिकता का, रूहानियत का, मास्टर सर्वशक्तिवान का नशा अपने में समझते हो? यह नशा सर्व प्रकार की कमज़ोरियों को समाप्त करने वाला है।

(22.01.1982)

बापदादा आज बच्चों की चतुराई के खेल देख रहे थे। याद आ रहे हैं ना अपने खेल! सबसे बड़ी बात दूसरे के अवगुण को देखना, जानना इसको बहुत होशियारी समझते हैं। इसको ही नालेजफुल समझ लेते हैं। लेकिन जानना अर्थात्

बदलना। अगर जाना भी, दो घड़ी के लिए नालेजफुल भी बन गये, लेकिन नालेजफुल बनकर क्या किया? नालेज को लाइट और माइट कहा जाता है, जान तो लिया कि यह अवगुण है लेकिन नालेज की शक्ति से अपने वा दूसरे के अवगुण को भस्म किया? परिवर्तन किया? बदल के वा बदला के दिखाया वा बदला लिया? अगर नालेज की लाइट, माइट को कार्य में नहीं लाया तो क्या उसको जानना कहेंगे, नालेजफुल कहेंगे? सिवाए नालेज के लाइट। माइट को यूज करने के वह जानना ऐसे ही है जैसे द्वापरयुगी शास्त्रवादियों को शास्त्रों की नालेज है। ऐसे जानने वाले से अवगुण को न जानने वाले बहुत अच्छे हैं। ब्राह्मण परिवार में आपस में ऐसी आत्माओं को हँसी में 'बुद्धू' समझ लेते हैं। आपस में कहते हो ना कि तुम तो बुद्धू हो। कुछ जानते नहीं हो। लेकिन इस बात में बुद्धू बनना अच्छा है। न अवगुण देखेंगे न धारण करेंगे, न वाणी द्वारा वर्णन कर परचिन्तन करने की लिस्ट में आयेंगे। अवगुण तो किचड़ा है ना। अगर देखते भी हो तो मास्टर ज्ञान सूर्य बन किचड़े को जलाने की शक्ति है, तो शुभ-चिन्तक बनो। बुद्धि में ज़रा भी किचड़ा होगा तो शुद्ध बाप की याद टिक नहीं सकेगी। प्राप्ति कर नहीं सकेंगे। गन्दगी को धारण करने की एक बार अगर आदत डाल दी तो बार-बार बुद्धि गन्दगी की तरफ न चाहते भी जाती रहेगी। और रिजल्ट क्या होगी? वह नैचुरल संस्कार बन जायेंगे। फिर उन संस्कारों को परिवर्तन करने में मेहनत और समय लग जाता है। दूसरे का अवगुण वर्णन करना अर्थात् स्वयं भी परचिन्तन के अवगुण के वशीभूत होना है। लेकिन यह समझते नहीं हो - दूसरे की कमज़ोरी वर्णन करना, अपने समाने की शक्ति की कमज़ोरी जाहिर करना है। किसी भी आत्मा को सदा गुणमूर्त से देखो। अगर किसकी कोई कमज़ोरी है भी, मर्यादा के विपरीत कार्य है भी तो बापदादा की निमित्त बनाई हुई सुप्रीम कोर्ट में लाओ। खुद ही वकील और जज नहीं बन जाओ। भाई-भाई का नाता भूल, वकील और जज नहीं बन जाओ। भाई-भाई का नाता भूल वकील जज बन जाते हो इसलिए भाई-भाई की दृष्टि टिक नहीं सकती। केस दाखिल करने की मना नहीं है लेकिन

स्वयं से समाप्त करो। दूसरा बदले तो मैं बदलूं, इनको चेंज करो तो हम चेंज होंगे, यह भाषा यथार्थ है? बड़ों के आगे बात रखना इसके लिए सबको हक है लेकिन सत्यता और सभ्यता पूर्वक।

(15.04.1992)

बापदादा को भी ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी रत्नों को देख हर्ष होता है। ज्यादा खुशी किसको होती है-बाप को या आपको? बाप कहते हैं-बच्चों को ज्यादा खुशी है तो बाप को पहले है। बापदादा ने, देखो, कहाँ-कहाँ से चुनकर एक बगीचे के रूहानी गुलाब बना दिया। इसी एक परिवार का बनने में कितनी खुशी है! इतना परिवार किसी का भी होगा? फालोअर्स हो सकते हैं लेकिन परिवार नहीं। कितनी खुशियां हैं-बाप की खुशी, अपने भाग्य की खुशी, परिवार की खुशी! खुशियाँ ही खुशियाँ हैं ना। आंख खुलते ही अमृतवेले खुशी के झूले में झूलते हो और सोते हो तो भी खुशी के झूले में। अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो किससे पूछें? हर एक कहेगा-मेरे से पूछो। यह शुद्ध नशा है, यह देह-भान का नशा नहीं है। हर एक आत्मा को अपना-अपना रूहानी नशा है। सिर्फ रूहानी नशे को हद का नशा नहीं बनाना।

(03.11.1992)

सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा ब्राह्मण परिवार के भी सम्पर्क में आते हो, सेवा के भी सम्बन्ध में आते हो। तो सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा कौनसा खजाना मिलता है? सर्व की दुआओं का खजाना मिलता है। यह दुआओं का खजाना बहुत बड़ा खजाना है। जो सर्व की दुआओं के खजानों से भरपूर है, सम्पन्न है उसको कभी भी पुरुषार्थ में मेहनत नहीं करनी पड़ती। पहले है मात-पिता की दुआएं और साथ में सर्व के सम्बन्ध में आने से सर्व द्वारा दुआएं। सबसे बड़े ते बड़ा तीव्र गति से आगे उड़ने का तेज यन्त्र है - 'दुआए'। जैसे-साइन्स का सबसे बड़े ते बड़ा तीव्र गति का

जाता और स्वयं वायुमण्डल में असत्यता की बाते फैलाना यह क्या है? इसको क्या कहेंगे? पुण्य कर रहे हैं ना वे, असत्य देखा वा सुना, फिर भी परिवार है, लौकिक परिवार में भी अगर कोई ऐसी बात देखी जाती है, सुनी जाती है तो क्या किया जाता है?फैलाया जाता है? अखबार में डाला जाता है? कि कान में सुना और दिल में छिपाया। तो यह भी व्यर्थ बातों का फैलाव करना यह भी पाप का अंश है। यह छोटे-छोटे पाप जो होते हैं वह अपनी उड़ती कला के अनुभव को समाप्त कर देते हैं। क्योंकि सबसे भारी ते भारी है पाप। अगर पाप का अंश भी है तो उड़ेगा कैसे? बोझ वाला उड़ेगा? आजकल बहुत रॉयल भाषा में फैलाव करते हैं। कहते हैं यह नया समाचार लाया हूँ। आप तो बहुत बुद्धू हो आपको कोई समाचार का पता नहीं पड़ता। हम देखो नॉलेजफुल हैं कितने समाचार का पता है। ऐसे समाचार सुनने वालों के ऊपर भी पाप और सुनाने वाले के ऊपर और ज्यादा पाप। इसीलिए तपस्या वर्ष में यह सूक्ष्म पापों का बोझ समाप्त करो तब समान बन सकेंगे। नहीं तो सोचते हैं कि हमने तो कोई गलती की नहीं लेकिन यह रॉयल गलती बहुत करते हैं। इसको रॉयल समझते हैं। मैंने सुना तो ऐसे ही सुना दिया। भाव कोई नहीं था मेरा। लेकनि रिजल्ट क्या है। फैलाना अर्थात् बोझ के अधिकारी बनना। तो आजकल यह भी एक रिवाज हो गया है। आपस में मिलेंगे ना तो पहले तो समाचार सुनायेंगे, नये नये समाचार। कहेंगे किसको सुनाना नहीं सिर्फ आपको ही सुना रहे हैं। लेकिन बाप ने तो सुना। रजिस्टर में दाग तो हुआ या नहीं? इसलिए इस बात का भी अटेन्शन अन्डरलाइन करो। ऐसे नहीं समझो कि बापदादा को पता हीं नहीं पड़ता। दादियाँ तो कोने में बैठी हैं उनको क्या पता। दादियों को नहीं पता लेकिन आपके रजिस्टर में आटोमेटिक नोट हो जाता है। जब आजकल के कम्प्युटर में सारा रिकार्ड भर जाता है तो क्या आपके रजिस्टर में आटोमेटिक यह रिकार्ड भर नहीं जायेगा। दादियाँ नहीं देखती, और नहीं देखते लेकिन रजिस्टर देख रहा है। तो ऐसा परिवर्तन करो। क्योंकि बापदादा ने रिजल्ट में देखा कि तपस्या पॉवरफुल न होने का कारण क्या है? सदा विजयी बनने में विघ्न रुप क्या है? इन विघ्नों को

मिलावट और खयानत नहीं करो। जितना हो सके शुभ भावना से इशारा दे दो। न अपने मन में रखो और न औरों को मन्मनाभव होने में विघ्न रूप बनो। तो चतुराई का खेल क्या करते हैं? जिस बात को समाना चाहिए उसको फैलाते हैं, और जिस बात को फैलाना चाहिए उसको समा देते हैं कि यह तो सब में है। तो सदा स्वयं को अशुद्धि से दूर रखो। मंसा में, चाहे वाणी में, कर्म में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में अशुद्धि, संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित बना देगी। समय बीत जायेगा। फिर 'पाना था' इस लिस्ट में खड़ा होना पड़ेगा। प्राप्ति स्वरूप की लिस्ट में नहीं होंगे। सर्व खज़ानों के मालिक के बालक और अप्राप्त करने वालों की लिस्ट में हों यह अच्छा लगेगा? इसलिए अपनी प्राप्ति में लग जाओ। शुभचिंतक बनो। किसी भी प्रकार के विकारों के वशीभूत हो अपनी उल्टी होशियारी नहीं दिखाओ। यह उल्टी होशियारी अब अल्पकाल के लिए अपने को खुश कर लेगी वा ऐसे साथी भी आपकी होशियारी के गीत गाते रहेंगे लेकिन कर्म की गति को भी स्मृति में रखो। उल्टी होशियारी उल्टा लटकायेगी। अभी अल्पकाल के लिए काम चलाने की होशियारी दिखायेंगे, इतना ही चलाने के बजाए चिल्लाना भी पड़ेगा। कई ऐसी होशियारी दिखाते हैं कि बापदादा दीदी दादी को भी चला लेंगे। यह सब तरीके आते हैं। अल्पकाल की उल्टी प्राप्ति के लिए मना भी लिया, चला भी लिया लेकिन पाया क्या और गंवाया क्या! दो तीन वर्ष नाम भी पा लिया लेकिन अनेक जन्मों के लिए श्रेष्ठ पद से नाम गंवा लिया। तो पाना हुआ या गंवाना हुआ?

(29.03.1982)

त्यागी जो हैं वह लौकिक प्रवृत्ति से पार हो गये लेकिन देह की प्रवृत्ति अर्थात् अपने आपको ही चलाने और बनाने में व्यस्त रहना वा देह भान की नेचर के वशीभूत रहना और उसी नेचर के कारण ही बार-बार हिम्मतहीन बन जाते हैं। जो स्वयं भी वर्णन करते कि समझते भी हैं, चाहते भी हैं लेकिन मेरी नेचर है। यह भी देह भान की, देह की प्रवृत्ति है। जिसमें शक्ति स्वरूप हो इस प्रवृत्ति से भी निवृत्त

हो जाएँ - वह नहीं कर पाते। यह त्यागी की बात सुनाई लेकिन महात्यागी लौकिक प्रवृत्ति, देह की प्रवृत्ति दोनों से निवृत्त हो जाते - लेकिन सेवा की प्रवृत्ति में कहाँ-कहाँ निवृत्त होने के बजाए फँस जाते हैं। ऐसी आत्माओं को अपनी देह का भान भी नहीं सताता क्योंकि दिन-रात सेवा में मगन हैं। देह की प्रवृत्ति से तो पार हो गये। इस दोनों ही त्याग का भाग्य - ज्ञानी और योगी बन गये, शक्तियों की प्राप्ति, गुणों की प्राप्ति हो गई। ब्राह्मण परिवार में प्रसिद्ध आत्मायें बन गये। सेवाधारियों में वी.आई.पी. बन गये। महिमा के पुष्पों की वर्षा शुरू हो गई। माननीय और गायन योग्य आत्मायें बन गये लेकिन यह जो सेवा की प्रवृत्ति का विस्तार हुआ, उस विस्तार में अटक जाते हैं। यह सर्व प्राप्ति भी महादानी बन औरों को दान करने के बजाए स्वयं स्वीकार कर लेते हैं। तो 'मैं और मेरा' शुद्ध भाव की सोने की जंजीर बन जाती है। भाव और शब्द बहुत शुद्ध होते हैं कि हम अपने प्रति नहीं कहते, सेवा के प्रति कहते हैं। मैं अपने को नहीं कहती कि मैं योग्य टीचर हूँ लेकिन लोग मेरी मांगनी करते हैं। जिज्ञासु कहते हैं कि आप ही सेवा करो। मैं तो न्यारी हूँ लेकिन दूसरे मुझे प्यारा बनाते हैं। इसको क्या कहा जायेगा? बाप को देखा वा आपको देखा? आपका ज्ञान अच्छा लगता है, आपके सेवा का तरीका अच्छा लगता है, तो बाप कहाँ गया? बाप को परमधाम निवासी बना दिया! इस भाग्य का भी त्याग। जो आप दिखाई न दें, बाप ही दिखाई दे। महान आत्मा प्रेमी नहीं बनाओ 'परमात्म प्रेमी बनाओ'। इसको कहा जाता है और प्रवृत्ति पार कर इस लास्ट प्रवृत्ति में सर्वास्व त्यागी नहीं बनते। यह शुद्ध प्रवृत्ति का अंश रह गया। तो महात्यागी तो बने लेकिन सर्वस्व त्यागी नहीं बने। तो सुना दूसरे नम्बर का महात्यागी। बाकी रह गया सर्वस्व त्यागी।

(13.04.1982)

कई ब्राह्मण आत्मायें शक्ति स्वरूप बन, महावीर बन सदा विजयी आत्मा बनने में वा इतनी हिम्मत रखने में स्वयं को कमज़ोर भी समझती हैं लेकिन एक

कि ऐसे होशियारी को छोड़कर निर्माण बनो। बिल्कूल निर्माण। मैं राईट हूँ, यह रांग है यह निर्माणता नहीं है। दुनिया वाले भी कहते हैं कि सत्य को अगर कोई सिद्ध करता है तो कुछ न कुछ समाया हुआ है। कई बच्चों की भाषा हो गई है मैं बिल्कुल सच बोलता हूँ, 100 परसेन्ट सत्य बोलता हूँ। लेकिन सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। सत्य ऐसा सूर्य है जो छिप नहीं सकता। चाहे कितनी भी दीवारें कोई आगे लाये लेकिन सत्यता का प्रकाश कभी छिप नहीं सकता। सच्चा आदमी कभी अपने को यह नहीं कहेगा कि मैं सच्चा हूँ। दूसरा कहे कि आप सच्चे हो और भी हंसी के बात सुनाएं? सुनने का इन्टरेस्ट अच्छा है। करने का भी है ना?

बापदादा को एक बात पर बड़ी हंसी आती है। वर्तमान समय कई बच्चों के समाचार आते हैं? बाप को भी चैलेन्ज कर रहे हैं कि बापदादा ने कहा है ना कि टीचर्स को चेन्ज करेंगे अभी देखेंगे बाबा क्या करता है? जो कहा है वह करता है या नहीं करता है। बाप ने कहा है तो बाप पर है। बाप करे या न करे। या ऐसे चैलेन्ज करनी है कि कहा है तो करना ही है। बाप को जो करना है वह न किसके कहने से करेंगे। वा किसके ना कहने से नहीं करेंगे। लेकिन बाप को भी चैलेन्ज के बहुत अच्छे पत्र आते हैं। जो टीचर्स से नाराज है उन्हों को यह चांस बड़ा मिल गया है। कल्याणकारी बाप हर कार्य में जो भी करेगा वह कल्याणकारी ही होता है। यह भूल जाते हैं फिर डायरेक्शन के पत्र लिख रहे हैं कि आप जरुर करना, बाप के भी शिक्षक बहुत बन गये ना तो बाप अपने ऐसे बच्चों को भी मुबारक देते हैं। लेकिन सदा संयम में स्वयं को आगे बढ़ाते चलो। सभ्यता पूर्वक बोल, सभ्यता पूर्वक चलन, इसमें ही सफलता होती है। अगर सत्यता है और सभ्यता नहीं है तो सफलता नहीं मिलती है। और सफलता नहीं मिलती तो और जोश में आते हैं। और जब जोश में कोई होश नीं रहता। क्या कर रहे हैं, क्या कह रहे हैं वह भी होश नहीं आता और जब होश नहीं होता तो माया को चांस मिल जाता है बेहोश करने का। इसलिए अगर कोई असत्य बात देखते भी हो, सुनते भी हो तो असत्य वायुमण्डल नहीं फैलाओ। कई कहते हैं कि यह पाप कर्म है ना पाप कर्म देखा नहीं

मैजारिटी की दूर की नज़र तेज है, नजदीक की नज़र कुछ ढीली है। देखना चाहते हैं लेकिन स्पष्ट देख नहीं पाते हैं और फिर होशियारी क्या करते हैं? कोई भी बात होगी तो अपने को सेफ रखने के लिए दूसरों की बात बड़ी करके स्पष्ट सुनायेंगे। अपनी बड़ी बात को छोटा करेंगे और दूसरे की छोटी बात को बड़ा करेंगे यह होशियारी मैजारिटी की देखी। दूसरी होशियारी क्या देखी? आजकल एक विशेष भाषा बहुत यूज़ करते हैं कि हमसे असत्य देखा नहीं जाता, असत्य सुना नहीं जाता, इसलिए असत्य को देख झूठ को सून करके अन्दर में जोश आ जाता है। तो यह भाषा राईट है? अगर वह असत्य है और आपको असत्य को देख जोश आता है तो जोश सत्य है या असत्य है? जोश भी तो असत्य है ना! हम यह करके दिखायेंगे, यह चैलेन्ज करना राइट है? यह सदैव याद रखो कि सत्यता की निशानी क्या है! जो स्वयं सत्यता पर है और असत्य को खत्म करना चाहता है, लक्ष्य तो बहुत अच्छा है लेकिन असत्यता को खत्म करने के लिए अपने में भी सत्यता की शक्ति चाहिए। आवेशता या जोश यह सत्यता की निशानी है? सत्यता में जोश आयेगा? तो अगर झूठ को देख करके मुझे गुस्सा आता है, तो राईट है? कोई आग लगायेगा तो सेक नहीं आयेगा कि सेक प्रुफ हो सकते हैं? अगर हमें नॉलेज है कि यह असत्यता की आग है और आग का सेक होता है तो पहले अपने को सेफ करेंगे ना कि सेक में थोड़ा सा जल भी जाए तो चलेगा, हर्जा नहीं। तो सदैव यह याद रखो कि सत्यता की निशानी है सभ्यता। अगर आप सच्चे हो, सत्यता की शक्ति आपमें है तो सभ्यता को कभी नहीं छोड़ेंगे, सत्यता को सिद्ध करो लेकिन सभ्यतापूर्ण। अगर सभ्यता को छोड़कर असभ्यता में आकरके सत्य को सिद्ध करना चाहते हो तो वह सत्य सिद्ध नहीं होगा। आप सत्य को सिद्ध करना चाहते हो लेकिन सभ्यता को छोड़ करके अगर सत्यता को सिद्ध करेंगे तो जिद्द हो जायेगा। सिद्ध नहीं। असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्माण। सत्यता को सिद्ध करने वाला सदैव स्वयं निर्माण होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करेगा। समझा - दूसरी होशियारी! ऐसे होशियार नहीं बनना। तो यह भी होमवर्क है

विशेषता के कारण विशेष आत्माओं की लिस्ट में आ गई हैं। कौन-सी विशेषता? सिर्फ बाप अच्छा लगता है, श्रेष्ठ जीवन अच्छा लगता है। ब्राह्मण परिवार का संगठन, नि:स्वार्थी स्नेह - मन को आकर्षित करता है। बस यही विशेषता है कि बाबा मिला, परिवार मिला, पवित्र ठिकाना मिला, जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सहज सहारा मिल गया। इसी आधार पर मिलन की भावना में स्नेह के सहारे में चलते जा रहे हैं। लेकिन फिर भी सम्बन्ध जोड़ने के कारण सम्बन्ध के आधार पर स्वर्ग का अधिकार वर्से में पा ही लेते हैं - क्योंकि ब्राह्मण सो देवता, इसी विधि के प्रमाण देवपद की प्राप्ति का अधिकार पा ही लेते हैं। सतयुग को कहा ही जाता है - देवताओं का युग। चाहे राजा हो, चाहे प्रजा हो लेकिन धर्म देवता ही है - क्योंकि जब ऊँचे ते ऊँचे बाप ने बच्चा बनाया तो ऊँचे बाप के हर बच्चे को स्वर्ग के वर्से का अधिकार, देवता बनने का अधिकार, जन्म सिद्ध अधिकार में प्राप्त हो ही जाता है। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी बनना अर्थात् स्वर्ग के वर्से के अधिकार की अविनाशी स्टैम्प लग जाना। सारे विश्व से ऐसा अधिकार पाने वाली सर्व आत्माओं में से कोई आत्मायें ही निकलती हैं। इसलिए ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना कोई साधारण बात नहीं समझना। ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना ही विशेषता है और इसी विशेषता के कारण विशेष आत्माओं की लिस्ट में आ जाते हैं। इसलिए ब्रह्माकुमार-कुमारी बनना अर्थात् ब्राह्मण लोक के, ब्राह्मण संसार के, ब्राह्मण परिवार के बनना। ब्रह्माकुमार-कुमारी बन अगर कोई भी साधारण चलन वा पुरानी चाल चलते हैं तो सिर्फ अकेला अपने को नुकसान नहीं पहुँचाते - क्योंकि अकेले ब्रह्माकुमार-कुमारी नहीं हो लेकिन ब्राह्मण कुल के भाती हो। स्वयं का नुकसान तो करते ही हैं लेकिन कुल को बदनाम करने का बोझ भी उस आत्मा के ऊपर चढ़ता है। ब्राह्मण लोक की लाज रखना यह भी हर ब्राह्मण का फर्ज़ है। जैसे लौकिक लोकलाज का कितना ध्यान रखते हैं। लौकिक लोकलाज पद्मापद्मपति बनने से भी कहाँ वंचित कर देती है। स्वयं ही अनुभव भी करते हो और कहते भी हो कि चाहते तो बहुत हैं लेकिन लोकलाज को निभाना पड़ता है। ऐसे कहते हो

ना? जो लोकलाज अनेक जन्मों की प्राप्ति से वंचित करने वाली है, वर्तमान हीरे जैसा जन्म कौड़ी समान व्यर्थ बनाने वाली है, यह अच्छी तरह से जानते भी हो फिर भी उस लोकलाज को निभाने में अच्छी तरह ध्यान देते हो, समय देते हो, एनर्जी लगाते हो। तो क्या इस ब्राह्मण लोकलाज की कोई विशेषता नहीं है! उस लोक की लाज के पीछे अपना धर्म अर्थात् धारणायें और श्रेष्ठ कर्म याद का, दोनों ही धर्म और कर्म छोड़ देते हो। कभी वृत्ति के परहेज की धारणा अर्थात् धर्म को छोड़ देते हों, कभी शुद्ध दृष्टि के धर्म को छोड़ देते हो। कभी शुद्ध अन्न के धर्म को छोड़ देते हो। फिर अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए बातें बहुत बनाते हो। क्या कहते - कि करना ही पड़ता है! थोड़ी सी कमज़ोरी सदा के लिए धर्म और कर्म को छुड़ा देती है। जो धर्म और कर्म को छोड़ देता है उसको लौकिक कुल में भी क्या समझा जाता है? जानते हो ना? यह किसी साधारण कुल का धर्म और कर्म नहीं है। ब्राह्मण कुल ऊँचे ते ऊँची चोटी वाला कुल है। तो किस लोक वा किस कुल की लाज रखनी है? और कई अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं - मेरी इच्छा नहीं थी लेकिन किसी को खुश करने के लिए किया! क्या अज्ञानी आत्मायें कभी सदा खुश रह सकती हैं? ऐसे अभी खुश, अभी नाराज रहने वाली आत्माओं के कारण अपना श्रेष्ठ कर्म और धर्म छोड़ देते जो धर्म के नहीं वह ब्राह्मण दुनिया के नहीं। अल्पज्ञ आत्माओं को खुश कर लिया लेकिन सर्वज्ञ बाप की आज्ञा का उल्लंघन किया ना! तो पाया क्या और गंवाया क्या! जो लोक अब खत्म हुआ ही पड़ा है। चारों ओर आग की लकड़ियाँ बहुत ज़ोर शोर से इकट्ठी हो गई हैं। लकड़ियाँ अर्थात् तैयारियाँ। जितना सोचते हैं इन लकड़ियों को अलग-अलग कर आग की तैयारी को समाप्त कर दें उतना ही लकड़ियों का ढेर ऊँचा होता जाता है। जैसे होलिका को जलाते हैं तो बड़ों के साथ छोटे-छोटे बच्चे भी लकड़ियाँ इकट्ठी कर ले आते हैं। नहीं तो घर से ही लकड़ी ले आते। शौक होता है। तो आजकल भी देखो छोटे-छोटे शहर भी बड़े शौक से सहयोगी बन रहे हैं। तो ऐसे लोक की लाज के लिए अपने अविनाशी ब्राह्मण सो देवता लोक की लाज भूल जाते हो! कमाल

समय में भी अपने को फुल पास के योग्य नहीं बना सकेंगे। समझा! कभी कैसी रुहरुहान करते हो, कभी बहुत हिम्मत की भी करते हो, कभी नाज़-नखरे की करते हो और कभी खिटपिट की करते हो।

आज इस वर्ष के सीज़न का सम्पन्न है। समाप्ति नहीं कहेंगे, सम्पन्न हो रहा है। इसलिए रिज़ल्ट सुना रहे हैं। तो अभी क्या करना है? चेक करो कि निश्चय के फाउन्डेशन के चारों ओर मज़बूत है या चारों में से कोई भी बात में मज़बूत होने के बजाए बातों के कारण मजबूरर है। यह चेक करो। अभी फिर तपस्या करनी है ना। पहले भी सुनाया कि प्यार का सबूत देना है और प्यार को सबूत है समान बनना। और दूसरी बात क्या करनी है। यह वर्ष का होम वर्क दे रहे हैं। एक वर्क तो सुना। दूसरी बात - अपने चारों ओर के फाउन्डेशन को पक्का करो। एक भी बात में कमजोरी नहीं हो तभी माला के मणके बन पूज्य आत्मा वा राज्य अधिकारी आत्मा बनेंगे। क्योंकि ब्राह्मण सो देवता बनना है। सिवाए ब्राह्मण के देवता नहीं बन सकते हैं। ब्राह्मणों से निभाना अर्थात् दैवी राज्य के अधिकारी बनना। तो परिवार से निभाना पड़ेगा। हलचल को समाप्त करना पड़ेगा। तब निश्चय और विजय दोनों की समानता हो जायेगी। यह अन्तर मिटाने का महामन्त्र है। चारों ओर मज़बूत होना। चार ही निश्चय की परसेन्टेज समान बनाना है। समझा! होमवर्क स्पष्ट हुआ ना। अच्छे स्टूडेन्ट हो ना या कहेंगे कि अपने सेन्टर के होम में गये, प्रवृत्ति के होम में गये तो होम में ही होम वर्क रखकर आये। ऐसे तो नहीं कहेंगे ना। होशियार स्टूडेन्ट की निशानी क्या होती है? होम वर्क में भी नम्बरवन, तो प्रैक्टिकल पढ़ाई में भी नम्बरवन। क्योंकि मार्क्स जमा होती है। अच्छा और क्या रिजल्ट देखी? वर्तमान समय बच्चों की दो होशियारी देखीं। अपनी होशियारी तो जानते होंगे ना? पहली होशियारी क्या देखी? स्व को देखना और पर को देखना। स्वदर्शन चक्रधारी बनना या पर दर्शन चक्रधारी बनना। दो बातें हैं ना। मैजारिटी किसमें होशियार हैं? बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि कई बच्चों की नजदीक की नज़र बहुत तेज हो रही हैं और कई बच्चों की फिर दूर की नज़र बहुत तेज हो रही है। लेकिन

माला से बाहर रह गये हो तो भी ठीक है, हर्जा नहीं है। माला में आना है। चाहे 108 में आओ चाहे 16000 में आओ। लेकिन आना है वा नहीं। (हाँ जी) फिर अभी ब्राह्मण परिवार से क्यों घबराते हो? जब कोई बात होती है तो क्यों कहते हो हमारा तो बाबा है। बहनें क्या करेंगी भाई क्या करेंगे? हमने भाई-बहनों से वायदा नहीं किया है, लेकिन यह ब्राह्मण जीवन शुद्ध सम्बन्ध का जीवन है, माला की जीवन है। माला का अर्थ ही है संगठन। ब्राह्मण परिवार के निश्चय में अगर कोई संशय आ जाता है, व्यर्थ संकल्प आ जाता है तो वह निश्चय को डगमग कर देता है। हलचल में लाता है। बाबा अच्छा, ज्ञान अच्छा, लेकिन ये दादियाँ अच्छी नहीं, टीचर्स अच्छी नहीं, परिवार अच्छा नहीं..। यह निश्चयबुद्धि के बोल हैं? उस समय निश्चयबुद्धि कहें कि संकल्प बुद्धि कहें? व्यर्थ संकल्प प्रसन्नचित्त बुद्धि रहने नहीं देते, तो समझा निश्चय की विशेषता क्या है? चौथी रुहरिहान क्या करते हैं? वह फिर कहते कि समय श्रेष्ठ है, पुरुषोत्तम युग है, आत्मा परमात्मा के मेले का युग है यह सब मानते हैं फिर क्या कहते? अभी थोड़ा समय तो है ही, इतने में विनाश तो होना नहीं है, यह तो स्थापना के समय से कहते आये हैं कि विनाश होना है। दूसरी दीवाली नहीं आनी है। तो विनाश की बाते तो स्थापना के समय से चल रही हैं। विनाश कहते-2 कितने वर्ष हो गये। अभी भी पता नहीं विनाश कब हो! थोड़ा सा अलबेले के, आलस्य के, ढीले पुरुषार्थ के डनलप के तकियें में आराम कर लें। समय पर ठीक हो जायेंगे। बाप को भी यह पक्का कराते हैं कि आप देखना हम समय पर बहुत नम्बर आगे ले लेंगे। लेकिन बापदादा ऐसे बच्चों को सदा सावधान करते हैं कि समय पर जागे और समय प्रमाण परिवर्तन किया तो यह कोई बड़ी बात नहीं हैं। लेकिन समय के पहले परिवर्तन किया तो आपके पुरुषार्थ में यह पुरुषार्थ की मार्क्स जमा होगी और अगर समय पर किया तो समय को मार्क्स मिलेगी आपको नहीं मिलेगी। तो टोटल रिज़ल्ट में अलबेले या आलस्य के नींद के कारण धोखा खा लेंगे। यह भी कुम्भकरण के नींद का अंश है। बड़ा कुम्भकरण नहीं है, छोटा है। फिर उसको क्या हुआ? अपने को बचा सका? नहीं बच सका ना! तो अन्त

करते हो! यह निभाना है या गंवाना है! इसलिए ब्राह्मण लोक की भी लाज स्मृति में रखो। अकेले नहीं हो, बड़े कुल के हो तो श्रेष्ठ कुल की भी लाज रखो।

(18.02.1982)

सर्वस्व त्यागी सदा अपने को हर श्रेष्ठ कार्य के - सेवा की सफलता के कार्य में, ब्राह्मण आत्माओं की उन्नति के कार्य में, कमजोरी वा व्यर्थ वातावरण को बदलने के कार्य में ज़िम्मेवार आत्मा समझेंगे। सेवा में विघ्न बनने के कारण वा सम्बन्ध सम्पर्क में कोई भी नम्बरवार आत्माओं के कारण ज़रा भी हलचल होती है, तो सर्वस्व त्यागी बेहद के आधारमूर्त समझ, चारों ओर की हलचल को अचल बनाने की जिम्मेवारी समझेंगे। ऐसे बेहद की उन्नति के आधार मूर्त सदा स्वयं को अनुभव करेंगे। ऐसा नहीं कि यह तो इस स्थान की बात है या इस बहन वा भाई की बात है। नहीं। मेरा परिवार है । मैं कल्याणकारी निमित्त आत्मा हूँ। टाइटल विश्व-कल्याणकारी का मिला हुआ हैं न कि सिर्फ स्व-कल्याणकारी वा अपने सेन्टर के कल्याणकारी। दूसरे की कमज़ोरी अर्थात् अपने परिवार की कमज़ोरी है, ऐसे बेहद के निमित्त आत्मा समझेंगे। मैं-पन नहीं, निमित्त मात्र हैं अर्थात् विश्व-कल्याण के आधारमूर्त बेहद के कार्य के आधारमूर्त हैं।

सर्वस्व त्यागी सदा एकरस, एक मत, एक ही परिवार कासदा ऐसे एक ही स्मृति में नम्बर एक आत्मा होंगे। एक ही कार्य है - सदा ऐसे एक ही स्मृति मे नम्बर एक आत्मा होंगे।

(28.04.1982)

सर्व ब्राह्मणों का एक संकल्प, वही कार्य की सफलता का आधार है। सबको सहयोग चाहिए। किले की एक ईंट भी कमज़ोर होती तो किले को हिला सकती है। इसलिए छोटे बड़े सब इस ब्राह्मण परिवार के किले की ईंट हो तो सभी को एक ही संकल्प द्वारा कार्य को सफल करना है। सबके मन से यह आवाज़

निकले कि यह मेरी ज़िम्मेवारी है।

(03.03.1983)

अपसेट कभी नहीं होना चाहिए। जिसने कुछ कहा उनसे ही पूछना चाहिए कि आपने किस भाव से कहा? - अगर वह स्पष्ट नहीं करते तो निमित्त बने हुए से पूछो कि इसमें मेरी ग़लती क्या है? अगर ऊपर से वेरीफाय हो गया, आपकी ग़लती नहीं है तो आप निश्चिन्त हो जाओ। एक बात सभी को समझनी चाहिए कि ब्राह्मण आत्माओं द्वारा यहाँ ही हिसाब-किताब चुक्तू होना है। धर्मराजपुरी से बचने के लिए ब्राह्मण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते हैं। तो घबराओ नहीं कि यह ब्राह्मण परिवार में क्या होता है। ब्राह्मणों का हिसाब-किताब ब्राह्मणों द्वारा ही चुक्तू होना है। तो यह चुक्तू हो रहा है इसी खुशी में रहो। हिसाब-किताब चुक्तू हुआ और तरक्की ही तरक्की हुई। अभी एक वायदा करो - कि छोटी-छोटी बात में कन्फ्यूज नहीं होंगे, प्राब्लम नहीं बनेंगे लेकिन प्राब्लम को हल करने वाले बनेंगे। समझा।

(09.01.1983)

अब तो जब आप समय परिवर्तन की सूचना दे रहे हो, तो बापदादा के मिलने का भी परिवर्तन होगा ना। आप सबका संकल्प है हमारा परिवार वृद्धि को पाए तो पुरानों को त्याग करना पड़ेगा। लेकिन यह त्याग ही भाग्य है। दूसरों को आगे बढ़ाना ही स्वयं को आगे बढ़ाना है।

(15.02.1983)

एक सदा लौकिक में अलौकिक स्मृति, सदा सेवाधारी की स्मृति। सदा ट्रस्टीपन की स्मृति। सर्व प्रति आत्मिक भाव से शुभ कल्याण की भावना, श्रेष्ठ बनाने की शुभ भावना। जैसे अन्य आत्माओं को सेवा की भावना से देखते हो,

समझा भोला किसमें बनना है? तो निश्चय और विजय को समान बनाने की विधि क्या हुई? चारों तरफ, चारों बातों का समान परोन्टेज वाला निश्चय हो। कई बच्चे और क्या कहते हैं कि बाबा आपमें तो निश्चय है लेकिन अपने आपमें इतना निश्चय नहीं है। कभी होता है, कभी अपने में निश्चय कम हो जाता है। फिर उन्हों की भाषा क्या होती है? एक ही गीत गाते हैं। पता नहीं , पता नहीं, पता नहीं..। पता नहीं ऐसे क्यों होता है, पता नहीं मेरा भाग्य है, पता नहीं बाप की मदद मिलेगी वा नहीं, पता नहीं सफलता होगी वा नहीं। जब मास्टर सर्वशक्तिवान हो तो इस निश्चय में कमी है तब पता नहीं, पता नहीं का गीता गाते हो। और तीसरे फिर क्या कहते हैं? कि बाबा हमने तो आपको देख करके सौदा किया। आप हमारे हो हम आपके हैं। इस ब्राह्मण परिवार से हमने सौदा नहीं किया। ब्राह्मण परिवार खिटखिट है, आप ठीक हो। ब्राह्मणों के संगठन में चलना मुश्किल हैं, एक आपसे चलना सहज है। तो बापदादा क्या कहेंगे? बापदादा मुस्कराते हैं, ऐसे बच्चों से बापदादा का एक प्रश्न है क्योंकि ऐसी आत्माएं प्रसन्न-चित्त नहीं रहती, प्रश्न बहुत करती है, ये ऐसा क्यों, ऐसा होता है क्या, तो वह प्रसन्न-चित्त आत्मा नहीं है, प्रश्न चित्त आत्मा है। बापदादा भी उन्हों से प्रश्न करते हैं कि आप आत्मा मुक्तिधाम में रहने वाली हो या जीवनमुक्ति में आने वाली हो? मुक्ति में रहना है फिर जीवनमुक्ति में आना है ना। तो जीवनममुक्ति में सिर्फ बाबा ब्रह्मा होगा या राजधानी होगी? सिर्फ ब्रह्मा और सरस्वती राजा रानी होंगे? जीवनमुक्ति का वर्सा पाना है ना। आप लोग चैलेन्ज करते हो कि आदि सनातन धर्म और अन्य धर्म में सबसे बड़ा अन्तर है। वो सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं। और आप धर्म और राज्य दोनों की स्थापना कर रहे हो। यह पक्का है ना। धर्म की स्थापना और राज्य की भी स्थापना कर रहे हो ना, तो राज्य में क्या होगा? सिर्फ एक राजा, एक रानी होंगे? एक राजा रानी और आप एक बच्चा या बच्ची, बस। ऐसा राज्य होता है? तो हमें राजधानी में आना है। यह याद रखो। राजधानी में आना अर्थात ब्राह्मण परिवार में सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना, श्रेष्ठ सम्बन्ध में आना। अभी बापदादा पूछेंगे सभी से कि आप माला में आने चाहते हो? या कहेंगे

तीसरी बात - अपने श्रेष्ठ ब्राह्मण परिवार को यथार्थ विधि से जो जैसा है वैसे जानना, मानना और चलना।

चौथी बात - सारे कल्प के अन्दर इस श्रेष्ठ पुरुषोत्तम युग वा समय को उसी महत्त्व से जानना, मानना और चलना। इन चार बातों में जो अटल निश्चयबुद्धि हैं और चारों में सम्पन्न परोन्टेज है तो उसको कहेंगे सम्पूर्ण यथार्थ निश्चयबुद्धि।

यह चारों ही निश्चय के फाउन्डेशन के स्तम्भ है। सिर्फ एक बाप में निश्चय है और तीनों बातों में से कोई भी स्तम्भ कमजोर है, सदा मजबूत नहीं है, कभी हिलता कभी अचल होता है, तो वह हलचल हार खिलाती है, विजयी नहीं बनाती। कोई भी हलचल कमजोर बना देती है और कमजोर सदा विजयी बन नहीं सकता। इसलिए निश्चय और विजय में अन्त्र पड़ जाता है। बापदादा के सामने बहुत बच्चें भोले बन करके रुहरुहान करते हैं, कि हमें निश्चय तो पूरा है, बाबा मैं आपको और आप मेरे हो, यह पक्का है, 100 परसेन्ट तो क्या 500 परसेन्ट निश्चय है..। लेकिन हलचल भी है। फिर मनाने के लिए कहते हैं - आप तो हमारे हो ना, पक्का कराते हैं। बहुत भोली बातें करते हैं - मैं जो हूँ, जैसी हूँ, आपकी या आपका हूँ। तो बाप भी कहते हैं आप जो हो, जैसे हो, मेरे हो। लेकिन बाप जो है जैसा है आपका है! भोला बनना अच्छा है, दिल से भोले बनो, लेकिन बातों में और कर्म में भोले नहीं बनो। दिल के भोले भोलानाथ के प्यारे हैं। बातों में भोले स्वयं को भी धोखा देते तो दूसरों को भी धोखा दे देते और कर्म के भोले अपना भी नुकसान करते हैं तो सेवा काभी नुकसान करते हैं। इसलिए दिल से भोले बनो, बिल्कूल सेन्ट, ऐसे भोले। सेन्ट अर्थात् महान आत्मा। लेकिन बातों में त्रिकालदर्शी बन करके बात सुनो और बोला। कर्म में, हर कर्म के परिणाम को नॉलेजफुल होकर जानो और फिर करो। ऐसे नहीं कि होना तो नहीं चाहिए था लेकिन हो गया, बोलना नहीं चाहिए था लेकिन बोल लिया। इससे सिद्ध है कि कर्म के परिणाम को न जान भोलेपन में कर्म कर लेते हो। ऐसे नहीं समझो कि हम भोले हैं इसीलिए ऐसे हो जाता है - ऐसे अपने को छुड़ाना नहीं है। दिल का भोला सबका प्यारा होगा। तो

बोलते हो, वैसे निमित्त बने हुए लौकिक परिवार की आत्माओं को भी उसी प्रमाण चलाते रहो। हद में नहीं आओ। मेरा बच्चा, मेरा पति इसका कल्याण हो, सर्व का कल्याण हो। अगर मेरापन है तो आत्मिक दृष्टि, कल्याण की दृष्टि दे नहीं सकेंगे।

(07.04.1983)

विशेष सेवाधारी अर्थात् हर कार्य में विशेषता दिखाने वाले। सेवाधारी तो सभी हैं लेकिन विशेष सेवाधारी, विशेषता दिखायेंगे। जब भी कोई सेवा करो, प्लैन बनाओ तो यही सोचो - सेवा में क्या विशेषता लाई? विशेष सेवा करने से विशेष आत्मायें प्रसिद्ध हो जाती हैं। सदा लक्ष्य रखो ऐसा कोई विशेष कार्य करें जिससे स्वत:ही विशेष आत्मा बन जाएँ। बाप और परिवार के आगे आ जाएँ। हमेशा कोई न कोई विशेषता दिखाने वाले। विशेषता ही न्यारा और प्यारा बनाती है ना। तो हर कार्य में विशेषता की नवीनता दिखाओ। सच्चे सेवाधारी, सर्व को अपनी शक्तियों के सहयोग से आगे बढ़ाते चलो। इसी सेवा में ही सदा तत्पर रहो।

(19.05.1983)

ज्ञान के प्रभावशाली और प्रेम के प्रभावशाली में क्या अन्तर है? ब्राह्मणों में भी दो भाग देखे ना। ब्राह्मण तो बने हैं लेकिन कोई प्यार के आधार पर, कोई ज्ञान और प्यार दोनों के आधार पर। तो दोनों में स्थिति का अन्तर है ना। जो प्यार को भी ज्ञान से समझते हैं, वह निर्विघ्न चलेंगे। जो सिर्फ प्यार के आधार पर चलते वह शक्तिशाली आत्मा नहीं होंगे। ज्ञान का बल ज़रूर चाहिए। जिनका पढ़ाई से प्यार है, मुरली से प्यार है और जिनका सिर्फ परिवार से प्यार है, उन्हों में कितना अन्तर है! ब्राह्मण जीवन अच्छी लगी, पवित्रता अच्छी लगी, इसी आधार पर आने वाले और ज्ञान की शक्ति के आधार पर आने वाले, उनमें कितना अन्तर है। ज्ञान की मस्ती, अलौकिक, निराधार रहने वाली मस्ती है। वैसे प्रेम भी एक शक्ति है लेकिन प्रेम की शक्ति वाले आधार के बिना चल नहीं सकते। कोई न कोई आधार

जरूर चाहिए। मनन शक्ति - ज्ञान की शक्ति वाले की होगी। जितनी मनन शक्ति होगी उतनी बुद्धि के एकाग्रता की शक्ति आटोमेटिकली आयेगी। और जहाँ बुद्धि की एकाग्रता है वहाँ परखने की और निर्णय करने की शक्ति स्वत: आती है। जहाँ ज्ञान का फाउण्डेशन नहीं होगा वहाँ परखने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति कमज़ोर होगी। क्योंकि एकग्रता नहीं।

(01.06.1983)

प्रभु परिवार - सर्वश्रेष्ठ परिवार

आज बापदादा अपने श्रेष्ठ ब्राह्मण परिवार को देख रहे हैं। ब्राह्मण परिवार कितना ऊँचे ते ऊँचा परिवार है। उसको सभी अच्छी तरह से जानते हो! बापदादा ने सबसे पहले परिवार के प्यारे सम्बन्ध में लाया। सिर्फ़ श्रेष्ठ आत्मा हो, यह ज्ञान नहीं दिया लेकिन श्रेष्ठ आत्मा, बच्चे हो। तो बाप और बच्चे के सम्बन्ध में लाया। जिस सम्बन्ध में आने से आपस में भी पवित्र सम्बन्ध भाई-बहन का जुटा। जहाँ बापदादा, भाई-बहन का सम्बन्ध जुटा तो क्या हो गया - 'प्रभु परिवार'। कभी स्वप्न में भी ऐसे भाग्य को सोचा था कि साकार रूप से डायरेक्ट प्रभु परिवार में वारिस बन वर्से के अधिकारी बनेंगे! वारिस बनना सबसे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ भाग्य है। कभी सोचा था कि स्वयं बाप हम बच्चों के लिए हमारे समान साकार रूपधारी बन बाप और बच्चे का वा सर्व सम्बन्धों का अनुभव करायेंगे! साकार रूप में प्रभु पालना लेंगे! यह कभी संकल्प में भी नहीं था। लेकिन अभी अनुभव कर रहे हो ना! यह सब अनुभव करने का भाग्य तब प्राप्त हुआ जब प्रभु परिवार के बने। तो कितने ऊँचे परिवार के अधिकारी बच्चे बने। कितनी पवित्र पालना में पल रहे हो! कैसे अलौकिक प्राप्तियों के झूले में झूल रहे हो! यह सब अनुभव करते हो ना। परिवार बदल गया। युग बदल गया। धर्म, कर्म सब बदल गया। युग परिवर्तन होने से दु:ख के संसार से सुखों के संसार में आ गये। साधारण आत्मा से पुरुषोत्तम बन गये। 63 जन्म कीचड़ में रहे और अभी कीचड़ में कमल बन गये। प्रभु परिवार में

सच्चा निस्वार्थ पारिवारिक प्यार। यही फाउन्डेशन रहा ना, इससे ही सभी आये ना। विश्व में अरब खरब पति बहुत हैं लेकिन परमात्म सच्चे प्यार के भिखारी हैं क्यों? अरब खरब से यह प्यार नहीं मिलता। साइन्स वालों ने देखो कितने भी अल्पकाल के सुख के साधन विश्व को दिया है लेकिन जितने बड़े वैज्ञानिक हैं उतना और कुछ खोज करें, और कुछ खोज करें इस खोज में ही खोये हुए हैं। सन्तुष्टता की अनुभूति नहीं है, और कुछ करें, और कुछ करें, इस में ही समय गँवा देते हैं। उन्हों का संसार ही खोज करना हो गया है। आप जैसे स्नेह-सम्पन्न जीवन की अनुभूति नहीं है। नेताएं देखो अपनी कुर्सी सम्भालने में ही लगे हुए हैं। कल क्या होगा- इस चिन्ता में लगे हुए हैं। और आप ब्राह्मण सदा परमात्म-प्यार के झूले में झुलते हो। कल का फिक्र नहीं हैं। न कल का फिक्र है, न काल का फिक्र है। क्यों? क्योंकि जानते हो - जो हो रहा है वह भी अच्छा और जो होना है वह और अच्छा। इसलिए अच्छा-अच्छा कहते अच्छे बन गये हो।

(18.01.1992)

आपका स्लोगन निश्चयबुद्धि विजयन्ती। फिर निश्चय और विजय में अन्तर क्यों? निश्चय और विजय दोनों निशानियाँ समान होनी चाहिए ना? लेकिन अन्तर क्यों है? इसका कारण क्या? कोई भी फाउन्डेशन जब पक्का किया जाता है तो उस स्थान को चारों आर अटेन्शन देकर पक्का किया जाता है। अगर चारों ओर में से एक कोना भी कमजोर रह जाए तो पक्का रहेगा या हिलता रहेगा? ऐसे ही निश्चय का फाउन्डेशन चारों ओर अर्थात् विशेष चार बातों का सम्पूर्ण निश्चय चाहिए। वह चार बातें पहले भी सुनाई हैं:-

एक तो बाप में सम्पूर्ण निश्चय। जो है, जैसा है, जो श्रीमत जैसे बाप की दी हुई है, उसी विधिपूर्वक यथार्थ जानना और मानना और चलना।

दूसरी बात - अपने श्रेष्ठ स्वमान सम्पन्न श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा स्वरुप को जानना, मानना और चलना।

बन चार्ट रखने की आज्ञा पालन की? तो ऐसे आज्ञाकारी को भी मार्क्स मिलती है। लेकिन सम्पूर्ण पास मार्क्स उनको मिलती है जो आज्ञाकारी बन चार्ट रखने के साथ2 पुरुषार्थ की विधि और वृद्धि की भी मार्क्स लें। जिन्होंने इस नियम का पालन किया है, जो एक्यूरेट रीति से चार्ट लिखा है, वह भी बापदादा द्वारा, ब्राह्मण परिवार द्वारा बधाइयां लेने के पात्र हैं। लेकिन इनाम लेने योग्य सर्व के सन्तुष्टता की बधाइयां लेने वाला पात्र है। यथार्थ तपस्या की निशानी है कर्म, सम्बन्ध और संस्कार - तीनों में नवीनता की विशेषता स्वयं भी अनुभव हो और औरों को भी अनुभव हो। यथार्थ चार्ट का अर्थ है हर सब्जेक्ट में प्रगति अनुभव हो, परिवर्तन अनुभव हो। परिस्थितियां व्यक्ति द्वारा या प्रकृति द्वारा या माया द्वारा आना यह ब्राह्मण जीवन में आना ही है। लेकिन स्व-स्थिति की शक्ति ने परिस्थिति के प्रभाव को ऐसे ही समाप्त किया जैसे एक मनोरंजन की सीन सामने आई और गई। संकल्प में परिस्थिति के हलचल की अनुभूति न हो। याद की यात्रा सहज भी हो और शक्तिशाली भी हो। पावरफुल याद एक समय पर डबल अनुभव कराती है। एक तरफ याद अग्नि बन भस्म करने का काम करती है, परिवर्तन करने का काम करती है और दूसरे तरफ खुशी और हल्केपन का अनुभव कराती है। ऐसे विधि-पूर्वक शक्तिशाली याद को ही यथार्थ याद कहा जाता है ।

(31.12.1991)

आज की जीव आत्मायें स्नेह अर्थात सच्चे प्यार की प्यासी हैं। स्नेह की एक घड़ी अर्थात एक बूँद की प्यासी है। सिवाए सच्चे स्नेह के कारण परेशान हो भटक रहे हैं। सच्चे रुहानी स्नेह को ढूँढ रहे हैं। ऐसी प्यासी आत्माओं को सहारा देने वाले आप मास्टर ज्ञान सागर हो। अपने आप से पूछो आप सभी आत्माओं को ब्राह्मण परिवार में परिवर्तन करने का, आकर्षित करने का विशेष आधार क्या रहा? यही सच्चा प्यार, मात-पिता का प्यार, रुहानी परिवार का प्यार - इस प्यार की प्राप्ति ने परिवर्तन किया। ज्ञान तो पीछे समझते हो लेकिन पहला आकर्षण

आना अर्थात् जन्म-जन्मान्तर के लिए तकदीर की लकीर श्रेष्ठ बन जाना। प्रभु परिवार, परिवार अर्थात् वार से परे हो गये। कभी भी प्रभु बच्चों पर वार नहीं हो सकता। प्रभु परिवार का बने, सदा के लिए सर्व प्राप्तियों के भण्डार भरपूर हो गये। ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान बन गये जो प्रकृति भी आप प्रभु बच्चों की दासी बन सेवा करेगी। प्रकृति आप प्रभु परिवार को श्रेष्ठ समझ आपके ऊपर जन्म-जन्मान्तर के लिए चंवर (पंखा)झुलाती रहेगी। श्रेष्ठ आत्माओं के स्वागत में, रिगार्ड में चंवर झुलाते हैं ना। प्रकृति सदाकाल के लिए रिगार्ड देती रहेगी। प्रभु परिवार का अभी भी सर्व आत्माओं को स्नेह है। उसी स्नेह के आधार पर अभी तक गायन और पूजन करते रहते हैं। प्रभु परिवार के चरित्रों का अभी भी कितना बड़ा यादगार शास्त्र - 'भागवत', प्यार से सुनते और सुनाते रहते हैं। प्रभु परिवार का शिक्षक और गाडली स्टूडेन्ट लाइफ का, पढ़ाई का यादगार शास्त्र - 'गीता', कितने पवित्रता से विधिपूर्वक सुनते और सुनाते हैं। प्रभु परिवार का यादगार आकाश में भी सूर्य, चन्द्रमा और लकी सितारों के रूप में मनाते और पूजते रहते हैं। प्रभु परिवार बाप के दिलतख्तनशीन बनते, ऐसा तख्त सिवाए प्रभु परिवार के और किसको भी प्राप्त हो नहीं सकता। प्रभु परिवार की यही विशेषता है। जितने भी बच्चे हैं सब बच्चे तख्तनशीन बनते हैं। और कोई भी राज्य परिवार में सब बच्चे तख्तनशीन नहीं होते हैं। लेकिन प्रभु के बच्चे सब अधिकारी हैं। इतना श्रेष्ठ और बड़ा तख्त सारे कल्प में देखा? जिसमें सभी समा जाएँ। प्रभु परिवार ऐसा परिवार है जो सभी स्वराज्य अधिकारी होते। सभी को राजा बना देता। जन्म लेते ही स्वराज्य का तिलक बापदादा सभी बच्चों को देते हैं। प्रजा तिलक नहीं देते। राज्य तिलक देते हैं। महिमा भी राज्य तिलक की है ना। राज-तिलक दिवस विशेष मनाया जाता है। आप सबने अपना राज्य तिलक दिवस मनाया है। या अभी मनाना है। मना लिया है ना। खुशी की निशानी, भाग्य की निशानी, संकट दूर होने की निशानी - 'तिलक' होता है। जब कोई किसी कार्य पर जाते हैं, कार्य सफ़ल रहे उसके लिए परिवार वाले तिलक लगाकर भेजते हैं। आप सबको तो तिलक लगा हुआ है ना।

तिलकधारी, तख्तधारी, विश्व-कल्याण के ताजधारी बन गये हो ना। भविष्य का ताज और तिलक इसी जन्म के प्राप्ति की प्रालब्ध है। विशेष प्राप्ति का समय वा प्राप्तियों की खान प्राप्त होने का समय अभी है। अभी नहीं तो भविष्य प्रालब्ध भी नहीं। इसी जीवन का गायन है - दाता के बच्चों को, वरदाता के बच्चों को अप्राप्त नहीं कोई वस्तु। भविष्य में फिर भी एक अप्राप्ति तो होगी ना। बाप का मिलन तो नहीं होगा ना। तो सर्व प्राप्तियों का जीवन ही -'ईश्वरीय परिवार' है। ऐसे परिवार में पहुँच गये हो ना। समझते हो ना ऐसे ऊँचे परिवार के हैं। जिसकी महिमा करें तो अपने रात-दिन बीत जाएँ। देखो भक्तों को कीर्तन गाते-गाते कितने दिन और रात बीत जाते हैं। अभी तक भी गा रहे हैं। तो ऐसा नशा और खुशी सदा रहती है? 'मैं कौन!' यह पहेली सदा याद रहती है। विस्मृति-स्मृति के चक्र में तो नहीं आते हो ना। चक्र से तो छूट गये ना। 'स्वदर्शन चक्रधारी' बनना अर्थात् अनेक हद के चक्करों से छूट जाना। ऐसे बन गये हो ना। सभी स्वदर्शन चक्रधारी हो ना! मास्टर होना! तो मास्टर सब जानते हैं! रोज़ अमृतवेले 'मैं कौन' - यह स्मृति में रखो तो सदा समर्थ रहेंगे। अच्छा-

बापदादा बेहद के परिवार को देख रहे हैं। बेहद का बाप बेहद के परिवार को बेहद की याद-प्यार देते हैं।

सदा श्रेष्ठ परिवार के नशे में रहने वाले, प्रभु परिवार के महत्त्व को जान, महान बनने वाले, सर्व प्राप्तियों के भण्डार, श्रेष्ठ राज्य भाग्य प्राप्त करने वाले प्रभु रत्नों को याद-प्यार और नमस्ते।

(14.12.1983)

सहज प्राप्ति की सीज़न पर मेहनत क्यों करते हो! वर्सा है, वरदान है, सीज़न है, बड़ी दिल वाला दाता है। फ़राख़दिल भाग्य विधाता है फिर भी मेहनत क्यों? सदा दिलतख्तनशीन बच्चों को मेहनत हो नहीं सकती। संकल्प किया और सफ़लता मिली। विधि का स्विच आन किया और सिद्धि प्राप्त हुई। ऐसे सिद्धि-

नशा कितना बड़ा है! तो आप क्या याद रखेंगे! वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य।

(11.12.1991)

जो ऑनेस्ट होता है उसके ऊपर बाप का, परिवार का स्वत: ही दिल का प्यार और विश्वास होता है। विश्वास के कारण फुल अधिकार उसको दे देते हैं। ऑनेस्ट आत्मा को स्वत: ही बाप का वा परिवार का प्यार अनुभव होगा। बड़ों का, चाहे छोटों का, चाहे समान वालों का, विश्वासपात्र अनुभव होगा। ऐसे प्यार के पात्र वा विश्वास के पात्र कहाँ तक बने हैं? यह भी चेक करो। ऐसे चलाओ नहीं कि इसके कारण मेरे में विश्वास नहीं है,तो मैं विश्वासपात्र कैसे बनूँ, अपने को पात्र बनाओ। कई बार ऐसे कहते हैं कि मै तो अच्छा हूँ लेकिन मेरे में विश्वास नहीं है। फिर उसके कारण लम्बे चौड़े सुनाते हैं। वह तो अनेक कारण बताते भी हैं और कई कारण बनते भी हैं। लेकिन ऑनेस्टी दिल की, दिमाग की भी ऑनेस्टी चाहिए। नहीं तो दिमाग से नीचे ऊपर बहुत करते हैं। तो दिल की भी ऑनेस्टी दिमाग की भी ऑनेस्टी। अगर सब प्रकार की ऑनेस्टी है तो ऑनेस्टी अविश्वास वाले को आज नहीं तो कल विश्वास में ला ही लेगी। जैसे कहावत है सत्य की नांव डूबती नहीं है लेकिन डगमग होती है। तो विश्वास की नांव सत्यता है, ऑनेस्टी है तो डगमग होगी लेकिन अविश्वासपात्र बनना अर्थात् डूबेगी नहीं। इसलिए सत्यता की हिम्मत से विश्वासपात्र बन सकते हो। पहले सुनाया था ना कि सत्य को सिद्ध नहीं किया जाता है। सत्य स्वयं में ही सिद्ध है। सिद्ध नहीं करो लेकिन सिद्धि स्वरूप बन जाओ। तो समय के गति के प्रमाण अभी तपस्या के कदम को सहज और तीव्र गति से आगे बढ़ाओ।

(18.12.1991)

ब्राह्मण परिवार हमारे श्रेष्ठ योगी जीवन से सन्तुष्ट रहा? तो तीनों प्रकार की सन्तुष्टता अनुभव करना अर्थात् प्राइज़ के योग्य बनना। विधि-पूर्वक आज्ञाकारी

समान परिवर्तन करेंगे। अपने में धारण नहीं करेंगे। तो संगमयुगी होलीहंस हैं यह स्मृति सदा रखनी है।

(26.10.1991)

क्वालिटी वाली आत्मा की निशानी है - वह आते ही अपनापन महसूस करेगी। उसको ये स्मृति स्पष्ट होगी कि मैं इसी परिवार का था और पहुँच गया हूँ। अपनेपन से निश्चय में या पुरुषार्थ में देरी नहीं लगेगी। वह अपने परिवार को परख लेगा, अपने बाप को पहचान लेगा। तो अपनेपन का अनुभव होना ये पुरुषार्थ में क्वालिटी की निशानी है। सिर्फ नाम या धन में क्वालिटी नहीं, उसको सिर्फ क्वालिटी नहीं कहा जाता है, लेकिन पुरुषार्थ की भी क्वालिटी उसमें हो और जिसका अटल निश्चय पक्का रहता है, उसका प्रभाव स्वत: ही औरों पर पड़ता है। अपनापन होने के कारण उसको सब सहज अनुभव होगा। इसलिए तीव्र अर्थात् फास्ट जायेगा। जहाँ अपनापन होता है वहाँ कोई भी काम मुश्किल नहीं लगता है। तो ऐसी क्वालिटी वाली आत्मायें और ज्यादा से ज्यादा निकालो। समझा।

(04.12.1991)

एक बाप एक परिवार। अनेकता खत्म हो गई और सभी एक हो गये। अपना बाप, अपना परिवार। अपना लगता है ना। चाहे कितना भी दूर हो लेकिन स्नेह समीप ले आता है। स्नेह नहीं तो साथ रहते भी दूर लगता है। तो ईश्वरीय स्नेह वाले परिवार में आ गये। इसलिए सदा याद रखो - ओहो मेरा श्रेष्ठ भाग्य! भाग्य विधाता द्वारा श्रेष्ठ भाग्य पा लिया। जब बाप ने अपना बना लिया तो और क्या चाहिए? अच्छा बन गये ना तो इच्छा खत्म हो गई। अच्छा नहीं बनते तो इच्छा रहती। इच्छायें सब सम्पन्न हो गई। बाप मिला सब कुछ मिला। तो तृप्त आत्मा सदा रूहानी नशे में रहती है। जो भरपूर आत्मा होती है तो उसके नशे को देखो - कहे, नहीं कहे, लेकिन उसका नशा स्वत: दिखाई पड़ता है। तो आपका रूहानी

स्वरूप हो ना वा मेहनत कर-कर के थक जाते हो। मेहनत करने का कारण है - अलबेलापन और आलस्य। स्मृति-स्वरूप के किले के अन्दर नहीं

आज सर्व सहजयोगी, सदा सहयोगी बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। सर्व तरफ़ से आये हुए बाप के बच्चे - एक बल एक भरोसा, एक मत, एकरस, एक ही के गुण गाने वाले, एक ही के साथ सर्व सम्बन्ध निभाने वाले, एक के साथ सदा रहने वाले, एक ही प्रभु परिवार के एक लक्ष्य, एक ही लक्षण सर्व को एक ही शुभ और श्रेष्ठ भावना से देखने वाले, सर्व को एक ही श्रेष्ठ शुभ कामना से सदा ऊँचा ऊड़ाने वाले, एक ही संसार, एक ही संसार में सर्व प्राप्ति का अनुभव करने वाले, आँख खोलते ही एक बाबा! हर एक काम करते एक साथी बाबा, दिन समाप्त करते कर्मयोग वा सेवा का कार्य समाप्त करते एक के लव में लीन हो जाते, एक के साथ लवलीन बन जाते अर्थात् एक के स्नेह रुपी गोदी में समा जाते। दिन रात एक ही के साथ दिनचर्या बिताते। सेवा के सम्बन्ध में आते, परिवार के सम्बन्ध में आते फिर भी अनेक में एक देखते। एक बाप का परिवार है। एक बाप ने सेवा प्रति निमित्त बनाया है। इसी विधि से अनेकों के सम्बन्ध सम्पर्क में आते, अनेक में भी एक देखते। ब्राह्मण जीवन में, हीरो पार्टधारी बनने की जीवन में, पास विद् आनर बनने की जीवन में, सिर्फ़ सीखना है तो क्या? - 'एक का हिसाब'। बस एक को जाना तो सब कुछ जाना। सब कुछ पाया। एक लिखना, सीखना, याद करना, सबसे सरल, सहज है।

पौलैण्ड ग्रुप से - बापदादा को खुशी है कि सभी बच्चे अपने स्वीट होम में पहुँच गये। आप सबको भी यह खुशी है ना कि हम ऐसे महान तीर्थ पर पहुँच गये। श्रेष्ठ जीवन तो अभ्यास करते-करते बन ही जायेगी लेकिन ऐसा श्रेष्ठ भाग्य पा लिया जो इस स्थान पर अपने सच्चे ईश्वरीय स्नेह वाली परिवार में पहुँच गये। इतना खर्च करके आये हो इतनी मेहनत से आये हो, अभी समझते हो कि खर्चा और मेहनत सफल हुई। ऐसे तो नहीं समझते हो पता नहीं कहाँ पहुँच गये! कितना परिवार के और बाप के प्यारे हो। बापदादा सदा बच्चों की विशेषता को देखते हैं।

आप लोग अपनी विशेषता को जानते हो? यह विशेषता तो हैं - जो लगन से इतना दूर से यहाँ पहुँचे। अभी सदा अपने ईश्वरीय परिवार को और इस ईश्वरीय विधि राजयोग को सदा साथ में रखते रहना। अभी वहाँ जाकर राजयोग केन्द्र अच्छी तरह से आगे बढ़ाना। क्योंकि कई ऐसी आत्मायें हैं जो सच्चे शान्ति, सच्चे प्रेम और सच्चे सुख की प्यासी हैं। उन्हों को रास्ता तो बतायेंगे ना। वैसे भी कोई पानी का प्यासा हो, अगर समय पर कोई उसे पानी पिलाता है तो जीवन भर वह उसके गुण गाता रहता है। तो आप जन्म-जन्मान्तर के लिए आत्माओं के सुख-शान्ति की प्यास बुझाना, इससे पुण्य आत्मा बन जायेंगे। आपकी खुशी देखकर सब खुश हो जायेंगे। खुशी ही सेवा का साधन है।

(01.03.1984)

ऐसा श्रेष्ठ जन्म जो भगवान के बच्चे बन जायें - ऐसा सारे कल्प में नहीं होता। पाँच हजार वर्ष के अन्दर सिर्फ़ इस समय यह अलौकिक जन्म होता है। सतयुग में भी आत्माओं के परिवार में आयेंगे लेकिन अब परमात्म सन्तान हो। तो इसी विशेषता को सदा याद रखो। सदा - मैं ब्राह्मण ऊँचे ते ऊँचे धर्म, कर्म और परिवार का हूँ। इसी स्मृति द्वारा हर कदम में आगे बढ़ते चलो। पुरुषार्थ की गति सदा तेज हो। उड़ती कला सदा ही मायाजीत और निर्बन्धन बना देगी। जब बाप को अपना बना दिया तो और रहा ही क्या। एक रह गया था। एक में ही सब समाया हुआ है। एक की याद में, एकरस स्थिति में स्थित होने से शान्ति, शक्ति और सुख की अनुभूति होती रहेगी।

(07.03.1984)

सभी बहुत बार मिले हो और अब फ़िर से मिल रहे हो - क्योंकि ज़ब कल्प पहले मिले थे तब अब मिल रहे हो। कल्प पहले वाली आत्मायें फ़िर से अपना हक लेने के लिए पहुँच गई हैं? नया नहीं लगता है ना! पहचान याद आ रही

पाजिटिव को धारण करे। देखते हुए सुनते हुए न देखे न सुने। यह है होलीहंस की विशेषता। तो ऐसे हो या कभी नगेटिव भी देख लेते हो? निगेटिव अर्थात् व्यर्थ बातें, व्यर्थ कर्म न सुने न करें और न बोलें । तो ऐसी शक्ति है जो व्यर्थ को समर्थ में चेंज कर दो। या व्यर्थ चलता है? चाहते नहीं हैं लेकिन चल पड़ता है ,ऐसे तो नहीं है? यदि व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने की शक्ति नहीं होगी तो अन्त में व्यर्थ का संस्कार धोखा दे देगा। इसलिए होलीहंस अर्थात् परिवर्तन करना। व्यर्थ को समर्थ में चेंज करने के लिए विशेष क्या अभ्यास चाहिए? कैसे चेंज करेंगे? संकल्प पावरफुल कैसे बनेगा? हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना अगर ऐसी विधि होगी तो परिवर्तन कर लेंगे। अगर किसी के प्रति शुभ भावना होती है तो उसकी उल्टी बात भी सुल्टी लगती है और शुभ भावना नहीं होगी तो सुल्टी बात भी उल्टी लगेगी। इसलिए हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना सदा आवश्यक है। तो यह रहती है या कभी कभी व्यर्थ भावना भी हो जाती है? अपनी शुभ भावना व्यर्थ वाले को भी चेंज कर देती है। वैसे भी गाया हुआ है कि भावना का फल मिलता है। जब भक्तों को भावना का फल मिलता है तो आपको शुभ भावना का फल नहीं मिलेगा? तो व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने का आधार है शुभ भावना, शुभ कामना। कैसा भी हो लेकिन आप शुभ भावना दो। कितना भी गंदा पानी इक्ट्ठा हो लेकिन अच्छा डालते जायेंगे तो गंदा निकलता जायेगा। अगर कोई आत्मा में व्यर्थ को निकालने की समर्थी नहीं है तो आप अपनी शुभ भावना की समर्थी से उसके व्यर्थ को समर्थ कर दो। परिवर्तन कर दो। इतनी शक्ति है या कभी असर हो जाता है? जैसे बापदादा ने आपके व्यर्थ कर्म को देखकर परिवर्तन कर लिया ना। कैसे किया? शुभ भावना से मेरे बच्चे हैं। तो आपकी शुभ भावना कि मेरा परिवार है, ईश्वरीय परिवार है। कैसा भी है चाहे वह पत्थर है लेकिन आप पत्थर को भी पानी कर दो। ऐसी शुभ भावना और शुभ कामना वाले होलीहंस हो? हंस को सदा स्वच्छ दिखाते हैं। तो स्वच्छ बुद्धि हंस के

तो सदैव यह चेक करो कि मैंने मर्सीफुल बाप का बच्चा बन कितनी आत्माओं पर रहम किया है? सिर्फ वाणी से नहीं, मन्सा अपनी वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा भी आत्माओं को बाप द्वारा मिली हुई शक्तियां दे सको। तो मन्सा सेवा करने आती है? जब थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है तो तीव्र गति से सेवा करो। जितना स्वयं को सेवा में बिज़ी रखेंगे उतना स्वयं सहज मायाजीत बन जायेंगे। क्योंकि औरों को मायाजीत बनाने से उन आत्माओं की दुवाएं आपको और सहज आगे बढ़ाती रहेगी।

(17.03.1991)

आज के विश्व में सम्पत्ति वाले तो बहुत हैं लेकिन आपके पास सबसे बड़े ते बड़ी सम्पत्ति कौन सी है जो दुनिया वालों के पास नहीं है? और उसी की आवश्यकता सम्पत्ति वालों को भी है तो गरीब को भी है। वह कौन सी सम्पत्ति है? सबसे बड़े ते बड़ी आवश्यक सम्पत्ति है सिम्पथी। चाहे गरीब हैं चाहे धनवान हैं लेकिन आज सिम्पथी नहीं है। सिम्पथी की सम्पत्ति सबसे बड़े ते बड़ी है। और कुछ भी नहीं दो लेकिन सिम्पथी से सबको सन्तुष्ट कर सकते हो। और आपकी सिम्पथी ईश्वरीय परिवार के नाते से सिम्पथी है। अल्पकाल की सिम्पथी नहीं। पारिवारिक सिम्पथी सबसे बड़े ते बड़ी सिम्पथी है और यह सबको आवश्यक है और आप सबको दे सकते हो। रूहानी सिम्पथी तन मन और धन की भी पूर्ति कर सकती है।

सदा अपने को होलीहंस समझते हो? होलीहंस का कर्तव्य क्या होता है? होलीहंस अर्थात् जो सदा सत्य और असत्य का निर्णय कर सके। हंस में निर्णय शक्ति तीव्र होती है। जिस निर्णय शक्ति के आधार पर कंकड़ और रतन को अलग कर सकते हैं। रतन को ग्रहण करेगा और कंकड़ को छोड़ देगा। तो होलीहंस अर्थात् जो सदा निर्णय शक्ति में नम्बरवन हो। निगेटिव को छोड़ दे और

है कि हम बहुत बारी मिले हैं! पहचाना हुआ घर लग रहा है। ज़ब अपना कोई मिल जाता है तो अपने को देखकर खुशी होती है। अभी समझते हो कि वह जो सम्बन्ध था वह स्वार्थ का सम्बन्ध था, असली नहीं था। अपने परिवार में, अपने स्वीट होम में पहुँच गये। बापदादा भी भले पधारे कहकर स्वागत कर रहे हैं।

(09.03.1984)

सन्तुष्टता रुहानियत की सहज विधि है। प्रसन्नता सहज सिद्धि है। जिसके पास सन्तुष्टता है वह सदा प्रसन्न स्वरुप अवश्य दिखाई देगा। सन्तुष्टता सर्व प्राप्ति स्वरुप है। सन्तुष्टता सदा हर विशेषता को धारण करने में सहज साधन है। सन्तुष्टता का खज़ाना सर्व खज़ानों को स्वत: ही अपनी तरफ़ आकर्षित करता है। सन्तुष्टता ज्ञान की सबजेक्ट का प्रत्यक्ष प्रमाण है। सन्तुष्टता बेफिकर बादशाह बनाती है। सन्तुष्टता सदा स्वमान की सीट पर सेट रहने का साधन है। सन्तुष्टता महादानी, विश्व कल्याणी वरदानी सदा और सहज बनाती है। सन्तुष्टता हद के मेरे तेरे के चक्र से मुक्त कराए स्वदर्शन चक्रधारी बनाती है। सन्तुष्टता सदा निर्विकल्प, एकरस के विजयी आसन की अधिकारी बनाती है। सदा बापदादा के दिलतख्तनशीन, सहज स्मृति के तिलकधारी, विश्व परिवर्तन के सेवा के ताजधारी इसी अधिकार के सम्पन्न स्वरुप में स्थित करती है। सनतुष्टता ब्राह्मण जीवन का जीयदान है। ब्राह्मण जीवन के उन्नति का सहज साधन है। स्व से सन्तुष्ट, परिवार से सन्तुष्ट और परिवार उनसे सन्तुष्ट। किसी भी परिस्थिति में रहते हुए, वायुमण्डल वायब्रेशन की हलचल में भी सन्तुष्ट। ऐसे सन्तुष्टता स्वरुप, श्रेष्ठ आत्मा विजयी रत्न के सर्टीफिकेट के अधिकारी है। तीन सर्टीफिकेट लेने पड़ें -

(1) स्व की स्व से सन्तुष्टता (2) बाप द्वारा सदा सन्तुष्टता (3) ब्राह्मण परिवार द्वारा सन्तुष्टता।

इससे अपने वर्तमान और भविष्य को श्रेष्ठ बना सकते हो। अभी भी सर्टीफ़िकेट लेने का समय है। ले सकते हैं लेकिन ज़्यादा समय नहीं है। अभी लेट

हैं लेकिन टूलेट नहीं हैं। अभी भी सन्तुष्टता की विशेषता से आगे बढ़ सकते हो। अभी लास्ट सो फ़ास्ट सो फ़र्स्ट की मार्जिन है। फ़िर लास्ट सो लास्ट हो जायेंगे।

(12.03.1984)

जब तेरा कहा तो मेरे-पन का बन्धन समाप्त हो गया। यह हद का मेरा, यही मोह का धागा है। धागा कहो, ज़ंज़ीर कहो, रस्सी कहो, यह बन्धन में बांधता है। ज़ब सब कुछ आपका है यह सम्बन्ध जोड़ लिया तो बन्धन समाप्त हो सम्बन्ध बन जाता है। किसी भी प्रकार का बन्धन चाहे देह का, स्वभाव का, संस्कार का, मन के झुकाव का यह बन्धन सिद्ध करता है बाप से सर्व सम्बन्ध की, सदा के सम्बन्ध की कमज़ोरी है। कई बच्चे सदा और सर्व सम्बन्ध में बन्धन मुक्त रहते। और कई बच्चे समय प्रमाण मतलब से सम्बन्ध जोड़ते हैं। इसलिए ब्राह्मण जीवन का अलौकिक रुहानी मज़ा पाने से वंचित रह जाते हैं। न स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट और न दूसरों से सन्तुष्टता का आशीर्वाद ले सकते। ब्राह्मण ज़ीवन श्रेष्ठ सम्बन्धों का ज़ीवन है ही - बाप और सर्व ब्राह्मण परिवार का आशीर्वाद लेने का ज़ीवन। आशीर्वाद अर्थात् शुभ भावनायें, शुभ कामनायें। आप ब्राह्मणों का जन्म ही बापदादा की आशीर्वाद कहो, वरदान कहो इसी आधार से हुआ है। बाप ने कहा - आप भाग्यवान, श्रेष्ठ विशेष आत्मा हो। इसी स्मृति रुपी आशीर्वाद वा वरदान से शुभ भावना, शुभ कामना से आप ब्राह्मणों का नया जीवन, नया जन्म हुआ है। सदा आशीर्वाद लेते रहना। यही संगमयुग की विशेषता है!

(02.04.1984)

याद रहे - वाह मेरे श्रेष्ठ तकदीर की श्रेष्ठ लकीर! बाप मिला, सेवा मिली, सेवास्थान मिला और सेवा के साथ-साथ सर्व आत्माओं का श्रेष्ठ परिवार मिला। क्या नहीं मिला! राज्य भाग्य सब मिल गया। यह खुशी सदा रहे। विधि द्वारा

स्नेही बनना। पहले 108 की माला बने तब दूसरी बने। बापदादा बहुत बार माला तैयार करने के लिए बैठते हैं लेकिन अभी पूरी ही नहीं हुई है। मणका, मणके के समीप तब आता है अर्थात् बाप उसको पिरोता तभी है जब उस मणके को तीन सर्टिफिकेट हों - बाप पसंद, ब्राह्मण-परिवार पसंद और अपने यथार्थ पुरुषार्थ पसंद। तीनों बाते चेक करते हैं तो मणका हाथ में ही रह जाता है, माला में नहीं आता। तो इस वर्ष कौन-सा सलोगन याद रखेंगे? त्रिमूर्ति बाप और विशेष तीनों सम्बन्ध द्वारा तीन सर्टिफिकेट लेना है।

(31.03.1990)

सभी बच्चों को नथिंग न्यु का पाठ हर परिस्थिति में सदा स्मृति में रहे। ब्राह्मण जीवन अर्थात् क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की रेखा हो नहीं सकती। कितने बार यह समाचार भी सुना होगा। नया समाचार है क्या? नहीं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् हर समाचार सुनते कल्प पहले की स्मृति में समर्थ रहे - जो होना है वह हो रहा है, इसलिए क्या होगा - यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। त्रिकालदर्शी हो, ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हो तो क्या वर्तमान को नहीं जानते हैं? घबराते तो नहीं हो ना! ब्राह्मण जीवन में हर कदम में कल्याण है। घबराने की बात नहीं है। आप सबका कत्तव्य है अपने शान्ति की शक्ति से अशान्त आत्माओं को शान्ति की किरणें देना। अपने ही आपके भाई-बहिन हैं, तो अपने ईश्वरीय परिवार के सम्बन्ध से सहयोगी बनो। जितना ही युद्ध में तीव्र गति है, आप योगी आत्माओं का योग उन्होंको शान्ति का सहयोग देगा। इसलिए और विशेष समय निकाल शान्ति का सहयोग दो - यह है आप ब्राह्मण आत्माओं का कत्तव्य। अच्छा।

(18.01.1991)

यह सब अपना ही परिवार है। आपके ब्रदर्स है ना? अपने परिवार को खाली देख रह नहीं सकते हैं। ऐसा रहम आता है? क्योंकि जैसा बाप, वैसे बच्चे।

वैरीफाय करना पड़े। बाप तो ज्यादा रहमदिल है ना तो हां जी कह देंगे। अच्छा सभी की डिपार्टमेन्ट निर्विघ्न हैं स्वयं भी निर्विघ्न हैं? सेवा की खुशबू तो विश्व में भी है तो सूक्ष्मवतन तक भी है। अभी सिर्फ इन तीन सर्टिफिकेट को वैरीफाय करना।

(25.03.1990)

वर्तमान समय के प्रमाण मर्सीफुल बाप बच्चों को भी कहते हैं कि बाप के सहयोगी साथी भुजाएं आप ब्राह्मण बच्चे हो। तो जिस चीज की आवश्यक्ता है, वह देने से प्रसन्न हो जाते हैं। तो मास्टर मर्सीफुल बने हो? आपके ही भाई-बहने हैं - चाहे सगे हैं वा लगे हैं लेकिन हैं तो परिवार के। अपने परिवार के अन्जान, परेशान आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनो। दिल से रहम आये। विश्व की अन्जान आत्माओं के लिए भी रहम चाहिए। और साथ-साथ ब्राह्मण-परिवार के पुरुषार्थ की तीव्रगति के लिए वा स्व-उन्नति के लिए रहमदिल की आवश्यक्ता है। स्व-उन्नति के लिए स्व पर जब रहमदिल बनते हैं तो रहमदिल आत्मा को सदा बेहद की वैराग्यवृत्ति स्वत: ही आती है। स्व के प्रति भी रहम हो कि मैं कितनी ऊंच-ते-ऊंच बाप की वही आत्मा हूँ और वही बाप समाम बनने के लक्ष्यधारी हूँ। उस प्रमाण ओरिजनल श्रेष्ठ स्वभाव वा संस्कार में अगर कोई कमी है तो अपने ऊपर दिल का रहम, कमियों से वैराग्य दिला देगा।

स्व-उन्नति तो करेंगे लेकिन परिवर्तन क्या लायेंगे? चाहे महारथी हो चाहे नये हो - बापदादा की एक ही शुभ आशा है, जितना चाहते हैं उतना अभी हुआ नहीं है। रिजल्ट तो सुनायेंगे ना। बापदादा अल्पकाल का वैराग नहीं चाहते हैं। निजी वैराग आये - जो बाप को अच्छा नहीं लगता वह नहीं करना है, नहीं सोचना है, नहीं बोलना है। इसको बापदादा कहते 'दिल का प्यार'। अभी मिक्स है, कभी दिल का प्यार है, कभी दिमाग का प्यार है। माला का हर एक मणका हरेक मणके के साथ समीप हो, स्नेही हो, प्रगति के लिए सहयोगी हो, इसलिए माला रुकी हुई है। क्योंकि माला तैयार होना अर्थात् युगल दाने के समान एक-दो के भी समीप

सदा वृद्धि को पाते रहो। निमित्त भाव की विधि से सेवा में वृद्धि होती रहेगी।

(10.04.1984)

आज बापदादा सभी बच्चों को देख रहे हैं कि कौन से बच्चे भावना से बाप के पास पहुँचे हैं, कौन से बच्चे पहचान कर पाने अर्थात् बनने के लिए पहुँचे हैं। दोनों प्रकार के बच्चे बाप के घर में पहुँचे। भावना वाले भावना का फल यथा शक्ति-खुशी, शान्ति, ज्ञान वा प्रेम का फल प्राप्त कर इसी में खुश हो जाते हैं। फ़िर भी भक्ति की भावना और अब बाप के परिचय से बाप वा परिवार के प्रति भावना इसमें अन्तर है। भक्ति की भावना अन्धश्रद्धा की भावना है। इनडायरेक्ट मिलने की भावना, अल्पकाल के स्वार्थ की भावना है। वर्तमान समय ज्ञान के आधार पर जो बच्चों की भावना है वह भक्ति मार्ग से अति श्रेष्ठ है। कयोंकि इनडायरेक्ट देव आत्माओं द्वारा नहीं है - डायरेक्ट बाप के प्रति भावना है, पहचान है लेकिन भावनापूर्वक पहचान और ज्ञान द्वारा पहचान इसमें अन्तर है। ज्ञान द्वारा पहचान अर्थात् बाप जो है जैसा है, मैं भी जो हूँ जैसा हूँ उसे विधिपूर्वक जानना अर्थात् बाप समान बनना। जाना तो सभी ने है लेकिन भावनापूर्वक वा ज्ञान की विधि पूर्वक, इस अन्तर को जानना पड़े।

(19.04.1984)

हम सब आत्मायें एक बापके हैं। एक ही परिवार के हैं, एक ही घरके हैं। एक ही सृष्टि मंच पर पार्ट बजाने वाले हैं। हम सर्व आत्माओं का एक ही स्वधर्म शान्ति और पवित्रता है। बस इसी पाठ से स्व-परिवर्तन और विश्व परिवर्तन कर रहे हो और निश्चित होना ही है। सहज बात है ना! मुश्किल तो नहीं। अनपढ़ भी इस पाठ से नालेजफुल बन गये हो। क्योंकि रचयिता बीज को जान रचयिता द्वारा रचना को स्वत: ही जान जाते। सभी नालेजफुल हो ना! सारी पढ़ाई-रचता और रचना की, सिर्फ तीन शब्दों में पढ़ ली है। 'आत्मा परमात्मा और सृष्टि चक्र'। इन तीनों

शब्दों से क्या बन गये हो! कौन-सा सर्टीफिकेट मिला है? बी.ए., एम.ए. का सर्टिफिकेट तो नहीं मिला। लेकिन 'त्रिकालदर्शी, ज्ञान स्वरुप' यह टाइटल तो मिले हैं ना। और सोर्स आफ इनका क्या हुआ? क्या मिला? सत शिक्षक द्वारा अविनाशी जन्म-जन्म सर्व प्राप्ति की गैरन्टी मिली है। वैसे टीचर गैरन्टी नहीं देता कि सदा कमाते रहेंगे वा धनवान रहेंगे। वह सिर्फ पढ़ा के योग्य बना देते हैं। तुम बच्चों को वा गाडली स्टूडेन्ट को बाप-शिक्षक द्वारा, वर्तमान के अधार से 21 जन्म सतयुग त्रेता के सदा ही सुख शान्ति, सम्पत्ति, आनन्द, प्रेम, सुखदाई परिवार मिलना ही है। मिलेगा नहीं, मिलना ही है। यह गैरन्टी है।

(22.04.1984)

सभी सन्तुष्ट और खुश हैं ना! सेवा में सन्तुष्ट, स्व से सन्तुष्ट और आने वाले परिवार से सन्तुष्ट। तीनों ही सन्तुष्टता, इसको कहते हैं -सन्तुष्ट आत्मा। टीचर का अर्थ ही है-मास्टर दाता बन सहयोग देने वाली।

(21.11.1984)

ब्राह्मण परिवार और सेवा की प्रवृत्ति, इसको कहा जाता है -सम्बन्ध सम्पर्क। इसमें किसी न किसी बात से जैसा अनुभव होना चाहिए वैसा नहीं करते। इस कारण दोनों लहरें चलती हैं। अभी समय की समीपता के कारण पुरूषार्थ की यह रफ्तार समय प्रमाण सम्पूर्ण मंजिल पर पहुँचा नहीं सकेगी। अभी समय है विघ्न-विनाशक बन विश्व के विघ्नों के बीच दुखी आत्माओं को सुख चैन की अनुभूति कराना। बहुत काल से निर्विघ्न स्थिति वाला ही विघ्न-विनाशक का कार्य कर सकता है। अभी तक अपने जीवन में आये हुए विघ्नों को मिटाने में बिजी रहेंगे, उसमें ही शक्ति लागायेंगे तो दूसरों को शक्ति देने के निमित्त कैसे बन सकेंगे? निर्विघ्न बन शक्तियों स्टाक जमा करो-तब शक्ति रूप बन विघ्न -विनाशक का

करते। आप करने वाले निमित्त हो। मैं योग्य नहीं हूँ - यह संकल्प कैसे करते हो? यह कमजोर संकल्प, यह बीज ही कमजोर डालते हो और फिर सोचते हो फल अच्छा क्यों नहीं निकला! बीज कमजोर और फल शक्तिशाली निकले यह हो सकता है क्या? फाउण्डेशन कमजोर डालते हो। बाकी बापदादा, ब्राह्मण-परिवार, ड्रामा, संगमयुग का समय सब आपकी सफलता में मददगार हैं। आपके चारों तरफ शक्तिशाली हैं। बापदादा, ब्राह्मण-परिवार, समय और स्वयं। चारों तरफ मजबूत हैं तो हिलेगा क्यों, समझा? लेटर्स जो लिखते हो वह फालतू नहीं लिखते। बापदादा के प्यारे हो। बापदादा ने हर बच्चे की जिम्मेवारी सदा के लिए ली हुई है। सिर्फ अपने ऊपर जिम्मेवारी गलती से नहीं ले लो। फिर देखो सफलता आपके चरणों में, स्वयं सफलता आपके गले की माला बनेगी, चरण छुयेगी। सिवाए ब्राह्मणों के और कहीं सफलता जा नहीं सकती। यह संगमयुग का वरदान है। सिर्फ बाप की जिम्मेवारी को अपने ऊपर नहीं उठाओ। समझा?

(19.03.1990)

सेवा की मुबारकें सेवा के सर्टिफिकेट तो बहुत मिले हैं और कौन-से सर्टिफिकेट लेने हैं? एक- अपने पुरुषार्थ में दिलपसंद हो, दूसरा- प्रभु पसंद हो और तीसरा- परिवार पसंद हो। यह तीनों सर्टिफिकेट हरेक को लेने हैं। ऐसे नहीं एक सर्टिफिकेट हो दिल-पसन्द का दूसरे न हों। तीनों ही चाहिए। तो बाप के पसंद कौन हैं? जो बाप ने कहा और किया। यह है 'प्रभु-पसंद का सर्टीफिकेट'। और अपने पसंद अर्थात् जो आपकी दिल है वही बाप की दिल हो। अपने हद के दिल-पसंद नहीं लेकिन बाप की दिल सो मेरी दिल। जो बाप की दिल-पसंद वा मेरी दिल-पसंद इसको कहते हैं दिल-पसंद का सर्टिफिकेट और परिवार की संतुष्टता का सर्टिफिकेट। तो यह तीनों सर्टिफिकेट लिए हैं? सर्टिफिकेट जो मिलता है उसमें वैरीफाय भी होता है। बड़ों से वैरीफाय भी करना पड़े बाप तो जल्दी राजी हो जाते लेकिन यह सबको राजी करना है। तो जो साथ रहते हैं उनसे सर्टिफिकेट को

अच्छा लगता है? जिसे सिर्फ बाबा अच्छा लगेगा वह परिवार में नहीं आ सकेगा। बापदादा परिवार को देख सदा हर्षित होते हैं और सदा एक-दो की विशेषता को देख हर्षित रहते हैं। हर ब्राह्मण आत्मा के प्रति यही संकल्प रहता कि 'वाह ब्राह्मण-आत्मा वाह!' देखो बाप का बच्चों से इतना प्यार है तब तो आते हैं ना, नहीं तो ऊपर बैठकर मिल लें। सिर्फ ऊपर से तो बैठकर नहीं मिलते। आप विदेश से आते हो तो बापदादा भी विदेश से आते हैं। सबसे दूर-से-दूर से आते हैं लेकिन आते सेकण्ड में हैं। आप सभी भी सेकण्ड में उड़ती कला का अनुभव करते हो? सेकण्ड में उड़ सकते हो? इतने डबल लाइट हो, संकल्प किया और पहुँच गये। परमधाम कहा और पहुँचे, ऐसी प्रैक्टिस है? कहां अटक तो नहीं जाते हो? कभी कोई बादल तंग तो नहीं करते हैं, केयरफुल भी हो और क्लियर भी, ऐसे है ना!

(13.03.1990)

कभी-कभी कोई बच्चे क्या करते हैं - आज हालचाल सुनाते हैं। कई सोचते हैं सेवा तो कर रहे हैं लेकिन बाप का वायदा है कि मैं सदा मददगार हूँ - इस सेवा में तो मदद की नहीं। सफलता कम निकली। बापदादा ने क्यों नहीं मदद की। फिर सोचते शायद मैं योग्य नहीं हूँ। मैं सेवा कर नहीं सकती हूँ, मैं कमजोर हूँ। व्यर्थ सोचते हैं लेकिन अगर कोई बच्चा सेवा की मदद के लिए बाप के आगे संकल्प करते भी हैं, खुली दिल से करो। लेकिन इसका रिटर्न बापदादा सेवा के समय विशेष मदद देते हैं - सिर्फ एक विधि अपनाओ। कैसी भी मुश्किल सेवा हो लेकिन बाप को सेवा भी बुद्धि से अर्पण कर दो। मैंने किया, सफलता नहीं हुई, मैं कहां से आया? बाप करनकरावनहार की जिम्मेवारी भूल करके अपने ऊपर क्यों उठाई? यह रांग हो जाता है। बाप की सेवा हैं, बाप आवश्य करेगा। बाप को आगे रखो, अपने को आगे नहीं रखो। मैंने यह किया, यह 'मैं' शब्द सफलता को दूर करता है। समझा। दोनों प्रकार के पत्र और रुह-रूहान होती है। एक कमजोरी के पत्र या रुह-रूहान और कोई सेवा में सफलता प्रति पत्र लिखते या रुह-रूहान

कार्य कर सकेंगे।

(28.11.1984)

आज बापदादा अपनी सर्वश्रेष्ठ भुजाओं को देख रहें हैं। सभी भुजायें स्नेह और शक्ति द्वारा विश्व को परिवर्तन के कार्य में लगी हुई हैं। एक की सब भुजायें हैं। इसलिए सबके अन्दर एक ही लगन है, कि अपने ईश्वरीय परिवार के अपने ही भाई-बहनें जो बाप को और अपने असली परिवार को न जानने के कारण बच्चे होते हुए भी भाग्य विधाता बाप भाग्य प्राप्त करने से वंचित हैं-ऐसे भाग्य से वंचित आत्माओं को सुरजीत करें। कुछ न कुछ अधिकार की अंचली द्वारा उन्हों को भी बाप के परिचय से परिचित करें। क्योंकि आप सभी सारी वंशवली के बड़े हो। तो बड़े बच्चे बाप समान गाये जाते हैं। इसलिए बड़ों को छोटे अनजान भाई बहनों प्रति रहम और प्यार स्वत: ही आता है। जैसे हद के परिवार के बड़ों को परिवार के प्रति सदा ध्यान रहता है, ऐसे तुम बेहद के परिवार के बड़ों को ध्यान रहता है ना! कितना बड़ा परिवार है। सारा बेहद का परिवार सामने रहता है? सभी प्रति रहम की किरणें, रूहानी आशीर्वाद की किरणें, वरदान की किरणें फैलाने वाले मास्टर सूर्य हो ना? जैसे सूर्य जितना स्वयं ऊंचा होगा तो चारों ओर किरणें फैलायेंगे। नीचे होने से चारों ओर किरणें नहीं फैला सकते हैं। ऐसे आप ऊंचे ते ऊंचे बाप समान ऊंची स्थिति में स्थित होते तब ही बेहद की किरणें फैला सकते हो अर्थात् बेहद के सेवाधारी बन सकते हो।

(05.12.1984)

अपने को देखो कि खजाने भरपूर हैं? दाता के बच्चे सर्व को देने की भावना है वा अपने में ही मस्त हैं। स्व की पालना में ही समय बीत जाता वा औरों की पालना का समय और खजाना भरपूर है। यहाँ संगम से ही रूहानी पालना के संस्कार वाले भविष्य में प्रजा के पालनहार विश्व राजन् बन सकते हैं। राजा वा प्रजा

का स्टैम्प यहाँ से ही लगता है। स्टेटस वहाँ मिलता है। अगर यहाँ की स्टैम्प नहीं तो स्टेटस नहीं। संगमयुग स्टैम्प आफिस है। बाप द्वारा ब्राह्मण परिवार द्वारा स्टैम्प लगती है। तो अपने आप को अच्छी तरह से देखो। स्टाक चेक करो। ऐसे न हो समय पर एक अप्राप्ति भी सम्पन्न बनने में धोखा दे देवे! जैसे स्थूल स्टाक जमा करते, अगर सब राशन जमाकर लिया लेकिन छोटा सा माचिस रह गया तो अनाज क्या करेंगे। अनेक प्राप्तियाँ होते भी एक अप्राप्ति धोखा दे सकती है। ऐसे एक भी अप्राप्ति सम्पन्नता का स्टैम्प लगाने के अधिकारी बनने में धोखा दे देगी।

जब एक बाप है, दूसरा है ही नहीं तो सहज ही एकरस स्थिति हो जाती है। ऐसे अनुभव है? जब दूसरा कोई है ही नहीं तो बुद्धि कहाँ जायेगी और कहाँ जाने की मार्जिन ही नहीं है। है ही एक। जहाँ दो चार बातें होती हैं तो सोचने को मार्जिन हो जाती। जब एक ही रास्ता है तो कहाँ जायेंगे! तो यहाँ मार्ग बताने के लिए ही सहज विधि है - एक बाप,एक मत, एकरस एक ही परिवार। तो एक ही बात याद रखो तो वन नम्बर हो जायेंगे। एक का हिसाब जानना है, बस। कहाँ भी रहो लेकिन एक की याद है तो सदा एक के साथ हैं, दूर नहीं। जहाँ बाप का साथ है वहाँ माया का साथ हो नहीं सकता। बाप से किनारा करके फिर माया आती है। ऐसे नहीं आती। न किनारा हो न माया आये। एक का ही महत्व है।

(12.12.1984)

स्थूल सम्पत्ति किसलिए कमाते हैं? दाल रोटी सुख से खावें। परिवार सुखी हो। दुनिया में नाम अच्छा हो! आप अपने को देखो कितने सुख और खुशी की, दाल रोटी मिल रही है। जो गायन भी है - दाल रोटी खाओ भगवान के गीत गाओ । ऐसे गायन की हुई दाल रोटी खा रहे हो। और ब्राह्मण बच्चों को बापदादा की गैरन्टी है - ब्राह्मण बच्चा दाल रोटी से वंचित हो नहीं सकता। आसक्ति वाला खाना नहीं मिलेगा लेकिन दाल रोटी ज़रूर मिलेगी। दाल रोटी भी है, परिवार भी ठीक है और नाम कितना बाला है! इतना आपका नाम बाला है जो आज लास्ट

बार यह आदत आपने में डाली तो यह आदत आपको कहाँ भी टिकने नहीं देगी, बुद्धि को एकाग्र रहने नहीं देगी। क्योंकि बुद्धि को बदलने की आदत पड़ गई। यह भी कमजोरी गिनी जायेगी, उन्नति नहीं गिनी जायेगी। सदैव अपने में शुभ उम्मीदें रखो, नाउम्मीद नहीं बनो। जैसे बाप ने हर बच्चे में शुभ उम्मीदें रखी। कैसे भी हैं, बाप लास्ट नंबर से भी कभी दिलशिकस्त नहीं बने। सदा ही उम्मीद रखी। तो आप भी न अपने से, न दूसरे से, न सेवा में नाउम्मीद, दिलशिकस्त नहीं बनो। दिलशाह बनो। शाह माना -ाकदिल, सदा बड़ीदिल। कोई भी कमजोर संस्कार नहीं धारण कर लो। माया भिन्न-भिन्न रुप से कमजोर बनाने का प्रयास करती है। लेकिन आप माया के भी नॉलेजफुल हो ना कि अधूरी नॉलेज है? यह भी याद रखो कि माया नये-नये रुप में आती है, पुराने रुप में नहीं। क्योंकि वह भी जानती है कि यह चहचान लेंगे। बात वही होती है लेकिन रुप नया धारण कर लेती है। समझा!

(07.03.1990)

सभी अपने को बहुत-बहुत भाग्यवान समझते हो? क्योंकि कभी स्वप्न में भी संकल्प नहीं होगा कि ऐसी श्रेष्ठ आत्माएं बनेंगे, लेकिन अभी साकार में बन गये? देखो कहां-कहां से बापदादा ने रत्नों को चुनकर, रत्नों की माला बनाई है। ब्राह्मण-परिवार की माला में पिरो गये। कभी माला से बाहर तो नहीं निकलते हो? कोई भी माला की विशेषता और सुंदरता क्या होती है? दाना दाने के साथ मिला हुआ होता है। अगर बीच में धागा दिखाई दे, दाना दाने के साथ नहीं लगा हुआ हो तो सुंदर नहीं लगेगा। तो आप ब्राह्मण-परिवार की माला में हो अर्थात् सर्व ब्राह्मण आत्माओं के समीप हो गये हो। जैसे बाप के समीप हो वैसे बाप के साथ-साथ परिवार के भी समीप हो क्योंकि यह परिवार भी इस पहचान से, परिचय से अभी मिलता है। परिवार में मजा आता है ना? ऐसे नहीं कि सिर्फ बाप की याद में मजा आता है। योग परिवार से नहीं लगाना है लेकिन समीप एक-दो के रहना है। इतना बड़ा अढ़ाई लाख का परिवार होगा? तो परिवार अच्छा लगता है या सिर्फ बाबा

आये तो भी एक शब्द बोलो - 'वाह', व्हाट शब्द आये तो भी बोलो 'वाह'। 'वाह' शब्द तो आता है ना। 'वाह बाबा, वाह मैं और वाह ड्रामा'। सिर्फ 'वाह' बोले तो यह तीन शब्द खत्म हो जायेंगे। उस दिन भी सुनाया ना कि बापदादा ने कौन-सा खेल देखा! आप लोगों का एक चित्र पहले का बनाया हुआ है जिसमें दिखाया है - योगी योग लगा रहा है, बुद्धि को एकाग्रचित कर रहा है, बैलेंस रख रहा है, बैलेंस की तराजू दिखाई है, जितना बुद्धि का बैलेंस करता उतना कोई बन्दर आकर बैठ जाता है। इन तीनों बातों को बन्दर आ जाते हैं तो बैलेंस क्या होगा! हलचल हो जायेगी, बैलेंस नहीं रहेगा। तो यह तीन शब्द बैलेंस को समाप्त कर देते हैं, बुद्धि को नचाने लगते हैं। बन्दर आराम से बैठ सकता है क्या? और कुछ नहीं हो तो पूंछ को ही हिलाता रहेगा। तो इसमें भी बैलेंस न होने के कारण बाप द्वारा हर कदम में जो दुआयें मिलती हैं वा आत्मिक-स्नेह कारण परिवार द्वारा जो दुआयें मिलती हैं उससे वंचित हो जाते हैं। जैसे बाप से सम्बंध रखना आवश्यक है, ऐसे ईश्वरीय परिवार से सम्बंध रखना भी अति आवश्यक है। सारे कल्प में नम्बरवन आत्मा ब्रह्मा बाप और ईश्वरीय परिवार के सम्बंध-सम्पर्क में आना है। ऐसे नहीं समझना - अच्छा, बाप तो हमारा है, हम बाप के है। यह भी पास विद ऑनर की निशानी नहीं है। क्योंकि आप सन्यासी आत्माएं नहीं हो। ऋषि-मुनि की आत्माएं नहीं हो। किनारा करने वाले नहीं हो लेकिन विश्व का सहारा बनने वाली आत्माएं हो। विश्व-किनारा नहीं, विश्व-कल्याणकारी हो। ब्राह्मण-आत्माओं की तो बात छोड़ों लेकिन प्रकृति को भी परिवर्तन करने के सहारे आप हो! परिवार के अविनाशी प्यार के धागे के बीच से निकल नहीं सकते हो। विजयी रत्न प्यार के धागे के बीच से निकल नहीं सकते। इसलिए कभी भी किसी भी बात में, किसी स्थान में, किसी सेवा से, किसी साथी से किनारा करके अपनी अवस्था को अच्छा बनाके दिखाऊं - यह संकल्प नहीं करना। कहते हैं ना - हम इसके साथ नहीं चल सकते, उसके साथ चलेंगे, इस स्थान पर उन्नति नहीं होगी, दूसरे स्थान पर होगी, इस सेवा में विघ्न है, दूसरी सेवा में अच्छा होगा। यह सब किनारा करने की बातें हैं। अगर एक

जन्म तक आप पहुँच गये हो। लेकिन आपके जड़ चित्रों के नाम से अनेक आत्मायें अपना काम सिद्ध कर रही हैं। नाम आप देवी-देवताओं का लेते हैं। काम अपना सिद्ध करते हैं। इतना नाम बाला है। एक जन्म नाम बाला नहीं होता, सारा कल्प आपका नाम बाला है। तो सुखमय, सच्चे सम्पत्तिवान हो। बाप के सम्पर्क में आने से आपका भी श्रेष्ठ सम्पर्क बन गया है। आपका ऐसा श्रेष्ठ सम्पर्क है जो आपके जड़ चित्रों की सेकण्ड के सम्पर्क की भी प्यासी हैं। सिर्फ़ दर्शन के सम्पर्क के भी कितने प्यासे हैं! सारी-सारी रातें जागरण करते रहते हैं। सिर्फ़ सेकण्ड के दर्शन के सम्पर्क के लिए पुकारते रहते हैं। चिल्लाते रहते वा सिर्फ़ सामने जावें उसके लिए कितना सहन करते हैं! हैं चित्र और ऐसे चित्र घर में भी होते हैं फ़िर भी एक सेकण्ड के सम्मुख सम्पर्क के लिए कितने प्यासे हैं! एक बेहद के बाप के बनने के कारण सारे विश्व की आत्माओं से सम्पर्क हो गया। बेहद के परिवार के हो गये। विश्व की सर्व आत्माओं से सम्पर्क बन गया। तो चारों ही बातें अविनाशी प्राप्त हैं। इसलिए सदा सुखी जीवन है। प्राप्ति स्वरूप जीवन है। अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के जीवन में। यही आपके गीत हैं।

(24.02.1985)

आज सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरु अपने सत्यता के शक्ति स्वरूप बच्चों को देख रहे हैं। सत्य ज्ञान वा सत्यता की शक्ति कितनी महान है उसके अनुभवी आत्मायें हो। सब दूरदेश वासी बच्चे भिन्न धर्म, भिन्न मान्यतायें, भिन्न रीति रसम में रहते हुए भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की तरफ वा राजयोग की तरफ क्यों आकर्षित हुए? सत्य बाप का सत्य परिचय मिला अर्थात् सत्य ज्ञान मिला। सच्चा परिवार मिला। सच्चा स्नेह मिला। सच्ची प्राप्ति का अनुभव हुआ। तब सत्यता की शक्ति के पीछे आकर्षित हुए। जीवन थी, प्राप्ति भी थी यथा शक्ति ज्ञान भी था लेकिन सत्य ज्ञान नहीं था। इसलिए सत्यता की शक्ति ने सत्य बाप का बना लिया।

सत शब्द के दो अर्थ हैं - सत सत्यता भी है और सत अविनाशी भी है। तो सत्यता की शक्ति अविनाशी भी है। इसलिए अविनाशी प्राप्ति, अविनाशी सम्बन्ध, अविनाशी स्नेह, अविनाशी परिवार है। यही परिवार 21 जन्म भिन्न-भिन्न नाम रूप से मिलते रहेंगे। जानेंगे नहीं। अभी जानते हो कि हम ही भिन्न सम्बन्ध से परिवार में आते रहेंगे। इस अविनाशी प्राप्ति ने, पहचान ने दूर देश में होते हुए भी अपने सत्य परिवार, सत्य बाप, सत्य ज्ञान की तरफ खींच लिया। जहाँ सत्यता भी हो और अविनाशी भी हो, यही परमात्म पहचान है। तो जैसे आप सभी इसी विशेषता के आधार पर आकर्षित हुए, ऐसे ही सत्यता की शक्ति को, सत्य ज्ञान को विश्व में प्रत्यक्ष करना है।

(12.03.1985)

आज ब्राह्मणों के रचयिता बाप अपने छोटे से अलौकिक सुन्दर संसार को देख रहे हैं। यह ब्राह्मण संसार सतयुगी संसार से भी अति न्यारा और अति प्यारा है। इस अलौकिक संसार की ब्राह्मण आत्मायें कितनी श्रेष्ठ हैं विशेष हैं! देवता रूप से भी यह ब्राह्मण स्वरूप विशेष है। इस संसार की महिमा है, न्यारापन है। इस संसार की हर आत्मा विशेष है। हर आत्मा ही स्वराज्यधारी राजा है। हर आत्मा स्मृति की तिलकधारी, अविनाशी तिलकधारी, स्वराज्य तिलकधारी, परमात्म दिल-तख्तनशीन है। तो सभी आत्मायें इस सुन्दर संसार की ताज, तख्त और तिलकधारी हैं! ऐसा संसार सारे कल्प में कभी सुना वा देखा! जिस संसार की हर ब्राह्मण आत्मा का एक बाप, एक ही परिवार, एक ही भाषा, एक ही नालेज अर्थात् ज्ञान, एक ही जीवन का श्रेष्ठ लक्ष्य, एक ही वृत्ति, एक ही दृष्टि, एक ही धर्म और एक ही ईश्वरीय कर्म है। ऐसा संसार जितना छोटा उतना प्यारा है। ऐसे सभी ब्राह्मण आत्मायें मन में गीत गाती हो कि हमारा छोटा-सा यह संसार अति न्यारा, अति प्यारा है। यह गीत गाती हो? यह संगमयुगी संसार देख-देख हर्षित होते हो? कितना न्यारा संसार है। इस संसार की दिनचर्या ही न्यारी है। अपना

संस्कार दिल-पसंद नहीं होंगे तो प्यार की परसेन्टेज कम हो जाती है। लेकिन आत्मा का श्रेष्ठ आत्मा के भाव से आत्मिक प्यार उसमें परसेन्टेज नहीं होती है। कैसे भी संस्कार हों, चलन हो लेकिन ब्राह्मण-आत्मओं का सारे कल्प में अटूट सम्बन्ध है, ईश्वरीय परिवार है। बाप ने हर आत्मा को विशेष चुनकर ईश्वरीय परिवार में लाया है। अपने-आप नहीं आये हैं, बाप ने लाया है। तो बाप को सामने रखने से हर आत्मा से भी आत्मिक अटूट प्यार हो जाता है। किसी भी आत्मा की कोई बात आपको पसंद नहीं आती तब ही प्यार में अन्तर आता है। उस समय बुद्धि में यही रखो कि इस आत्मा को बाप ने पसंद किया है, अवश्य कोई विशेषता है तब बाप ने पसंद किया है। शुरु से बापदादा बच्चों को यह सुनाते रहते हैं कि मानों 36 गुणों में किसमें 35 गुण नहीं हैं लेकिन एक गुण भी विशेष है तब बाप ने उनको पसंद किया है। बाप ने उनके 35 अवगुण देखे वा एक ही गुण देखा? क्या देखा? सबसे बड़े-ते-बड़ा गुण वा विशेषता बाप को पहचानने की बुद्धि, बाप के बनने की हिम्मत, बाप से प्यार करने की विधि है जो सारे कल्प में धर्म-पिताओं में भी नहीं थी, राज्य नेताओं में भी नहीं, धनवानों में भी नहीं लेकिन उस आत्मा में हैं। बाप आप सबसे पूछते हैं कि आप जब बाप के पास आये तो गुण सम्पन्न हो के आये थे? बाप ने आपकी कमजोरियों को देखा क्या? हिम्मत बढ़ाई है ना कि आप ही मेरे थे, हैं और सदा बनेंगे। तो फालो फादर करो ना! जब विशेष आत्मा समझ किसको भी देखेंगे, सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेंगे तो बाप को सामने रखने से आत्मा में स्वत: ही आत्मिक प्यार इमर्ज हो जाता है। आपके स्नेह से सर्व के स्नेही बन जायेंगे और आत्मिक स्नेह से सदा सभी द्वारा सद्भावना, सहयोग की भावना स्वत: ही आपके प्रति दुआओं के रुप में प्राप्त होगी। इसको कहते हैं - रुहानी यथार्थ श्रेष्ठ हैंडलिंग।

बापदादा आज मुस्कारा रहे थे। बच्चों में तीन शब्दों के कारण कंट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर कम हो जाती है। वह तीन शब्द हैं - 1. व्हाई (क्यों), 2.वॉट(क्या), 3.वान्ट (चाहिए)। यह तीन शब्द खत्म कर एक शब्द बोलो। व्हाई

इसलिए ब्राह्मण-जीवन धारण नहीं कर सकते।

(10.01.1990)

जिसका जितना स्व पर राज्य है अर्थात् स्व को चलने और सर्व को चलाने की विधि आती है, वही नंबर आगे लेता है। इस फाउण्डेशन में अगर यथाशक्ति है तो ऑटोमैटिकली नंबर पीछे हो जाता है। जिसको स्वयं को चलाने और चलने आता है वह दूसरों को भी सहज चला सकता है अर्थात् हैंडलिंग पावर आ जाती है। सिर्फ दूसरे को हैंडलिंग करने के लिए हैंडलिंग पावर नहीं चाहिए। जो अपनी सूक्ष्म शक्तियों को हैंडिल कर सकता है। वह दूसरों को भी हैंडिल कर सकता है। तो स्व के ऊपर कंट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर सर्व के लिए यथार्थ हैंडलिंग पावर बन जाती है। चाहे अज्ञानी आत्माओं को सेवा द्वारा हैंडिल करो, चाहे ब्राह्मण-परिवार में स्नेह सम्पन्न, संतुष्टता सम्पन्न व्यवहार करो - दोनों में सफल हो जायेंगे। कयोंकि कई बच्चे ऐसे हैं जो बाप को जानना, बाप का बनना और बाप से प्रीत की रीति निभाना - यह बहुत सहज अनुभव करते हैं लेकिन सभी ब्राह्मण-आत्माओं से चलना - इसमें 'समथिंग' कहते हैं। इसका कारण क्या? बाप से निभाना सहज क्यों लगता है? क्योंकि दिल का प्यार अटूट है। प्यार में निभाना सहज होता है। जिससे प्यार होता है उसका कुछ शिक्षा का इशारा मिलना भी प्यारा लगता है और सदैव दिल में अनुभव होता है कि जो कुछ कहा मेरे कल्याण के लिए कहा। क्योंकि उसके प्रति दिल की श्रेष्ठ भावना होती है। तो जैसे आपके दिल में उनके प्रति श्रेष्ठ भावना है, वैसे ही आपकी शुभभावना का रिटर्न दूसरे द्वारा भी प्राप्त होता है। जैसे गुम्बज में आवाज करते हो तो वही लौटकर आपके पास आती है। तो जैसे बाप के प्रति अटूट, अखण्ड, अटल प्यार है, श्रेष्ठ भावना है, निश्चय है - ऐसे ब्राह्मण-आत्माएं नंबरवार होते हुए भी आत्मिक प्यार अटूट, अखण्ड है? वैराइटी चलन, वेराइटी संस्कार देखकर प्यार करते हैं वह अटूट और अखण्ड नहीं होता है। किसी भी आत्मा की अपने प्रति वा दूसरों के प्रति चलन अर्थात चरित्र वा

राज्य, अपने नियम, अपनी रीति-रसम, लेकिन रीति भी न्यारी है तो प्रीति भी प्यारी है।

(20.11.1985)

निश्चयबुद्धि की निशानी 'विजय' है। इसलिए गायन है - 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति'। तो निश्चय अर्थात् विजयी हैं ही हैं। कभी विजय हो, कभी न हो। यह हो नहीं सकता। सरकमस्टांस भले कैसे भी हों लेकिन निश्चयबुद्धि बच्चे सरकमस्टांस में अपनी स्वस्थिति की शक्ति द्वारा सदा विजय अनुभव करेंगे। जो विजयी रत्न अर्थात् विजय माला का मणका बन गया, गले का हार बन गया उसकी माया से हार कभी हो नहीं सकती। चाहे दुनिया वाले लोग वा ब्राह्मण परिवार के सम्बन्ध-सम्पर्क में दूसरा समझे वा कहें कि यह हार गया - लेकिन वह हार नहीं है, जीत है। क्योंकि कहाँ-कहाँ देखने वा करने वालों कि मिस-अण्डरस्टैन्डिंग भी हो जाती है। नम्रचित्त, निर्मान वा 'हाँ जी' का पाठ पढ़ने वाली आत्माओं के प्रति कभी मिस-अण्डरस्टैन्डिंग से उसकी हार समझते हैं, दूसरों को रूप हार का दिखाई देता है लेकिन वास्तविक विजय है। सिर्फ़ उस समय दूसरों के कहने वा वायुमण्डल में स्वयं निश्चयबुद्धि से बदल 'शक' का रूप न बने। पता नहीं हार है या जीत है। यह 'शक' न रख अपने निश्चय में पक्का रहे। तो जिसको आज दूसरे लोग हार कहते हैं, कल 'वाह-वाह' के पुष्प चढ़ायेंगे।

(25.11.1985)

क्या थे और क्या बन गये! यह सदा स्मृति में रखते हो! इस स्मृति में रहने से कभी भी पुराने संस्कार इमर्ज नहीं हो सकते। साथ-साथ भविष्य में भी क्या बनने वाले हैं यह भी याद रखो तो वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ होने के कारण खुशी रहेगी और खुशी में रहने से सदा आगे बढ़ते रहेंगे। वर्तमान और भविष्य की दुनिया श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ के आगे जो दुखदाई दुनिया है वह याद नहीं आयेगी। सदा अपने इस

बेहद के परिवार को देख खुश होते रहो। कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा कि ऐसे भाग्यवान परिवार मिलेगा। लेकिन अभी साकार में देख रहे हो। अनुभव कर रहे हो। ऐसे परिवार जो एकमत परिवार हो, इतना बड़ा परिवार हो यह सारे कल्प में अभी ही है। सतयुग में भी छोटा परिवार होगा। तो बापदादा और परिवार को देख खुशी होती है ना। यह परिवार प्यारा लगता है? क्योंकि यहाँ स्वार्थ भाव नहीं है। जो ऐसे परिवार के बनते हैं वह भविष्य में भी एक दो के समीप आते हैं। सदा इस ईश्वरीय परिवार की विशेषताओं को देखते हुए आगे बढ़ते चलो।

(27.11.1985)

यह जो संकल्प करते हो, दोनों ही भाव में कि मैं यह बात करके दिखाऊँगा, किसको दिखायेंगे? बाप को वा ब्राह्मण परिवार को? किसको दिखायेंगे? ऐसे समझो यह करके दिखायेंगे नहीं, लेकिन गिर के दिखायेंगे। यह कमाल है क्या, जो दिखायेंगे। गिरना देखने की बात है क्या! यह हद के प्राप्ति का नशा - मैं सेवा करके दिखाऊँगा, मैं नाम बाला करके दिखाऊँगा, यह शब्द चेक करो, रॉयल है? कहते हो शेर की भाषा लेकिन बनते हो बकरी। जैसे आजकल कोई शेर का, कोई हाथी का, कोई रावण का, कोई राम का फ़ेस डाल देते हैं ना। तो यह माया शेर का फ़ेस लगा देती है। मैं यह करके दिखाऊँगा, यह करूँगा, लेकिन माया अपने वश कर बकरी बना देती है। मैं-पन आना अर्थात् कोई न कोई हद की कामना के वशीभूत होना। यह भाषा युक्तियुक्त बोलो और भावना भी युक्तियुक्त रखो। यह होशियारी नहीं है लेकिन हर कल्प में - सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी बनने की हार खाना है। कल्प-कल्प चन्द्रवंशी बनना ही पड़ेगा। तो यह हार हुई या होशियारी हुई? तो ऐसी होशियारी नहीं दिखाओ। न अभिमान में आओ न अपमान करने में आओ। दोनों ही भावनायें - शुभ भावना - शुभ कामना दूर कर लेती हैं। तो चेक करो - ज़रा भी संकल्प मात्र भी अभिमान वा अपमान की भावना रह तो नहीं गई है? जहाँ अभिमान और अपमान की भावना है, यह कभी भी स्वमान की स्थिति में

ना! चाहे कैसी भी आत्माएं हैं लेकिन हैं तो एक ही परिवार के। जिसको भी देखेंगे तो महसूस करेंगे कि यह हमारा ही भाई है, हमारे ही परिवार का है। परिवार में भी कोई नजदीक के होते हैं, कोई दूर के होते हैं, लेकिन कहेंगे तो परिवार के ना?

जैसे बाप रहमदिल है। बाप से यही मांगते हैं कि कृपा करो, रहम करो! तो आप भी कृपा करेंगे, रहम करेंगे ना। क्योंकि बाप समान निमित्त बने हुए हो। ब्राह्मण आत्मा को कभी भी किसी आत्मा के प्रति घृणा नहीं आ सकती। रहम आयेगा, घृणा नहीं आ सकती। क्योंकि जानते हैं कि चाहे कंस हो, चाहे जरासंधी हो, चाहे रावण हो - कोई भी हो लेकिन फिर भी रहमदिल बाप के बच्चे घृणा नहीं करेंगे। परिवर्तन की भावना रखेंगे - कल्याण की भावना रखेंगे। फिर भी अपना परिवार है, परवश है। परवश के ऊपर कभी घृणा नहीं आती। सभी माया के वश है। तो परवश के ऊपर दया आती है, रहम आता है। जहाँ घृणा नहीं आयेगी वहाँ क्रोध भी नहीं आयेगा। अब घृणा आती है तो जोश आता है, क्रोध आता है जहाँ रहम होता है वहाँ शान्ति का दान देंगे। दाता के बच्चे हो ना! तो शान्ति देंगे ना!

(06.01.1990)

आप सभी ने ब्राह्मण-जीवन धारण करते ही ज्ञान द्वारा, विवेक द्वारा पहले परखने की शक्ति के आधार को पहचाना, अपने-आपको पहचाना, समय को पहचाना, अपने ब्राह्मण परिवार को पहचाना ,अपने श्रेष्ठ कर्त्तव्य को पहचाना । इसके बाद निर्णय किया, तब ही ब्राह्मण-जीवन धारण की। यह वही कल्प पहले वाला बेहद का बाप है, परम-आत्मा है, मैं भी वही कल्प पहले वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ, अधिकारी आत्मा हूँ - इस परखने के बाद निर्णय किया। बिना बाप को परखने के निर्णय नहीं कर सकते। कई आत्माएं अभी तक भी सम्बंध-संपर्क में हैं, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहती रहती है लेकिन परमात्म-पहचान वा परखने की शक्ति न होने कारण निर्णय नहीं कर सकते कि क्या बनना है वा क्या करना है।

बनाते चलो। अच्छा!

(19.11.1989)

सारे दिन में भिन्न-भिन्न वैरायटी आत्माओं से सम्बंध होता है। तीन प्रकार के सम्बन्ध में आते हो। एक - ब्राह्मण परिवार के, दूसरा - आये हुये जिज्ञासू आत्माओं के, तीसरा - लौकिक परिवार के। तीनों ही सम्बंध में सारे दिन में स्वयं की संतुष्टता और सम्बनध में आने वाली दूसरी आत्माओं की संतुष्टता की परसेन्टेज कितनी रही? संतुष्टता की निशानी स्वयं की मन से हल्के और खुश रहेंगे और दूसरे भी खुश होंगे। असंतुष्टता की निशानी - स्वयं भी मन से भारी होंगे। अगर सच्चे पुरुषार्थी हैं तो बार-बार न चाहते भी ये संकल्प आता रहेगा कि ऐसे नहीं बोलते, ऐसे नहीं करते तो अच्छा। यह बोलते थे, यह करते थे - यह आता रहेगा। अलबेले पुरुषार्थी को यह भी नहीं आयेगा। तो यह बोझ खुश रहने नहीं देगा, हल्का रहने नहीं देगा। सम्बन्ध की स्वच्छता अर्थात् संतुष्टता। यही सम्बन्ध की सच्चाई और सफाई है। इसलिए आप कहते हो -'सच तो बिठो नच'। अर्थात् सच्चा सदा खुशी में नाचता रहेगा।

एवरहैल्दी, एवरवैल्दी और एवहैप्पी - यह आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। यह अधिकार आपको तो मिल गया ना? सभी को कहते हो कि जन्म-सिद्ध अधिकार है। चाहे शरीर बीमार भी हो तो भी मन तन्दरूस्त है ना। मन खुश तो जहान खुश और मन बीमार तो शरीर पीला हो जाता है। मन ठीक होगा तो शरीर का रोग भी महसूस नहीं होगा। ऐसे होता है ना! क्योंकि आपके पास खुशी की खुराक बहुत बढ़िया है। दवाई अच्छी होती है तो बीमारी भाग जाती है। आपके पास जो खुशी की खुराक है वह बीमारी को भगा देती है, भुला देती है। तो मन खुश, जहान खुश, जीवन खुश। इसलिए एवरहैल्दी भी हो, वैल्दी भी हो और हैप्पी भी हो। जब स्वयं हो तब दूसरे को चैलेंज कर सकते हो। नहीं तो चैलंज नहीं कर सकते। अपने को देखकर औरों के ऊपर रहम आता है। क्योंकि अपना परिवार है

स्थित हो नहीं सकता। स्वमान सर्व कामनाओं से किनारा कर देगा। और सदा सुख के संसार में सुख के शान्ति के झूले में झूलते रहेंगे। इसको ही कहा जाता है - सर्व कामना जीत जगतजीत। तो बापदादा देख रहे थे छोटे से सुखी संसार को। सुख के संसार से, अपने स्वदेश से पराये देश में बुद्धि रूपी पाँव द्वारा क्यों चले जाते हो? पर-धर्म, परदेश दु:ख देने वाला है। स्वधर्म, स्वदेश सुख देने वाला है। तो सुख के सागर बाप के बच्चे हो, सुख के संसार के अनुभवी आत्मायें हो। अधिकारी आत्मायें हो तो सदा सुखी रहो, शान्त रहो। समझा-

(23.12.1985)

कुमार अर्थात् कमजोरी को सदा के लिए तलाक देने वाले। आधाकल्प के लिए कमज़ोरी को तलाक दे दिया ना। या अभी नहीं दिया है? जो सदा समर्थ आत्मायें हैं उनके आगे कमजोरी आ नहीं सकती। सदा समर्थ रहना अर्थात् कमजोरी को समाप्त करना। ऐसी समर्थ आत्मायें बाप को भी प्रिय हैं। परिवार को भी प्रिय हैं। कुमार अर्थात् अपने हर कर्म द्वारा अनेकों की श्रेष्ठ कर्मों की रेखा खींचने वाले। स्वयं के कर्म औरों के कर्म की रेखा बनाने के निमित्त बन जायें। ऐसे सेवाधारी हो। तो हर कर्म में यह चैक करो कि हर कर्म ऐसा स्पष्ट है जो औरों को भी कर्म की रेखा स्पष्ट दिखाई दे। ऐसे श्रेष्ठ कर्मों के श्रेष्ठ खाते को सदा जमा करने वाली विशेष आत्मायें - इसको कहा जाता है - सच्चे सेवाधारी। याद और सेवा यही सदा आगे बढ़ाने का साधन है। याद शक्तिशाली बनाती है और सेवा खजानों से सम्पन्न बनाती है। याद और सेवा से आगे बढ़ते रहो और बढ़ाते चलो।

(25.12.1985)

अगर किसी भी अन्जान आत्मा को कहो कि यह सारी सभा विश्व के राज्य अधिकारी आत्माओं की है तो मानेंगे? आश्चर्यवत हो जायेंगे। लेकिन बापदादा जानते हैं कि बाप को दिल के स्नेह, दिल की श्रेष्ठ भावना वाली आत्मायें प्रिय हैं।

दिल का स्नेह ही श्रेष्ठ प्राप्ति कराने का मूल आधार है। दिल का स्नेह दूर-दूर से मधुबन निवासी बनाता है। दिलाराम बाप को पसन्द ही दिल का स्नेह है। इसलिए जो भी हो, जैसे भी हो लेकिन परमात्मा को पसन्द हो। इसलिए अपना बना लिया। दुनिया वाले अभी इन्तजार ही कर रहे हैं। बाप आयेगा उस समय ऐसा होगा, वैसा होगा। लेकिन आप सबके मुख से, दिल से क्या निकलता है? 'पा लिया'। आप सम्पन्न बन गये और वह बुद्धिवान अब तक परखने में ही समय समाप्त कर रहे हैं। इसलिए ही कहा गया है - भोलानाथ बाप है। पहचानने की विशेषता ने विशेष आत्मा बना लिया। पहचान लिया, प्राप्त कर लिया। अब आगे क्या करना हैं - सर्व आत्माओं पर रहम आता है? हैं तो सभी आत्मायें, एक ही बेहद का परिवार है। अपने परिवार की कोई भी आत्मा वरदान से वंचित न रह जाए। ऐसा उमंग उत्साह दिल में रहता है? वा अपनी प्रवृत्तियों में ही बिजी हो गये हो? बेहद की स्टेज पर स्थित हो, बेहद की आत्माओं की सेवा का श्रेष्ठ संकल्प ही सफलता का सहज साधन है।

(30.12.1985)

सभी विशेष आत्मायें हैं। बाप किसको साधारण, किसको विशेष नहीं देखते। सब विशेष हैं। इस तरफ और ज्यादा वृद्धि होनी है। क्योंकि इस पूरे साइड में डबल सेवा विशेष है। एक तो अनेक वैरायटी धर्म के हैं। और इस तरफ सिन्ध की निकली हुई आत्मायें भी बहुत हैं। उन्हों की सेवा भी अच्छी कर सकते हो। उन्हों को समीप लाया तो उन्हों के सहयोग से और धर्मों तक भी सहज पहुँच सकेंगे। डबल सेवा से डबल वृद्धि कर सकते हो। उन्हों में किसी न किसी रीति से उल्टे रूप में चाहे सुल्टे रूप में बीज पड़ा हुआ है। परिचय होने के कारण सहज सम्बन्ध में आ सकते हैं। बहुत सेवा कर सकते हो। क्योंकि सर्व आत्माओं का परिवार है। ब्राह्मण सभी धर्मों में बिखर गये हैं। ऐसा कोई धर्म नहीं जिसमें ब्राह्मण न

जन का भाग्य - जन अर्थात् ब्राह्मण परिवार वा लौकिक परिवार, लौकिक सम्बन्ध में आने वाली आत्मायें वा अलौकिक सम्बन्ध में आने वाली आत्मायें। तो जन द्वारा भाग्यवान की पहली निशानी है - जन के भाग्यवान आत्मा को जन द्वारा सदा स्नेह और सहयोग की प्राप्ति रहेगी। कम से कम 95 प्रतिशत आत्माओं से प्राप्ति का अनुभव अवश्य होगा। पहले भी सुनाया था कि 5 प्रतिशत आत्माओं का हिसाब-किताब भी चुक्तू होता है, इसलिए उन्हों द्वारा कभी स्नेह मिलेगा, कभी परीक्षा भी होगी। लेकिन 5 प्रतिशत से ज़्यादा नहीं होना चाहिए। ऐसी आत्माओं से भी धीरे-धीरे शुभ भावना शुभ कामना द्वारा हिसाब से चुक्तू करते रहो। जब हिसाब चुक्तू हो जायेगा तो किताब भी खत्म हो जायेगा ना! फिर हिसाब-किताब रहेगा ही नहीं। तो भाग्यवान आत्मा की निशानी है - जन के रहे हुए हिसाब-किताब को सहज चुक्तू करते रहना और 95 प्रतिशत आत्माओं द्वारा सदा स्नेह और सहयोग की अनुभूति करना। जन के भाग्यवान आत्मायें, जन के सम्पर्क-सम्बन्ध में आते 'सदा प्रसन्न रहेगी', प्रश्नचित्त नहीं लेकिन प्रसन्नचित्त - यह ऐसा क्यों करता वा क्यों कहता, यह बात ऐसे नहीं, ऐसे होनी चाहिए। चित्त के अन्दर यह प्रश्न उत्पन्न होने वाले को 'प्रश्नचित्त' कहा जाता है और प्रश्नचित्त कभी सदा प्रसन्न नहीं रह सकता। उसके चित्त में सदा 'क्यों की क्यू' (लाइन) लगी रहती है। इसलिए उस क्यू को समाप्त करने में ही समय चला जाता है और यह क्यू फिर ऐसी होती है जो आप छोड़ने चाहो तो भी नहीं छोड़ सकते, समय देना ही पड़ेगा। क्योंकि इस क्यू का रचता आप हो, जब रचना रच ली तो पालना करनी पड़ेगी, पालना से बच नहीं सकते। चाहे कितने भी मज़बूर हो जाओ, लेकिन समय, एनर्जी देनी ही पड़ेगी। इसलिए इस व्यर्थ रचना को कण्ट्रोल करो। यह बर्थ कण्ट्रोल करो। समझा? हिम्मत है? जैसे लोग कह देते हैं ना कि यह तो ईश्वर की देन है, हमारी थोड़ी ही ग़लती है। ऐसे ही ब्राह्मण आत्मायें फिर कहती हैं - ड्रामा की नूंध है। लेकिन ड्रामा के मास्टर क्रियेटर, मास्टर नॉलेजफुल बन हर कर्म को श्रेष्ठ

मज़बूर होने के कारण, धारणा की कमज़ोरी के कारण परवश हो जाते हैं। ऐसे परवश बच्चों की जीवनलीला देख बापदादा को ऐसे बच्चों पर रहम आता है। क्योंकि बाप के रूहानी स्नेह की निशानी यही है-कोई भी बच्चे की कमी, कमज़ोरी बाप देख नहीं सकते। अपने परिवार की कमी अपनी कमी होती है, इसलिए बाप को घृणा नहीं लेकिन रहम आता है। बापदादा कभी-कभी बच्चों की आदि से अब तक की जन्मपत्री देखते हैं। कई बच्चों की जन्मपत्री में रहम-ही-रहम होता है और कई बच्चों की जन्मपत्री राहत देने वाली होती है। अपनी आदि से अब तक की जन्मपत्री चेक करो। अपने आपको देख करके जान सकते हो - तीनों सम्बन्ध के पालना की धारणा सहज और श्रेष्ठ है? क्योंकि सहज चलना दो प्रकार का है-एक है वरदानों से सहज जीवन और दूसरी है लापरवाही, डोंट-केयर - इससे भी सहज चलते हैं। वरदानों से वा रूहानी पालना से सहज चलने वाली आत्मायें केयरफुल होंगी, डोंट-केयर नहीं होंगी। लेकिन अटेन्शन का टेन्शन नहीं होगा। ऐसी केयरफुल आत्माओं का समय, साधन और सरकमस्टांश प्रमाण ब्राह्मण परिवार का साथ, बाप की विशेष मदद सहयोग देती है। इसलिए सब सहज अनुभव होता है।

(07.11.1989)

जब माया को विदाई देंगे तब बाप की बधाइयाँ बहुत आगे बढ़ायेंगी। भक्ति मार्ग में कितनी बार मांगा कि दुआयें दो, ब्लैसिंग दो। लेकिन अभी बाप से ब्लैसिंग लेने का सहज साधन बता दिया है - जितना माया को विदाई देंगे उतनी ब्लैसिंग स्वत: मिलेंगी। परमात्म-दुआयें एक जन्म नहीं लेकिन अनेक जन्म श्रेष्ठ बनाती हैं। सदा यह स्मृति में रखना कि हम हर कदम में बाप की, ब्राह्मण परिवार की दुआयें लेते सहज उड़ते चलें। ड्रामा में विशेष आत्मायें हो, विशेष कर्म कर अनेक जन्मों के लिए विशेष पार्ट बजाने वाले हो। साधारण कर्म नहीं विशेष कर्म, विशेष संकल्प और विशेष बोल हों।

(11.11.1989)

पहुँचे हो। अब सब धर्मों से निकल-निकलकर आ रहे हैं। और जो ब्राह्मण परिवार के हैं उन्हों से अपना-पन लगता है ना! जैसे कोई हिसाब किताब से गये और फिर से अपने परिवार में पहुँच गये। कहाँ-कहाँ से पहुँच अपना सेवा का भाग्य लेने के निमित्त बन गये। यह कोई कम भाग्य नहीं। बहुत श्रेष्ठ भाग्य है। बड़े ते बड़े पुण्य आत्मायें बन जाते।

(25.02.1986)

सभी की हिम्मत देख बापदादा खुश होते हैं। अनेक आत्माओं को बाप का सहारा दिलाने के लिए निमित्त बने हुए हो। अच्छे ही परिवार के परिवार हैं। परिवार को बाबा 'गुलदस्ता' कहते हैं। यह भी विशेषता अच्छी है। वैसे तो सभी ब्राह्मणों के स्थान हैं। अगर कोई नैरोबी जायेंगे वा कहाँ भी जायेंगे तो कहेंगे हमारा सेन्टर, बाबा का सेन्टर है। हमारा परिवार है। तो कितने लकी हो गये! बापदादा हर एक रत्न को देख खुश होते। चाहे कोई भी स्थान के हैं लेकिन बाप के हैं और बाप बच्चों का है। इसलिए ब्राह्मण आत्मा अति प्रिय है। विशेष है। एक दो से जास्ती प्यारे लगते हैं।

(27.02.1986)

जैसे बाप सदा कल्याणकारी है वैसे बच्चे भी बाप समान कल्याण की भावना रखने वाले हैं। अभी किसी को भी देखेंगे तो रहम आता है ना कि यह भी बाप के बन जाएँ। देखो बापदादा स्थापना के समय से लेकर विदेश के सभी बच्चों को किसी न किसी रूप से याद करते रहे हैं। और बापदादा की याद से समय आने पर चारों ओर के बच्चे पहुँच गये हैं। लेकिन बापदादा ने आह्वान बहुत समय से किया है। आह्वान के कारण आप लोग भी चुम्बक की तरह आकर्षित हो पहुँच गये हो। ऐसे लगता है ना कि नामालूम कैसे हम बाप के बन गये! बन गये यह तो अच्छा लगता ही है, लेकिन क्या हो गया, कैसे हो गया यह कभी बैठकर सोचो, कहाँ से

कहाँ आकर पहुँच गये हो तो सोचने से विचित्र भी लगता है ना! ड्रामा में नूँध नूँधी हुई थी। ड्रामा की नूँध ने सभी को कोने-कोने से निकालकर एक परिवार में पहुँचा दिया। अभी यही परिवार अपना लगने के कारण अति प्यारा लगता है। बाप प्यारे ते प्यारा है तो आप सभी भी प्यारे बन गये हो। आप भी कम नहीं हो। आप सभी भी बापदादा के संग के रंग में अति प्यारे बन गये हो। किसी को भी देखो तो हर एक, एक-दो से प्यारा लगता है। हर एक के चेहरे पर रूहानियत का प्रभाव दिखाई देता है।

(10.03.1986)

यूरोप क्या करेगा? संख्या से छोटे नहीं कहे जाते हैं। संख्या क्या ही हो- क्वालिटी अच्छी है तो नम्बरवन हो। जो किसी ने नहीं लाया है वह आप ला सकते हो। कोई बड़ी बात नहीं है हिम्मते बच्चे मददे बाप । बच्चों की हिम्मत और सारे परिवार की, बापदादा की मदद है। इसलिए कोई भी बड़ी बात नहीं है। जो चाहो वह कर सकते हो। आखिर तो सभी को आना तो एक ही ठिकाने पर है। किसीको अभी आना है, किसीको थोड़ा पीछे आना है। आना तो है ही। कितने भी खुश हों लेकिन फिर भी कोई न कोई प्राप्ति की इच्छा तो होती है ना। चाहे वातावरण ठीक है इसके लिए परेशान नहीं भी हैं लेकिन फिर भी जब तक ज्ञान नहीं है तो विनाशी इच्छायें कभी भी पूरी नहीं होती हैं। एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छा उत्पन्न होती रहती है। तो इच्छा भी सदा सन्तुष्टता का अनुभव नहीं कराती। तो जो दुखी नहीं हैं उनको ईश्वरीय नि:स्वार्थ स्नेह क्या है, स्नेही जीवन क्या होती है, आत्मिक स्नेह, परमात्म स्नेह इस विधि से समीप लाओ। कितना भी स्नेही हो लेकिन निःस्वार्थ स्नेह तो कहाँ है ही नहीं। सच्चा स्नेह तो है ही नहीं। तो सच्चा दिल का स्नेह, परिवार का स्नेह सबको चाहिए। ऐसा ईश्वरीय परिवार कहाँ किसको मिल सकता? तो जिस बात की अप्राप्ति की अनभूति हो उसी प्राप्ति के आकर्षण से उन्हों को समझाओ।

(13.03.1986)

प्रजा बनते लेकिनि प्रभा भी अपने को परिवार समझती है, स्नेह की समीपता परिवार की रहती है। चाहे मर्तबे रहते हैं लेकिन स्नेह के मर्तबे हैं, संकोच और भय के नहीं।

(15.03.1988)

बापदादा ने देखा - याद को शक्तिशाली बनाने में मैजारिटी बच्चों का अटेन्शन है, याद को सहज और निरन्तर बनाने के लिए उमंग-उत्साह है। आगे बढ़ भी रहे हैं और बढ़ते ही रहेंगे। क्योंकि बाप से स्नेह अच्छा है, इसलिए याद का अटेन्शन अच्छा है और याद का आधार है ही - 'स्नेह'। बाप से रुह-रूहान करने में भी सब अच्छे हैं। कभी-कभी थोड़ी आंख दिखाते भी हैं, वह भी तब जब आपस में थोड़ा बिगड़ते हैं। फिर बाप को उल्हना देते हैं कि आप क्यों नहीं ठीक करते? फिर भी वह स्नेह भरी मुहब्बत की ऑख है। लेकिन जब संगठन में आते, कर्म में आते, कारोबार में आते, परिवार में आते तो संगठन का बोल अर्थात् वाचा शक्ति इसमें व्यर्थ ज्यादा दिखाई देता है।

(31.03.1988)

रूहानी स्नेह ने दिव्य जन्म दिया, अब वरदाता बापदादा के वरदानों से दिव्य पालना हो रही है। पालना सभी को एक द्वारा, एक ही समय, एक जैसी मिल रही है। लेकिन मिली हुई पालना की धारणा नम्बरवार बना देती है। वैसे विशेष तीनों सम्बन्ध की पालना अति श्रेष्ठ भी है और सहज भी है। बापदादा द्वारा वर्सा मिलता, वर्से की स्मृति द्वारा पालना होती - इसमें कोई मुश्किल नहीं। शिक्षक द्वारा दो शब्दों की पढ़ाई की पालना में भी कोई मुश्किल नहीं। सतगुरु द्वारा वरदानों के अनुभूति की पालना - इसमें भी कोई मुश्किल नहीं। लेकिन कई बच्चों के धारणा की कमज़ोरी के कारण समय-प्रति-समय सहज को मुश्किल बनाने की आदत बन गई है। मेहनत करने के संस्कार सहज अनुभव करने से मज़बूर कर देते हैं और

जाओ, माया भी बढ़ाते जाओ - ऐसी सेवा बाप के रजिस्टर में जमा नहीं होती है। आप सोचेंगे - हम तो बहुत सेवा कर रहे हैं, दिन-रात नींद भी नहीं करते, खाना भी एक बार बनाके रात को खा लेते - इतना बिजी रहते! लेकिनि सेवा के साथ-साथ माया में भी बिजी तो नहीं रहते? यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ, इसने क्यों किया, मैंने क्यों नहीं किया, मेरा हक, तेरा हक लेकिन बाप का हक कहाँ गया? समझा? सेवा अर्थात् जिसमें स्व के और सर्व के सहयोग वा सन्तुष्टता का फल प्रत्यक्ष दिखाई दे। अगर सर्व की शुभ भावना-शुभ कामना का सहयोग वा सन्तुष्टता प्रत्यक्ष फल के रूप में नहीं प्राप्त होती है तो चेक करो - क्या कारण है, फल क्यों नहीं मिला? और विधि को चेक करके चेन्ज करो।

ऐसी सच्ची सेवा बढ़ाना ही सेवा बढ़ाना है। सिर्फ अपनी दिल खुश नहीं करो कि मैं बहुत अच्छी सेवा कर रही हूँ। लेकिन बाप की दिल खुश करो और ब्राह्मण परिवार के दिल की दुआयें लो। इसको कहा जाता सच्ची सेवाठ। दिखावे की सेवा तो बहुत बड़ी है लेकिन जहाँ दिल की सेवा होगी, वहाँ दिल के स्नेह की सेवा जरूर होगी। इसको कहते है परिवार के प्रति ब्रह्मा बाप की आशा पूर्ण करना। यह थी आज की रूह-रूहान। बाकी और आगे सुनायेंगे। आज भारतवासी बच्चों की इस सीजन का लास्ट चांस है। इसलिए बापदादा क्या चाहते हैं - वह सुनाया। एक सर्टिफिकेट पास का लिया है, अभी दूसरा सर्टिफिकेट लेना है। अच्छा! अभी बाप की आशाओं का दीपक सदा जगमगाते रहना। अच्छा!

(03.02.1988)

एक बाप दूसरा न कोई - यहाँ की यह अखण्ड-अटल साधना वहाँ अखण्ड, छोटा-सा संसार बापदादा वा मात-पिता और बहन-भाई, वहाँ के छोटे संसार का आधार बनता है। यहाँ एक मात-पिता के सम्बन्ध के संस्कार वहाँ भी एक ही विश्व के विश्व-महाराजन वा विश्व-महारानी को मात-पिता के रूप में अनुभव करते हैं। यहाँ के स्नेह-भरे परिवार का सम्बन्ध, वहाँ भी चाहे राजा और

आज मलेशिया ग्रुप है! साउथ ईस्ट। सभी यह समझते हो कि हम कहाँ-कहाँ बिखर गये थे। परमात्म परिवार के स्टीमर से उतर कहाँ-कहाँ कोने में चले गये। संसार सागर में खो गये। क्योंकि द्वापर में आत्मिक बाम्ब के बजाए शरीर के भान का बाम्ब लगा। रावण ने बाम्ब लगा दिया तो स्टीमर टूट गया। परमात्म परिवार का स्टीमर टूट गया और कहाँ-कहाँ चले गये। जहाँ भी सहारा मिला। डूबने वाले को जहाँ भी सहारा मिलता है तो ले लेते हैं ना। आप सबको भी जिस धर्म, जिस देश का थोड़ा सा भी सहारा मिला, वहाँ पहुँच गये। लेकिन संस्कार तो वही हैं ना। इसलिए दूसरे धर्म में जाते भी अपने वास्तविक धर्म का परिचय मिलने से पहुँच गये। सारे विश्व में फैल गये थे। यह बिछुड़ना भी कल्याणकारी हुआ। जो अनेक आत्माओं को एक ने निकालने का कार्य किया। विश्व में परमात्म परिवार का परिचय देने के लिए कल्याणकारी बन गये। सब अगर भारत में ही होते तो विश्व में सेवा कैसे होती? इसलिए कोने-कोने में पहुँच गये हो। सभी मुख्य धर्मों में कोई न कोई पहुँच गये हैं। एक भी निकलता है तो हमजिन्स को जगाते ज़रूर हैं। बापदादा को भी 5 हज़ार वर्ष के बाद बिछड़े हुए बच्चों को देख करके खुशी होती है। आप सबको भी खुशी होती हैं ना। पहुँच तो गये। मिल तो गये।

(25.03.1986)

तीसरे हैं - समय प्रमाण स्नेह निभाने वाले। ऐसी आत्मायें समझती हैं कि सच्चा स्नेह सिवाए बाप के और कोई से मिल नहीं सकता। और यही रूहानी स्नेह सदा के लिए श्रेष्ठ बनाने वाला है। ज्ञान अर्थात् समझ पूरी है और यही स्नेही जीवन प्रिय भी लगती है। लेकिन कोई अपनी देह के लगाव के संस्कार या कोई भी विशेष पुराना संस्कार वा किसी व्यक्ति वा वस्तु के संस्कार वा व्यर्थ संकल्पों के संस्कार वश कन्ट्रोलिंग पावर न होने के कारण व्यर्थ संकल्पों का बोझ है। वा संगठन की शक्ति की कमी होने के कारण संगठन में सफल नहीं हो सकते। संगठन की परिस्थिति स्नेह को समाप्त कर अपने तरफ खींच लेती है। और कोई सदा ही

दिल-शिकस्त जल्दी होते हैं। अभी-अभी बहुत अच्छे उड़ते रहेंगे और अभी-अभी देखो तो अपने आप से ही दिलशिकस्त! यह स्वयं से दिलशिकस्त होने का संस्कार भी सदा स्नेही बनने नहीं देता। किसी न किसी प्रकार का संस्कार परिस्थिति की तरफ, प्रकृति की तरफ आकर्षित कर देता है। और जब हलचल में आ जाते हैं तो स्नेह का अनुभव होने के कारण, स्नेही जीवन प्रिय लगने के कारण फिर बाप की याद आती है। प्रयत्न करते हैं कि अभी फिर से बाप के स्नेह में समा जावें। तो समय प्रमाण, परिस्थिति प्रमाण हलचल में आने के कारण कभी याद करते हैं, कभी युद्ध करते हैं। युद्ध की जीवन ज़्यादा होती। और स्नेह में समाने की जीवन उसके अन्तर में कम होती है। इसलिए तीसरा नम्बर बन जाते हैं। फिर भी विश्व की सर्व आत्माओं से तीसरा नम्बर भी अति श्रेष्ठ ही कहेंगे। क्योंकि बाप को पहचाना। बाप के बने, ब्राह्मण परिवार के बने। ऊँचे ते ऊँची ब्राह्मण आत्मायें ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी कहलाते। इसलिए दुनिया के अन्तर में वह भी श्रेष्ठ आत्मायें हैं। लेकिन सम्पूर्णता के अन्तर में तीसरा नम्बर हैं।

(27.03.1986)

संकल्प की रचना भी कम नहीं हैं। जैसे संकल्प शक्तिशाली है तो दूर से भिन्न पर्दो के अन्दर से बच्चों को अपने परिवार में लाना था, श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प ने प्रेर कर समीप लाया। इसलिए यह शक्तिशाली संकल्प की रचना भी शक्तिशाली है। कईयों का अनुभव भी है - जैसे बुद्धि को विशेष कोई प्रेर कर समीप ला रहा है। ब्रह्मा के शक्तिशाली संकल्प के कारण ब्रह्मा के चित्र को देखते ही चैतन्यता का अनुभव होता है। चैतन्य सम्बन्ध के अनुभव से आगे बढ़ रहें हैं। तो बापदादा रचना को देख हर्षित हो रहें हैं। अभी आगे और भी शक्तिशाली रचना का प्रत्यक्ष सबूत देते रहेंगे।

(29.03.1986)

बोल हो लेकिन फील नहीं होगा। फीलिंग नहीं आएगी - इसने यह क्यों कहा। स्नेही, स्नेही आत्मा के प्रति अनुमान पैदा नहीं करेगा - ऐसा होगा, यह होगा! सदा स्नेही के प्रति फेथ होने के कारण उसका हल्का बोल भी ऐसे लगेगा कि इसने अवश्य कोई मतलब से कहा है। बेमतलब, व्यर्थ नहीं लगेगा। जहाँ स्नेह होगा, वहाँ फेथ जरूर होगा। स्नेह नहीं तो फेथ भी नहीं होगा। तो ब्राह्मण परिवार के प्रति स्नेह वा फेथ होना - इसको कहते हैं ब्रह्मा बाप की दूसरी आशा पूर्ण करना। जेसे बाप के प्रति स्नेह के लिए बापदादा ने सर्टिफिकेट दिया, ऐसे ब्राह्मण परिवार के प्रति जो स्नेह की परिभाषा सुनाई वा उस विधि से प्रत्यक्ष कर्म में आना - यह भी सर्टिफिकेट लेना है। यह बैलेन्स चाहिए। जितना बाप से उतना बच्चों से - यह बैलेन्स न होने के कारण सेवा में जब आगे बढ़ते हो तो खुद ही कहते हो - सेवा में माया आती है। और कभी वायुमण्डल को देख इतना भी कहते हो कि ऐसी सेवा से तो याद में रहना ही अच्छा है, सबसे सेवा छुड़ाके भट्ठी में बिठा दो। आप लोगों के पास यह संकल्प होते हैं समय प्रमाण।

वास्तव में सेवा मायाजीत बनाने वाली है, माया लाने वाली नहीं है। लेकिन सेवा में माया क्यों आती है? इसका मूल कारण दिल का स्नेह नहीं है, परिवार के प्रमाण स्नेह है। लेकिन दिल का स्नेह त्याग की भावना उत्पन्न करता है। वह न होने के कारण कभी-कभी सेवा माया-रूप बन जाती है और ऐसी सेवा को सेवा के खाते में जमा नहीं कर सकते - चाहे कोई 50-60 सेन्टर्स खोलने के भी निमित्त बन जाए! लेकिन सेवा में खाते में या बापदादा की दिल में सेवा का जमा खाता उतना ही होता है जो माया से मुक्त हो, योगयुक्त हो करते हो। किसके पास दो सेन्टर हैं, देखने में दो सेन्टर की इन्चार्ज आती है, और कोई 50 सेन्टर्स की इन्चार्ज दिखाई देती है, लेकिन अगर दो सेवाकेन्द्र भी निर्विघ्न हैं, माया से, हलचल से, स्वभाव-संस्कार के टक्कर के टक्कर से मुक्त हैं तो दो सेन्टर वाले का भी 50 सेवाकेन्द्र वाले से ज्यादा सेवा का खाता जमा है। इसमें खुश नहीं हो जाओ कि मेरे 30 सेन्टर्स हैं, 40 सेन्टर्स हैं। लेकिन माया से मुक्त कितने सेन्टर्स हैं? सेन्टर भी बढ़ाते

करेगा। सदैव यही भावना रहती वा रही है कि बाबा जो कहता है उसमें कल्याण है। कभी स्नेह की कमी नहीं हुई, और ही अपने को बाप के दिल के समीप समझते रहे कि यह अपनापन का स्नेह है। इसको कहते हैं दिल का जिगरी स्नेह जो भावना को परिवर्तन कर देता है। बाप के प्रति ऐसा स्नेह है ना ? ऐसे, ब्राह्मण परिवार में भी दिल का स्नेह हो। जैसे बाप से स्नेह की निशानी - सदा ही बाप ने कहा और 'हाँ जी' किया, ऐसे ब्राह्मण परिवार के प्रति सदा ही ऐसा दिल का स्नेह हो, भावना परिवर्तन की विधि हो। तब बाप और परिवार में स्नेह का बैलेन्स, याद और सेवा का बैलेन्स स्वत: ही प्रैक्टिकल में दिखाएगा। तो बाप के स्नेह का पलड़ा भारी है लेकिन सर्व ब्राह्मण परिवार में स्नेह का पलड़ा बदलता रहता है। कभी भारी, कभी हल्का। किसके प्रति भारी, किसके प्रति हल्का। यह बाप और बच्चों के स्नेह का बैलेन्स रहे - यही ब्रह्मा बाप की दूसरी शुभ आशा है। समझा? इसमें बाप समान बनो।

स्नेह ऐसी श्रेष्ठता है जिसमें आपने किया या दूसरे ने किया, इसमें दोनों में समान खुशी का अनुभव हो। जैसे बापदादा स्थापना के कार्य अर्थ निमित्त बने लेकिन जब बच्चों को सेवा में साथी बनाया, अगर प्रैक्टिकल में बाप से भी बच्चे ज्यादा सेवा करते हैं, करते रहे हैं तो बापदादा सदा बच्चों को सेवा में आगे बढ़ते, स्नेह के कारण खुश रहें। यह संकल्प कभी भी दिल के स्नेह में उत्पन्न नहीं हो सकता कि बच्चे क्यों सेवा में आगे जायें, निमित्त तो मैं हूँ, मैंने ही इनको निमित्त बनाया। कभी स्वप्न-मात्र भी यह भावना उत्पन्न नहीं हुई। इसको कहा जाता है - सच्चा स्नेह, नि:स्वार्थ स्नेह, रुहानी स्नेह! सदा बच्चों को आगे निमित्त बनाने में हर्षित रहे। बच्चों ने किया या बाप ने किया, मैं-पन नहीं रहा। मेरा काम है, मेरी ड्यूटी है, मेरा अधिकारी है, मेरी बुद्धि है, मेरा प्लैन है - नहीं। स्नेह यह मेरा-पन मिटा देता है। आपने किया सो मैंने किया, मैंने किया सो आपने किया - यह शुभ भावना वा शुभ कामना, इसको कहा जाता है-दिल का स्नेह। स्नेह में कभी अपना या पराया नहीं लगता। स्नेह में कभी स्नेह का बोल कैसा भी साधारण, हुज्जत का

अभी यह रिकार्ड दिखाओ कि पूरा एक साल कोई भी समस्या स्वरूप नहीं बनेंगे, समाधान स्वरूप रहेंगे। फिर भट्ठियाँ करायेंगे, समस्या में समय नहीं देंगे। भारत में पहले जब सेवा शुरू हुई तो परखने में, सेट करने में टाइम लगा। अभी समझ गये हैं तो सहज हो गया है। जब भी कोई परिस्थिति आती है तो उस समय बुद्धि की लाइन क्लीयर चाहिए तो टचिंग होगी कि किस विधि से इसको ठीक करें। सिर्फ उस समय स्वयं घबरा नहीं जाओ। स्वयं शक्ति रूप में रहो तो दूसरा स्वत: ही हल्का हो जायेगा। उसका वार नहीं हो सकेगा। सदा ही सेफ रहेंगे। फिर भी एक दो में नजदीक हो, जो अनुभवी हैं उनसे राय सलाह भी कर सकते हो। एक बात ज़रूर करो - जो भी सेन्टर पर रहते हो वह आपस में सारे दिन में एक टाइम लेन-देन ज़रूर करो। नहीं तो एक, एक तरफ रहता है दूसरा दूसरे तरफ। उससे परिवार के प्यार की महसूसता नहीं आती है। और स्वयं में वह स्नेह की शक्ति नहीं होगी तो दूसरों को भी बाप के स्नेही नहीं बना सकेंगे। इसलिए एक दो को ज़रूर पूछो क्या है - कैसे हो? कोई बीमार है, कोई मन की तकलीफ है, कोई शरीर की तकलीफ है तो पूंछने से वह समझेंगे कि हमारा भी कोई है। कोई भी सेवा का प्लैन भी बनाते हो तो दोनों तीनों मिलकर, चाहे छोटी भी हो, तो भी उससे 'हाँ जी' करायेंगे तो वह भी खुश हो जायेगी। वह भी समझेगी की इसमें मेरा हाथ है, और विशेष जो सर्विसएबुल सलाह देने वाले हैं उन्हों की भी मीटिंग ज़रूर करनी चाहिए, क्योंकि उनके सहयोग के बिना आप भी क्या कर सकेंगे? स्नेह और शक्ति का बैलेन्स रखते हुए हैन्डिल करो और आगे बढ़ो।

(31.03.1986)

रिजल्ट में पहले स्वयं से स्वयं संतुष्ट, वह कितने रहे? क्योंकि एक है स्वयं की सन्तुष्टता, दूसरी है ब्राह्मण परिवार की सन्तुष्टता, तीसरी है बाप की सन्तुष्टता। तीनों की रिजल्ट में अभी और मार्क्स लेनी हैं। तो स्नतुष्ट बनो, सन्तुष्ट करो। बाप की सन्तुष्टमणि बन सदा चमकते रहो। बापदादा बच्चों का रिगार्ड रखते हैं, इसलिए

गुप्त रिकार्ड बताते हैं। होवनहार हैं, इसीलिए बाप सदा सम्पन्नता की स्टेज देखते हैं।

सभी सन्तुष्टमणियां हो ना? वृद्धि को देख करके खुश रहो। आप सब तो इन्तजार में हो कि आबू रोड तक क्यू लगे। तो अभी तो सिर्फ हाल भराहै, फिर क्या करेंगे? फिर सोयेंगे या अखण्ड योग करेंगे? यह भी होना है। इसलिए थोड़े में ही राजी रहो। तीन पैर के बजाए एक पैर पृथ्वी भी मिले, तो भी राजी रहो। पहले ऐसे होता था, यह नहीं सोचो। परिवार के वृद्धि की खुशी मनाओ। आकाश और पृथ्वी तो खुटने वाले नहीं हैं ना। पहाड़ तो बहुत है। यह भी होना चाहए, यह भी मिलना चाहिए - यह बड़ी बात बना देते हो। यह दादियां भी सोच में पड़ जाती हैं - क्या करें, कैसे करें? ऐसे भी दिन आयेंगे जो दिन में धूप में सो जायेंगे, रात मे जागेंगे। वो लोग जलाकर आस-पास बैठ जाते हैं गर्म हो करके, आप योग की अग्नि जलाकर के बैठ जायेंगे। पसन्द है ना या खटिया चाहिए? बैठने के लिए कुर्सी चाहिए? यह पहाड़ की पीठ कुर्सी बना देना। जब तक साधन हैं तो सुख लो, नहीं हैं तो पहाड़ी को कुर्सी बनाना। पीठ को आराम चाहिए ना, और तो कुछ नहीं। पांच हजार आयेंगे तो कुर्सियां तो उठानी पड़ेंगी ना। और जब क्यू लगेगी तो खटिया भी छोड़नी पड़ेगी। एवररेडी रहना। अगर खटिया मिले तो भी 'हाँ-जी', धरनी मिले तो भी 'हाँ-जी'। ऐसे शुरू में बहुत अभ्यास कराये हैं। 15-15 दिन तक दवाखाना बन्द रहता। दमा के पेशेन्ट भी ढोढा (बाजरे की रोटी) और लस्सी पीते थे। लेकिन बीमार नहीं हुए, सब तन्दरूस्त हो गये। तो यह शुरू में अभ्यास करके दिखाया है, तो अन्त में भी होगा ना। नहीं तो, सोचो, दमा का पेशेन्ट और उसको लस्सी दो तो पहले ही घबरा जायेगा। लेकिन हुआ की दवा साथ में होती है, इसलिए मनोरंजन हो जाता है। पेपर नहीं लगता है। मुश्किल नहीं लगता। त्याग नहीं, एक्सकर्शन (आमोद-प्रमोद, मनोरंजन) हो जाती है।

(18.01.1987)

जैसे प्रकृति के तारामण्डल में अनेक प्रकार के सितारे चमकते हुए

के लिए स्वत: ही स्नेह रहता है। पहले भी सुनाया था ना - बच्चे, माँ-बाप - दोनों के होते हैं लेकिन फिर भी माँ का विशेष स्नेह बच्चों से रहता है क्योंकि पालना के निमित्त माँ बनती है। बाप-समान बनाने वाली निमित्त माँ होती है। इसलिए माँ की ममता गाई हुई है। यह शुद्ध ममता है, मोह वाली नहीं, विकार वाली नहीं। जहाँ मोह होता है, वहाँ परेशान होते हैं और जहाँ रुहानी ममता कहो, स्नेह कहो - वह होगा तो माँ को बच्चों के प्रति शान होता है, परेशान नहीं होती। तो ब्रह्मा माँ कहो, बाप कहो - दोनों रूप से बच्चों के प्रति कौनसी विशेष आशायें रखते हैं? एक बाप प्रति आशा है और दूसरी ब्राह्मण परिवार के प्रति शुभ आशा है। बाप प्रति शुभ आशा है कि - जैसे बापदादा साक्षी भी है और साथी भी हैं, ऐसे बापदादा समान साक्षी और साथी, समय प्रमाण दोनों ही पार्ट सदा बजाने वाले महान आत्मा बनें। तो बाप प्रति शुभ आशा हुई - बापदादा समान साक्षी, साथी बनना।

विजयी बनने के लिए एक बैलेन्स की आवश्यकता है। याद और सेवा का बैलेन्स तो सदा सुनते रहते हैं लेकिन याद और सेवा का बैलेन्स चाहते हुए भी रहता क्यों नहीं है? समझते हुए भी कर्म में क्यों नहीं आता है? उसके लिए एक और बैलेन्स की आवश्यकता है, वही बैलेन्स ब्रह्मा बाप की दूसरी आशा है। एक आशा तो बाप प्रति हुई - समान बनने की। दूसरी आशा परिवार प्रति, वह है - हर ब्राह्मण आत्मा प्रति सदा शुभ भावना-शुभ कामना कर्म में रहे, सिर्फ संकल्प तक वा चाहना तक नहीं। चाहते तो हैं। कई कहते हैं चाहना तो यही है कि शुभ भावना रखें लेकिन कर्म में बदल जाता है। इसका विस्तार पहले भी सुनाया है। परिवार प्रति सदा शुभ भावना-शुभ कामना क्यों नहीं रहती, इसका कारण? जैसे बाप से दिल का स्नेह, जिगर का स्नेह है और दिल के जिगर के स्नेह की निशानी है कि 'अटूट' है। बाप प्रति कोई कितना भी आपको मिस अन्डरस्टैंड (गलतफहमी) करे वा कोई भी आपको कैसी भी बातें आकर सुनाए वा कभी साकार में स्वयं बाप भी कोई बच्चों को आगे बढ़ने के लिए कोई ईशारा वा शिक्षा दे लेकिन जहाँ स्नेह होता है वहाँ शिक्षा वा कोई भी परिवर्ततन का ईशारा मिस अन्डरस्टैन्डिग पैदा नहीं

'मैं-पन' की चिड़िया ने फल को खण्डित कर दिया, इसलिए सिर्फ माना जायेगा कि सेवा बहुत अच्छी करते हैं, महारथी है, सर्विसएबल हैं लेकिन संगमयुग पर भी सर्व ब्राह्मण परिवार के दिल में स्नेह के पात्र वा पूज्य नहीं बन सकते हैं।

सदा अपने को कल्प-कल्प की विजयी आत्मायें अनुभव करते हो? अनेक बार विजयी बनने का पार्ट बजाया है और अब भी बजा रहे हैं। विजयी आत्मायें सदा औरों को भी विजयी बनाती है। जो अनेक बार किया जाता है वह सदा ही सहज होता है, मेहनत नहीं लगती है। अनेक बार की विजयी आत्मा हैं - इस स्मृति से कोई भी परिस्थिति को पार करना खेल लगता है। खुशी अनुभव होती है? विजयी आत्माओं को विजय अधिकार अनुभव होती है। अधिकार मेहनत से नहीं मिलता, स्वत: ही मिलता है। तो सदा विजय की खुशी से, अधिकार से आगे बढ़ते औरों को भी आगे बढ़ाते चलो। लौकिक परिवार में रहते लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करो क्योंकि अलौकिक सम्बन्ध सुख देने वाला है। लौकिक सम्बन्ध से अल्पकाल का सुख मिलता है, सदा का नहीं। तो सदा सुखी बन गये। दुखियों की दुनिया से सुख के संसार में आ गये - ऐसा अनुभव करते हो? पहले रावण के बच्चे थे तो दुखदाई थे, अभी सुखदाता के बच्चे सुखस्वरुप हो गये। फस्ट नम्बर यह अलौकिक ब्राह्मणों का परिवार है, देवतायें भी सेकण्ड नम्बर हो गये। तो यह अलौकिक जीवन प्यारी लगती है ना

(26.01.1988)

ब्रह्मा बाप बच्चों के प्रति विशेष दो आशायें सुना रहे थे। क्योंकि ब्रह्मा बाप को साथ ले भी जाना है और साथ रहना भी है। शिव बाप तो साथ ले जाने वाला है, राज्य में वा सारे कल्प में साथ नहीं रहना है। वह सदा साथ रहने वाला है और वह साक्षी हो देखने वाला है। अन्तर है ना। ब्रह्मा बाप को बच्चों के प्रति सदा ही समान बनाने की शुभ आशायें इमर्ज रहती हैं। वैसे बापदादा दोनों जिम्मेवार हैं लेकिन फिर भी रचता साकार में ब्रह्मा है इसलिए साकार रचना को साकार रचना

दिखाई देते हैं, वैसे परमात्म-तारामण्डल में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के सितारे चमकते हुए दिखाई दे रहे हैं। कोई समीप के सितारे हैं और कोई दूर के सितारे भी हैं। कोई सफलता के सितारे हैं तो कोई उम्मीदवार सितारे हैं। कोई एक स्थिति वाले हैं और कोई स्थिति बदलने वाले हैं। वह स्थान बदलते, यहां स्थिति बदलते। जैसे प्रकृति के तारामण्डल में पुच्छल तारे भी हैं। अर्थात् हर बात में, हर कार्य में 'यह क्यों', 'यह क्या' - यह पूछने की पूँछ वाले अर्थात् क्वेश्चन मार्क करने वाले पुच्छल तारे हैं। जैसे प्रकृति के पुच्छल तारे का प्रभाव पृथ्वी पर भारी माना जाता है, ऐसे बार-बार पूछने वाले इस ब्राह्मण परिवार में वायुमण्डल भारी कर देते हैं। सभी अनुभवी हो। जब स्वयं के प्रति भी संकल्प में 'क्या' और 'क्यों' का पूँछ लग जाता है तो मन और बुद्धि की स्थिति स्वयं प्रति भारी बन जाती है। साथ-साथ अगर किसी भी संगठन बीच वा सेवा के कार्य प्रति 'क्यों', 'क्या', 'ऐसा', 'कैसा',....-यह क्वेश्चन मार्क की क्यू का पूँछ लग जाता है तो संगठन का वातावरण वा सेवा क्षेत्र का वातावरण फौरन भारी बन जाता है। तो स्वयं प्रति, संगठन वा सेवा प्रति प्रभाव पड़ जाता है ना। साथ-साथ कई प्रकृति के सितारे ऊपर से नीचे गिरते भी हैं, तो क्या बन जाते हैं? पत्थर। परमात्म-सितारों में भी जब निश्चय, सम्बन्ध वा स्व-धारणा की ऊंची स्थिति से नीचे आ जाते हैं तो पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। कैसे पत्थरबुद्धि बन जाते? जैसे पत्थर को कितना भी पानी डालो लेकिन पत्थर पिघलेगा नहीं, रूप बदल जाता है लेकिन पिघलेगा नहीं। पत्थर को कुछ भी धारण नहीं होता है। ऐसे में जब पत्थरबुद्धि बन जाते तो उस समय कितना भी, कोई भी अच्छी बात महसूस कराओ तो महसूस नहीं करते। कितना भी ज्ञान का पानी डालो लेकिन बदलेंगे नहीं। बातें बदलते रहेंगे लेकिन स्वयं नहीं बदलेंगे। इसको कहते हैं पत्थरबुद्धि बन जाते हैं। तो अपने आप से पूछो-इस परमात्म-तारामण्डल के सितारों बीच, मैं कौन-सा सितारा हूँ?

(23.01.1987)

पवित्रता का अर्थ है - सदा बाप को कम्पैनियन (साथी) बनाना और बाप की कम्पनी में सदा रहना। कम्पैनियन बना दिया, 'बाबा मेरा' - यह भी आवश्यक है लेकिन हर समय कम्पनी भी बाप की रहे। इसको कहते हैं - 'सम्पूर्ण पवित्रता'। संगठन की कम्पनी, परिवार के स्नेह की मर्यादा, वह अलग चीज है, वह भी आवश्यक है। लेकिन बाप के कारण ही यह संगठन के स्नेह की कम्पनी है - यह नहीं भूलना है। परिवार का प्यार है, लेकिन परिवार किसका? बाप का। बाप नहीं होता तो परिवार कहाँ से आता? परिवार का प्यार, परिवार का संगठन बहुत अच्छा है लेकिन परिवार का बीज नहीं भूल जाए। बाप को भूल परिवार को ही कम्पनी बना देते हैं। बीच-बीच में बाप को छोड़ा तो खाली जगह हो गई। वहाँ माया आ जायेगी। इसलिए स्नेह में रहते, स्नेह देते-लेते समूह को नहीं भूलें। इसको कहते हैं पवित्रता। समझने में तो होशियार हो ना!

कई बच्चों को सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति में आगे बढ़ने में मेहनत लगती है। इसलिए बीच-बीच में कोई को कम्पनैनियन बनाने का भी संकल्प आता है और कम्पनी भी आवश्यक है - यह भी संकल्प आता है। सन्यासी तो नहीं बनना है लेकिन आत्माओं की कम्पनी में रहते बाप की कम्पनी को भूल नहीं जाओ। नहीं तो समय पर उस आत्मा की कम्पनी याद आयेगी और बाप भूल जायेगा। तो समय पर धोखा मिलना सम्भव है क्योंकि साकार शरीरधारी के सहारे की आदत होगी तो अव्यक्त बाप और निराकार बाप पीछे याद आयेगा, पहले शरीरधारी आयेगा। अगर किसी भी समय पहले साकार का सहारा याद आया तो नम्बरवन वह हो गया ओर दूसरा नम्बर बाप हो गया! जो बाप को दूसरे नम्बर में रखते तो उसको पद क्या मिलेगा - नम्बर वन (एक) वा टू (दो)? सिर्फ सहयोग लेना, स्नेही रहना वह अलग चीज है, लेकिन सहारा बनाना अलग चीज है। यह बहुत गुह्य बात है। इसको यथार्थ रीति से जानना पड़े। कोई-कोई संगठन में स्नेही बनने के बजाए न्यारे भी बन जाते हैं। डरते हैं - ना मालूम फँस जाएं, इससे तो दूर रहना ठीक है। लेकिन नहीं। 21 जन्म भी प्रवृत्ति में, परिवार में रहना है ना। तो अगर डर के कारण

विशेषता है, इसलिए ही बाप की नजर उस आत्मा के ऊपर पड़ती है। भगवान की नजर पड़ जाए वा भगवान अपना बनावे तो जरूर विशेषता समाई हुई है! इसलिए ही वह आत्मा ब्राह्मणों की लिस्ट में आई है लेकिन सदा हर एक की विशेषता को देखने और जानने में नम्बरवार बन जाते हैं। बापदादा जानते हैं कि कैसे भी, भल ज्ञान की धारणा वा सेवा में, याद में कमजोर हैं लेकिन बाप को जानने, बाप के बनने की विशालबुद्धि, बाप को देखने की दिव्य-नजर - यह विशेषता तो है। जो आजकल के नामीग्रामी विद्वान भी नहीं जान सकते, न पहचान सकते लेकिन उन आत्माओं ने जान लिया! कोटों में कोई, कोई में भी कोई - इस लिस्ट में तो आ गये ना। इसलिए कोटों में से विशेष आत्मा तो हो गये ना। विशेष क्यों बनें? क्योंकि ऊंचे ते ऊंच बाप के बन गये।

सभी आत्माओं में ब्राह्मण आत्मायें विशेष हैं। सिर्फ कोई अपनी विशेषता को कार्य में लगाते हैं, इसलिए वह विशेषता वृद्धि को प्राप्त होती रहती है और दूसरों को भी वह दिखाई देती है, और कोई में विशेषता रूपी बीज तो है लेकिन कार्य में लाना - यह है बीज को धरनी में डालना। जब तक बीज को धरनी में नहीं डालें तो वृक्ष नहीं पैदा होता, विस्तार को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। और कई बच्चे विशेषता के बीज को विस्तार में भी लाते अर्थात् वृक्ष के रूप में वृद्धि को भी प्राप्त करते, फल को भी प्राप्त करते लेकिन जब फल आता है तो फल के पीछे चिड़ियाएं, पंछी भी आते हैं खाने के लिए। तो फल जब तक पहुँचते हैं तो इस रूप में माया आती है कि मैं विशेष हूँ, मेरी यह विशेषता है। यह नहीं समझते कि बाप द्वारा प्राप्त हुई विशेषता है। विशेषता भरने वाला बाप है। जब ब्राह्मण बने तो विशेषता आई। ब्राह्मण जीवन की देन है, बाप की देन है। इसलिए फल के बाद अर्थात् सेवा में सफलता के बाद यह अटेन्शन रखना भी जरूरी है। नहीं तो, माया रूपी चिड़िया, पंछी फल को झूठा कर देते या नीचे गिरा देते हैं। जैसे खण्डित मूर्ति की पूजा नहीं होती, माना जाता है कि यह मूर्ति है लेकिन पूजी नहीं जाती। ऐसे जो ब्राह्मण आत्मायें सेवा का फल अर्थात् सेवा में सफलता प्राप्त कर लेते हैं लेकिन

किनारा कर लेते, न्यारे बन जाते तो वह कर्म-सन्यासी के संस्कार हो जाते हैं। कर्मयोगी बनना है, कर्म-सन्यासी नहीं। संगठन में रहना है, स्नेही बनना है लेकिन बुद्धि का सहारा एक बाप हो, दूसरा न कोई। बुद्धि को कोई आत्मा का साथ वा गुण वा कोई विशेषता आकर्षित नहीं करे। इसको कहते हैं - 'पवित्रता'।

(20.02.1987)

विश्व की आत्मायें स्नेह के अनुभव से स्वत: ही समीप आती जा रही हैं। पवित्र प्यार वा ईश्वरीय परिवार के प्यार से - कितनी भी अन्जान आत्मायें हों, बहुत समय से परिवार के प्यार से वंचित पत्थर समान बनने वाली आत्मा हो लेकिन ऐसे पत्थर समान आत्मायें भी ईश्वरीय परिवार के स्नेह से पिघल पानी बन जाती है। यह है ईश्वरीय परिवार के प्यार की कमाल। कितना भी स्वयं को किनारे करे लेकिन ईश्वरीय प्यार चुम्बक के समान स्वत: ही समीप ले आता है। इसको कहते हैं ईश्वरीय स्नेह का प्रत्यक्षफल। कितना भी कोई स्वयं को अलग रास्ते वाले मानें लेकिन ईश्वरीय स्नेह सहयोगी बनाए आपस में एक हो आगे बढ़ने के सूत्र में बांध देता है। ऐसा अनुभव किया ना।

स्नेह पहले सहयोगी बनाता है, सहयोगी बनाते-बनाते स्वत: ही समय पर सर्व को सहजयोगी भी बना देता है। सहयोगी बनने की निशानी है - आज सहयोगी हैं, कल सहज-योगी बन जायेंगे। ईश्वरीय स्नेह परिवर्तन का फाउन्डेशन (नींव) है अथवा जीवन-परिवर्तन का बीजस्वरूप है। जिन आत्माओं में ईश्वरीय स्नेह की अनुभूति का बीज पड़ जाता है, तो यह बीज सहयोगी बनने का वृक्ष स्वत: ही पैदा करता रहेगा और समय पर सहजयोगी बनने का फल दिखाई देगा क्योंकि परिवर्तन का बीज फल जरूर दिखाता है। सिर्फ कोई फल जल्दी निकलता है, कोई फल समय पर निकलता है। चारों ओर देखो, आप सभी मास्टर स्नेह के सागर, विश्व-सेवाधारी बच्चे क्या कार्य कर रहे हो? विश्व में ईश्वरीय परिवार के स्नेह का बीज बो रहे हो। जहाँ भी जाते हो - चाहे कोई नास्तिक हो वा आस्तिक हो, बाप को न

जन्मों का साथ है। लेकिन उसका आधार इस समय समान बन साथ चलने का है।

(31.12.1987)

कोई भी यात्रा पर जाते हैं तो क्या करते हैं? संगठन बनाते हैं ना। क्यों बनाते हैं? संगठन से, साथ से उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते जाते। तो आप सभी भी रूहानी यात्रा पर सदा आगे बढ़ते रहना क्योंकि बाप का साथ, ब्राह्मण परिवार का साथ कितना बढ़िया साथ है! अगर कोई अच्छा साथी होता है तो कभी भी बोर नहीं होते, थकते नहीं। तो सदा आगे बढ़ने वाले सदा ही हर्षित रहते हैं, सदा खुशी में नाचते रहते हैं। तो वृद्धि को पाते रहते हो ना! वृद्धि को प्राप्त होना ही है क्योंकि जहाँ भी, जिस कोने में बिछुड़े हुए बच्चे हैं, वहाँ वह आत्मायें समीप आनी ही है। इसलिए सेवा में भी वृद्धि होती रहती है। कितना भी चाहो-शांत करके बैठ जाएं, बैठ नहीं सकते। सेवा बैठने नहीं देगी, आगे बढ़ायेगी क्योंकि जो आत्मायें बाप की थी, वह बाप की फिर से बननी ही हैं।

(06.01.1988)

आज बापदादा बच्चों की विशेषताओं को देख रहे थे। हर एक बच्चे की विशेषता अपनी-अपनी है। कोई बाप की और सर्व ब्राह्मण आत्माओं का विशेषताओं को जान स्वयं में सर्व विशेषतायें धारण कर श्रेष्ठ अर्थात् विशेष आत्मा बन गये हैं और कोई विशेषताओ को जान और देखकर खुश होते हैं लेकिन अपने में सर्व विशेषतायें धारण करने की हिम्मत नहीं है और कोई हर आत्मा में या ब्राह्मण परिवार में विशेषता होते हुए भी विशेषता के महत्व से नहीं देखते, एक दो को साधारण रूप से देखते हैं। विशेषता देखने वा जाने का अभ्यास नहीं है वा गुण-ग्राहक बुद्धि अर्थात् गुण ग्रहण करने की बुद्धि न होने के कारण विशेषता अर्थात् गुण को जान नहीं सकते। हर एक ब्राह्मण आत्मा में कोई न कोई विशेषता अवश्य भरी हुई है। चाहे 16हजार का लास्ट दाना भी हो लेकिन उसमें भी कोई न कोई

भी जानते हों, न भी मानते हों लेकिन इतना अवश्य अनुभव करते हैं कि ऐसा ईश्वरीय परिवार का प्यार जो आप शिववंशी ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारियों से मिलता है, यह कहीं भी नहीं मिलता और यह भी मानते हैं कि यह स्नेह वा प्यार साधारण नहीं है, यह अलौकिक प्यार है वा ईश्वरीय स्नेह है। तो इन्डायरेक्ट नास्तिक से आस्तिक हो गया ना। ईश्वरीय प्यार है, तो वह कहाँ से आया? किरणें सूर्य को स्वत: ही सिद्ध करती हैं। ईश्वरीय प्यार, अलौकिक स्नेह, नि:स्वार्थ स्नेह स्वत: ही दाता बाप को सिद्ध करता ही है। इन्डायरेक्ट ईश्वरीय स्नेह के प्यार द्वारा स्नेह के सागर बाप से सम्बन्ध जुट जाता है लेकिन जानते नहीं हैं। क्योंकि बीज पहले गुप्त रहता है, वृक्ष स्पष्ट दिखाई देता है। तो ईश्वरीय स्नेह का बीज सर्व को सहयागी सो सहजयोगी, प्रत्यक्षरूप में समय प्रमाण प्रत्यक्ष कर रहा है और करता रहेगा। तो सभी ने ईश्वरीय स्नेह के बीज डालने की सेवा की। सहयोगी बनाने की शुभ भावना और शुभ कामना के विशेष दो पत्ते भी प्रत्यक्ष देखे। अभी यह तना वृद्धि को प्राप्त करते प्रत्यक्षफल दिखायेगा।

(01.10.1987)

जब यह स्मृति में रहता है कि परमार्थ द्वारा व्यवहार और परिवार दोनों को श्रेष्ठ बनाना है तब यह सेवा स्वत: होती है। जहाँ परमार्थ है वहाँ व्यवहार सिद्ध व सहज हो जाता है। और परमार्थ की भावना से परिवार में भी सच्चा प्यार, एकता स्वत: ही आ जाती है। तो परिवार भी श्रेष्ठ और व्यवहार भी श्रेष्ठ। परमार्थ व्यवहार से किनारा नहीं कराता, और ही परमार्थ-कार्य में बिजी रहने से परिवार और व्यवहार में सहारा मिल जाता है। तो परमार्थ में सदा आगे बढ़ते चलो।

(10.12.1987)

निश्चय का अर्थ यह नहीं है कि मैं शरीर नहीं, मैं आत्मा हूँ। लेकिन

कौनसी आत्मा हूँ! वह नशा, वह स्वमान समय पर अनुभव हो, इसको कहते हैं - 'निश्चयबुद्धि विजयी'। कोई पेपर है ही नहीं और कहे - मैं तो पास विद् ऑनर हो गया, तो कोई उसको मानेगा? सर्टीफिकेट चाहिए ना। कितना भी कोई पास हो जाए, डिग्री ले लेवे लेकिन जब तक सर्टीफिकेट नहीं मिलता है तो वैल्यू नहीं होती। पेपर के समय पेपर दे पास हो सर्टीफिकेट ले - बाप से, परिवार से, तब उसको कहेंगे 'निश्चयबुद्धि विजयी'।

(27.12.1987)

विशेष इस वर्ष में बाप समाने बनने की - यही विशेषता विश्व के आगे, ब्राह्मण परिवार के आगे दिखाओ। जैसे हर एक आत्मा 'बाबा' कहते मधुरता वा खुशी का अनुभव करती है। 'वाह बाबा' कहने से मुख मीठा होता है क्योंकि प्राप्ति होती है। ऐसे हर ब्राह्मण आत्मा, कोई भी ब्राह्मण का नाम लेते ही खुश हो जाए। क्योंकि बाप समान आप सभी भी एक दो को बाप द्वारा प्राप्त हुई विशेषता द्वारा आपस में लेन-देन करते हो, आपस में एक दो के सहयोगी साथी बन उन्नति को प्राप्त कराते हो। जीवन साथी नहीं बनना, लेकिन कार्य के साथी भले बनो। हर एक आत्मा अपनी प्राप्त विशेषताओं से आपस में खुशी की लेन-देन करते भी हो और आगे भी सदा करते रहना। जैसे बाप को याद करते ही खुशी में नाचते हैं, वैसे हर एक ब्राह्मण आत्मा को हर ब्राह्मण याद करते रूहानी खुशी का अनुभव करे, हद की खुशी का नहीं। हर समय बाप की सर्व प्राप्तियों का साकार निमित्त रूप अनुभव करे। इसको कहते हैं - हर संकल्प वा हर समय एक दो को मुबारक देना। सबका लक्ष्य तो एक ही है कि बाप समान बनना ही है। क्योंकि समान के बिना तो न बाप के साथ स्वीट होम में जायेंगे और न ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में आयेंगे। जो बापदादा के साथ अपने घर में जायेंगे वही ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में उतरेंगे। ऊपर से नीचे आयेंगे ना। सिर्फ साथ जायेंगे नहीं लेकिन साथ आयेंगे भी। पूज्य भी ब्रह्मा के साथ बनेंगे और पुजारी भी ब्रह्मा बाप के साथ बनेंगे। तो अनेक